पाठ 1

सिलाई मशीन

इस पाठ से हम सीखेंगे

- मशीनों के प्रकार।
- मशीन के मुख्य भागों की पहचान।
- मशीन के आगे के भाग के पुर्जों के नाम व कार्य।
- मशीन के मध्य भाग के पुर्जों के नाम व कार्य।
- मशीन के हत्थी वाले भाग के पुर्जों के नाम व कार्य।
- मशीन के भीतरी भाग के पुर्जों के नाम व कार्य।

रोटी, कपड़ा और मकान इंसान की सबसे जरूरी आवश्यकताएँ हैं। कपड़े हमें सर्दी, गर्मी तथा धूल से बचाते हैं। अमीर-गरीब, छोटे-बड़े सभी कपड़े पहनते हैं। किसी भी व्यक्ति

का हम वेशभूषा से उनकी हैसियत का अंदाजा लगा सकते हैं। कपड़े धर्म, संस्कृति, इलाके, शरीर की बनावट, कार्य करने की जगह के हिसाब से भी अलग-अलग तरह के होते हैं। पंजाबी ड्रैस, पठानी ड्रैस, बच्चों के कपड़े, स्कूल की ड्रैस, मिल्ट्री की ड्रैस, पुलिस की ड्रैस, शादी की ड्रैस, फिल्मों की ड्रैस इत्यादि की डिजाइन और सिलाई सब अलग-अलग तरह की होती हैं। आप सोचेंगे कि इन सबको बनाने के लिए कारीगर कहाँ से आते होंगे। आजकल नई-नई डिजाइनों के कपड़े बाजारों, मॉलों, फिल्मों में दिखाई देते हैं। एक डिजाइनर अगर कोई डिजाइन अच्छी निकाल दे तो उसकी सब नकल करते हैं। लोग अच्छी डिजाइन के कपड़ों के मुँह मांगे पैसे देने को तैयार हो जाते हैं। कपड़ों का देश-विदेशों से आयात-निर्यात का बहुत बड़ा व्यवसाय बन गया है। शहरों में नए-नए बुटीक, नई-नई डिजाइन के कपड़ों की बाजारों में भरमार है। एक कारीगर 10000 रुपये से 25000 रुपये तक की नौकरी आसानी से पा लेता है। डिजाइनर तो करोड़ों-करोड़ों का व्यापार तथा व्यवसाय करते हैं। एक गरीब महिला अगर सिलाई, कढाई का काम सीख ले तो वह आसानी से घर का खर्च चला सकती है। करोड़ों लोग इस धंधे से जुड़े हैं। कुछ व्यवसाय करते हैं, कुछ कारीगर हैं।

आइए, इस पुस्तक के द्वारा हम भी कटाई, सिलाई तथा पोशाक निर्माण के बारे में कुछ सीखें।

1.1 सिलाई की मशीनों के प्रकार

मशीनें कई प्रकार की होती हैं-

1. हाथ की मशीन
2. पैर की मशीन
3. पॉवर मशीन
4. फैशन मेकर

1.2 मशीन के मुख्य भाग

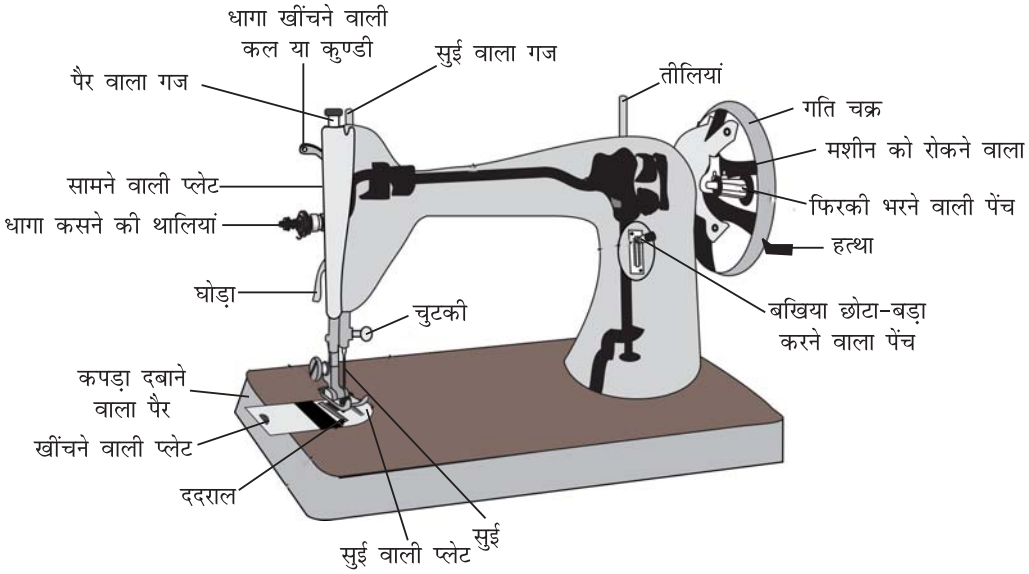

1. सामने वाली प्लेट
2. पैर वाला गज
3. कपड़ा दबाने वाला पैर
4. घोड़ा
5. सुई वाला गज
6. चुटकी
7. धागा खींचने की कल या कुण्डी
8. धागा कसने की थालियां
9. सुई वाला प्लेट
10. दंतराल
11. खींचने वाली प्लेट
12. सुई
13. फिरकी भरने वाला पेंच
14. तीलियाँ

15. बखिया छोटा-बड़ा करने वाला पेंच
16. हत्थी
17. गति चक्र
18. मशीन को रोकने वाला

1.3 मशीन के मुख्य भाग व उनके कार्य

जिस प्रकार मानव शरीर की रचना छोटी-बड़ी हड्डियों से हुई है उसी प्रकार मशीन भी अनेक पुर्जों से बनी हुई है। इसमें छोटे-बड़े पुर्जों की जानकारी दी गयी है। सिलाई की मशीन को चार भागों में बाँटा जा सकता है-

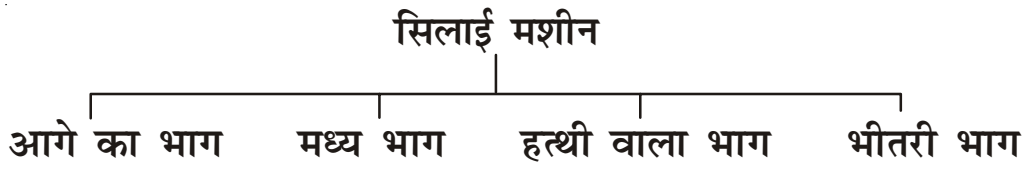

1.3.1 आगे का भाग

(1) सामने वाली प्लेट (फेस प्लेट)

मशीन के सामने वाले भाग में लगी हुई चमकीली स्टील प्लेट को **फेस प्लेट** कहते हैं। यह एक पेंच की सहायता से लगी होती है।

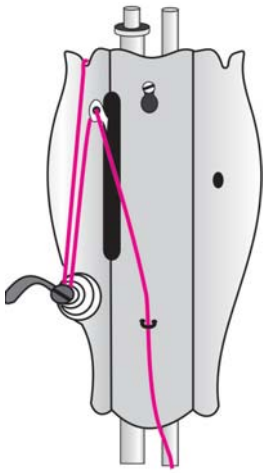

फेस प्लेट

(2) पैर वाला गज (प्रेशर फुट बार)

यह एक लोहे की डंडी होती है जिसमें प्रेशर फुट लगा होता है। यह कपड़े को दबाने के काम आता है।

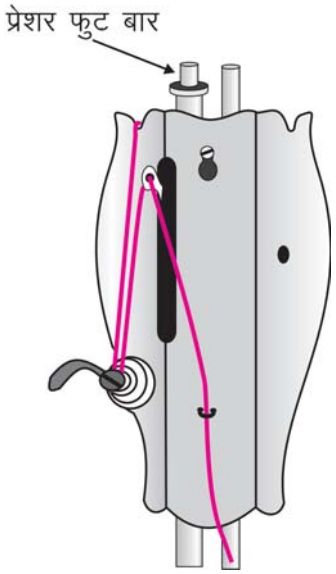

(3) कपड़ा दबाने वाला पैर (प्रेशर फुट)

यह कपड़े पर दबाव डालता है, जिससे दन्तराल के दाँत कपड़े को पीछे की ओर खींचते हैं।

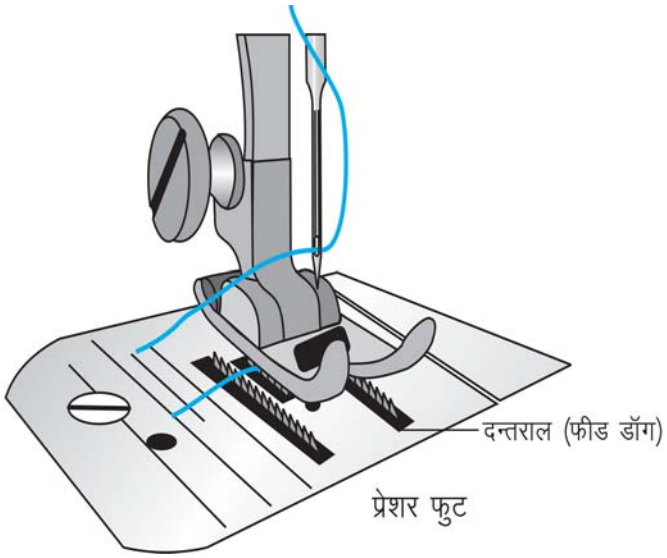

(4) घोड़ा (प्रेशर फुट लिफ्टर)

इसे घोड़ा कहते हैं। यह पैर को नीचे ऊपर करने का काम करता है। कपड़ा प्रेशर फुट के नीचे दबाते समय इसे ऊपर उठाकर फिर नीचे किया जाता है।

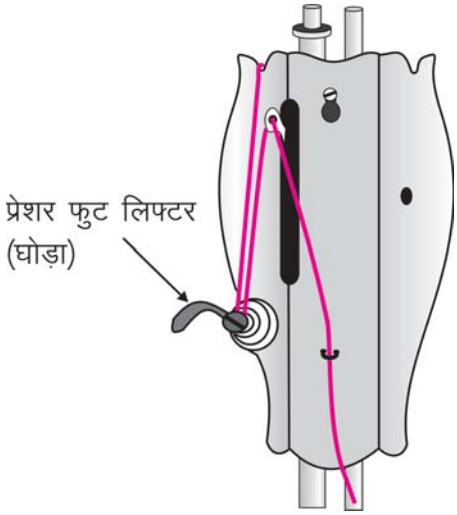

(5) सुई वाला गज (नीडिल बार)

यह लोहे की बनी एक छड (डंडी) होती है जिसमें सुई लगी होती है। इसके द्वारा सुई ऊपर नीचे होती है जिससे बखिया बन जाती है।

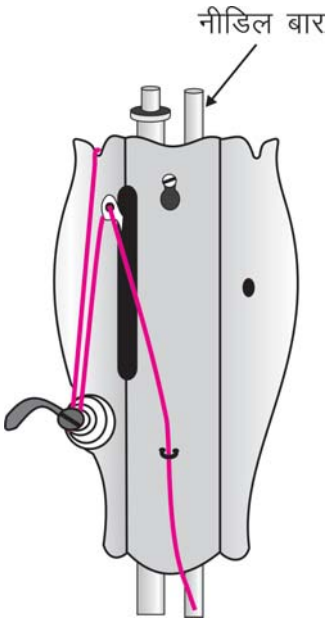

(6) चुटकी (नीडिल क्लैम्प)

चुटकी को नीडिल रॉड के ऊपर लगाया जाता है। चुटकी की मदद से सुई फिट होती है। इसमें पेंच होता है जिसके कसने से सुई फिट होती है।

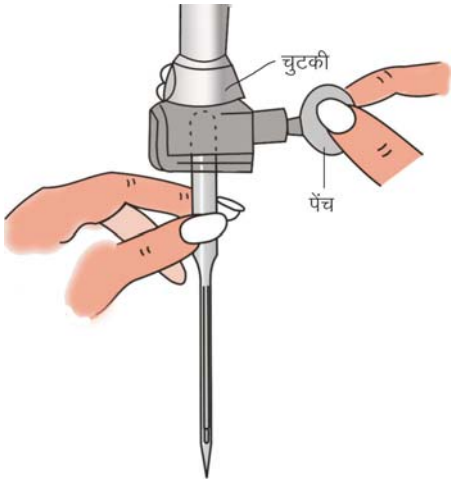

(7) धागा खींचने की कल या कुण्डी (थ्रेडटेक अप लीवर)

यह ऊपर से धागा खींचकर सुई तक पहुंचती है तथा धागे को दिशा दिखाती है। साथ ही ऊपर नीचे धागों का फन्दा कसती है।

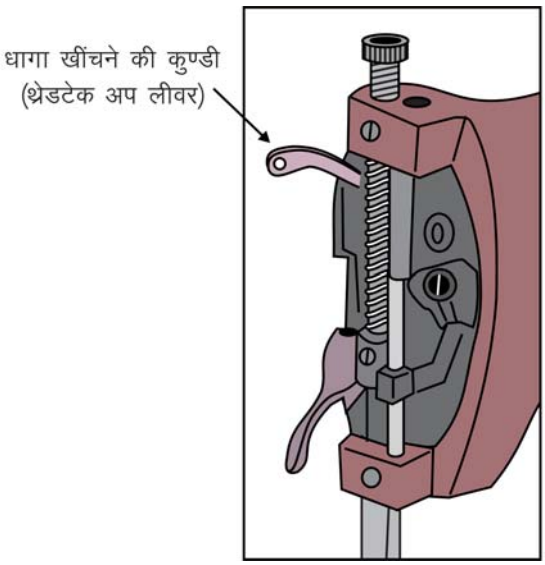

(8) धागा कसने की थालियाँ (टेंशन डिस्क)

यह मशीन के सामने वाली प्लेट (फेस प्लेट) में लगी होती है। यह दो थालियाँ या प्लेट होती हैं जिनके बीच में से धागा निकाला जाता है। इसके आगे स्प्रिंग और एक पेंच लगा होता है। यह धागे के कसाव को सही रखता है।

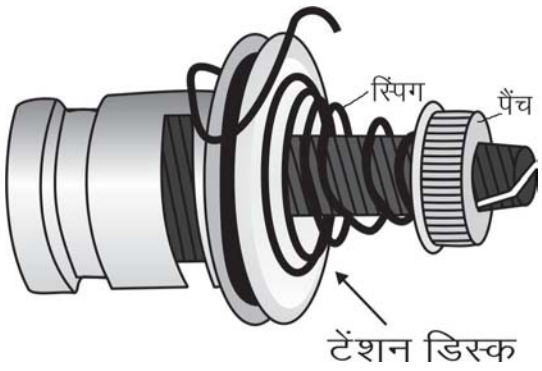

(9) सुई वाली प्लेट (नीडल प्लेट)

यह लोहे की (अर्धवृत्ताकार पत्ती) आधा गोला जैसी पत्ती होती है। यह सुई वाले गज के नीचे होती है। इससे सुई नीचे पहुँचकर फिरकी के धागे के साथ फन्दा डालकर ऊपर आती है।

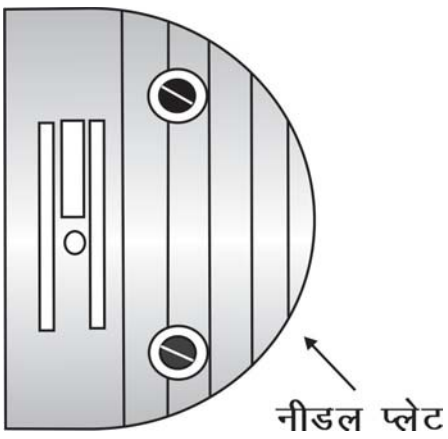

(10) दन्तराल (फीड डॉग)

यह दांतेदार होता है। सिलाई के समय कपड़े को आगे खिसकाने में मदद करता है।

(11) खींचने वाली प्लेट (स्लाइड प्लेट)

यह **नीडेल प्लेट** के साथ लगी हुई होती है। प्लेट को सरकाकर डिबिया (बॉबिन) को निकाला तथा लगाया जाता है।

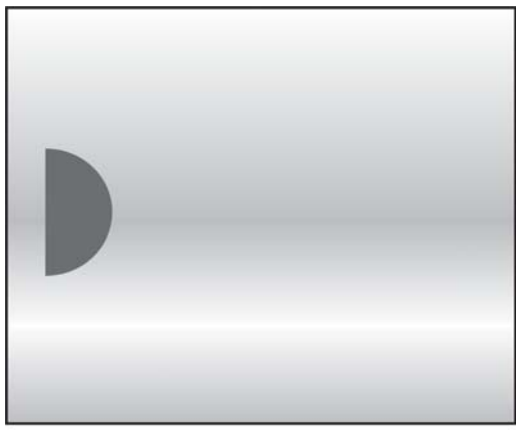

स्लाइड प्लेट

(12) सुई

इसमें धागा पिरोया जाता है। साधारण कपड़ा सिलने के लिए 16 नं. और 18 नं. की सुई काम में लेते हैं। काफी मोटा कपड़ा सिलने के लिए 21 नं. की सुई काम में लेते हैं। मशीन की सुई एक तरफ से गोल व एक तरफ से चपटी होती है।

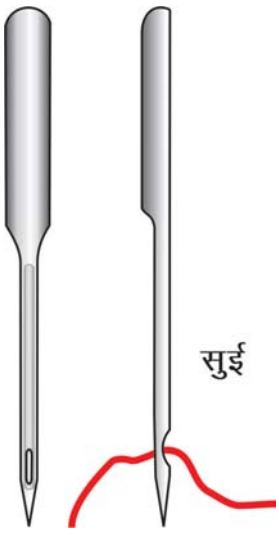

1.3.2 मध्य भाग

(13) फिरकी भरने वाला पेंच (बॉबिन वाइन्डर)

यह **गति चक्र** के पास होता है। इस पर रबड़ लगी होती है। इसमें फिरकी लगाकर पत्ती से फिरकी में धागा भरा जाता है।

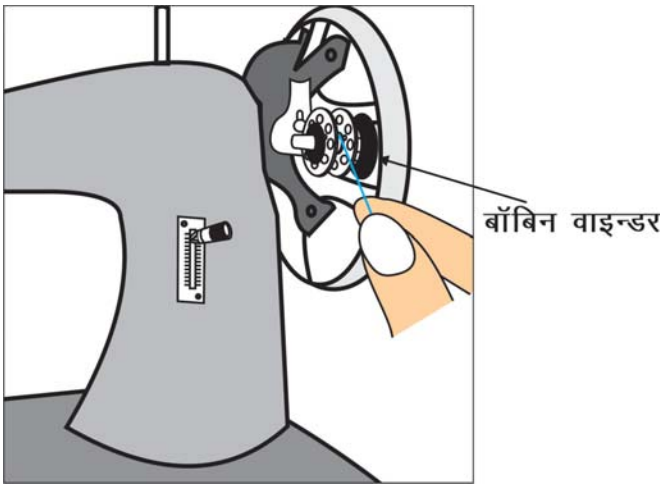

(14) तीलियाँ (स्पूल पिन)

यह मशीन के ऊपर लगी दो कील सी होती है। इसमें धागे की रील लगाई जाती है।

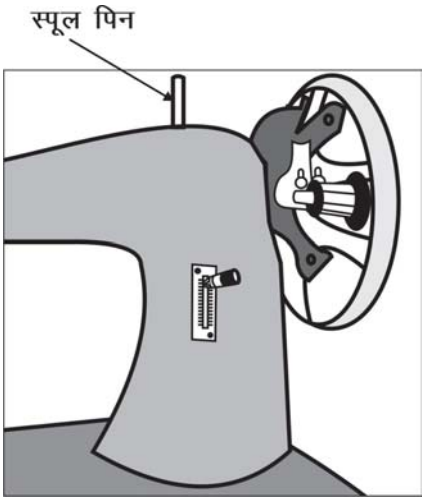

(15) बखिया छोटा- बड़ा करने वाला पेंच (स्टिच रेगूलेटर)

इससे बखिया को छोटा या बड़ा किया जाता है। इसमें नम्बर लिखे होते हैं। आवश्यकतानुसार जैसा बड़ा या छोटा टाँका चाहिए पेंच को घुमाकर ऊपर नीचे किया जा सकता है।

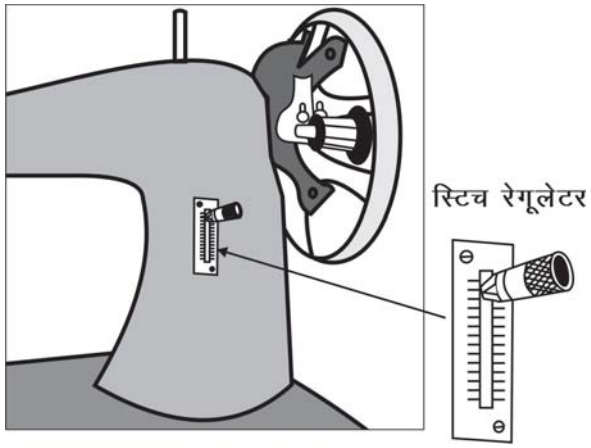

1.3.3 हत्थी वाला भाग

(16) हत्थी (हैण्डल)

यह **गतिचक्र** में लगी होती है। इसको चलाने से मशीन चलती है।

(17) गति चक्र (फ्लाई व्हील)

यह मशीन में दाई ओर लगा होता है। यह गोलाकार **चक्र स्टील** का बना होता है। गति चक्र के द्वारा मशीन को चलाते हैं। पैर की मशीन **बेल्ट** की सहायता से चलती है तथा हाथ की मशीन **हैंण्डिल** से चलाते हैं।

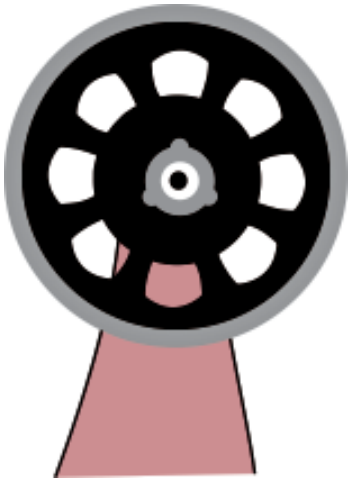

(18) मशीन को रोकने वाला (स्टॉप मोशन स्क्रू)

यह भी एक गोल पहिया होता है, जो गति चक्र के पास लगा होता है। इस पेंच को कस देने से मशीन पर सिलाई की जा सकती है तथा ढीला कर देने से मशीन पर काम बंद हो जाता है। फिरकी भरते समय इस पेंच को ढीला किया जाता है।

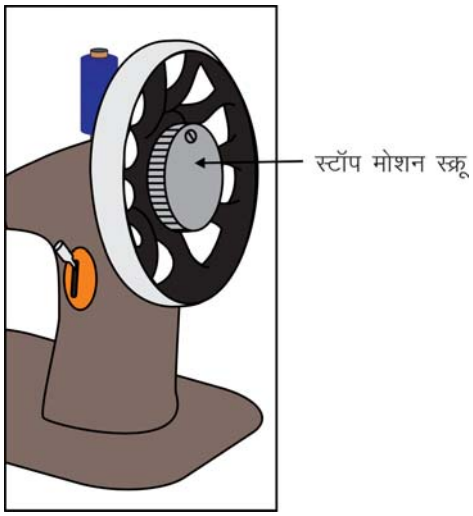

देखें, आपने क्या सीखा 1.1

सही पर (✓) और गलत पर (✕) का निशान लगाइए।

1. फिरकी पर धागा भरने के लिए फ्लाई व्हील को कसना चाहिए। ☐
2. **प्रेशर फुट** कपड़ों को आगे खीचने में सहयोग देता है। ☐
3. **स्टॉप मोशन स्क्रू** को ढीला करने से मशीन पर सिलाई कर सकते हैं। ☐
4. रबड़ के पहिये को दबाए बिना फ्लाई व्हील से धागा भरना चाहिए। ☐
5. सुई की चपटी साइड अन्दर होनी चाहिए। ☐

1.3.4 भीतरी भाग

(19) फिरकी (बॉबिन)

यह एक लोहे की चकरी होती है। इसमें धागा भरा जाता है। इसे बॉबिन केस में फिट किया जाता है।

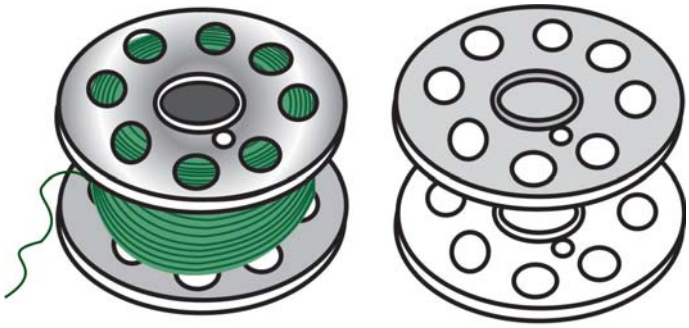

बॉबिन

(20) डिबिया (बॉबिन केस)

यह लोहे की बनी होती है। इसमें फिरकी या बॉबिन लगाकर शटल में फिट की जाती है।

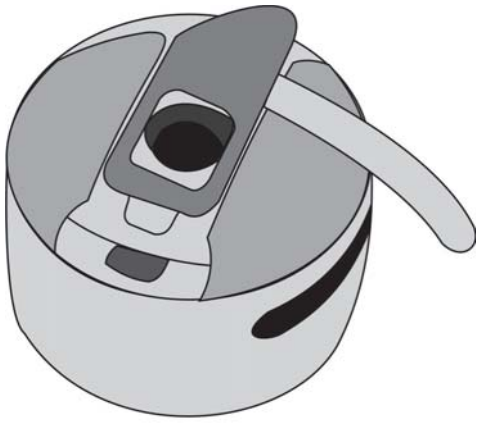

बॉबिन केस

(21) शटल

यह **आधा चन्द्रमा का आकार** का होता है। इसमें एक कील/डन्डी होती है जिसमें बॉबिन केस को फिट किया जाता है।

शटल

(22) शटल नाल (शटल ड्राइवर)

इसमें शटल घूमता है। शटल केस के ऊपर एक कट वाली पत्ती होती है। यह शटल को चलाती है।

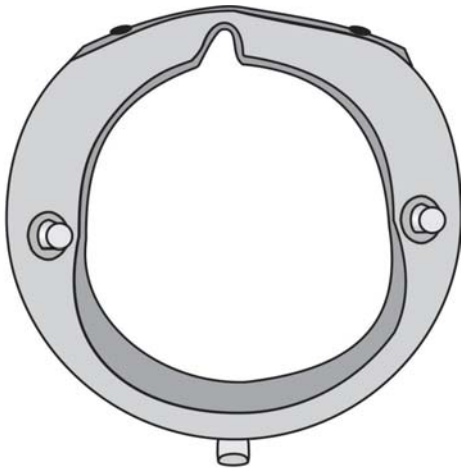

शटल नाल

आइए दोहराएँ

1. मशीनों के प्रकार

- हाथ की मशीन
- पैर की मशीन
- पॉवर मशीन
- फैशन मेकर

2. मशीनों के मुख्य भाग

- आगे का भाग
- मध्य भाग
- हत्थी वाला भाग
- भीतरी भाग

3. मशीनों के आगे के भाग के पुर्जे

- सामने वाली प्लेट
- पैर वाला गज
- कपड़ा दबाने वाला पैर
- घोड़ा
- सुई वाला गज
- चुटकी
- धागा खींचने की कल या कुण्डी
- धागा कसने की थालियां
- सुई वाली प्लेट
- दन्तराल
- खींचने वाली प्लेट
- सुई

4. मशीनों के मध्य भाग के पुर्जे

- फिरकी भरने वाली पेंच
- तीलियाँ
- बखिया छोटा-बड़ा करने वाला पेंच

5. मशीनों के हत्थी वाला भाग

- हत्थी
- गतिचक्र
- मशीन को रोकने वाला

6. मशीनों के भीतरी भाग

- फिरकी
- डिबिया
- शटल
- शटल नाल

अभ्यास

I. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. नीचे दिये गये चित्र में दिखाए गये बिन्दुओं पर मशीन के भागों के नाम लिखिए।

.....

2. मशीनें कितने प्रकार की होती हैं? उनके नाम लिखिए?

.....

3. मशीन के कितने भाग होते हैं? उनके नाम लिखिए?

.....

4. मशीन के आगे के भाग के किन्हीं तीन पुर्जों के नाम लिखिए।

(1) ..... (2) ..... (3) .....

5. मशीन के हत्थी वाले भाग के किन्हीं तीन पुर्जों के नाम लिखिए।

(1) ..... (2) ..... (3) .....

II. खाली स्थान भरिए :

1. _____ कपड़े को दबाने के काम में आता है।
2. _____ एक छड़ होती है जिसमें सुई लगी होती है।
3. टैंशन डिस्क धागे के _____ को सही रखता है।
4. साधारण कपड़ा सिलने के लिए _____ और _____ की सुई का प्रयोग करते हैं।
5. _____ पर रबड़ लगी होती है।
6. पैर की मशीन को _____ की सहायता से चलाते हैं।
7. _____ अर्धचन्द्राकार का होता है।
8. मशीन को _____ भागों में बांटा जा सकता है।

III. सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाइए :

1. फेस प्लेट मशीन के किस भाग में होती है

(a) आगे का भाग ☐ (c) हत्थी वाला भाग ☐

(b) मध्य भाग ☐ (d) भीतरी भाग ☐

2. इस भाग को सरकाकर हम डिबिया (बॉबिन) को निकाल या लगा सकते हैं।

(a) नीडिल कलैम्प ☐ (c) नीडिल प्लेट ☐

(b) नीडिल बार ☐ (d) स्लाइड प्लेट ☐

3. गति चक्र मशीन के किस तरफ लगा है

(a) आगे की तरफ ☐ (c) दाईं की तरफ ☐

(b) अन्दर की तरफ ☐ (d) ऊपर की तरफ ☐

4. मशीन के भीतरी भाग का हिस्सा नहीं है

(a) फिरकी ☐ (c) शटल ☐

(b) डिबिया ☐ (d) हत्थी ☐

IV. मिलान कीजिए

1.	प्रेशर फुट	a.	बॉबिन को फिट करने का काम करती है
2.	दन्तराल	b.	कपड़े पर दबाव डालता है।
3.	स्लाइड प्लेट	c.	21 नं. की सुई
4.	मोटी सिलाई के लिए	d.	कपड़े के पीछे खिसकाने का काम करता है

उत्तरमाला

1.1

1 ×

2 ✓

3 ×

4 ×

5 ✓

I. अभ्यास

1. स्पूल पिन
2. फ्लाई व्हील
3. बॉबिन वाइडर
6. प्रैसर फुट बार
7. थ्रेड टेक अप लीवर
8. फीड डॉग

4. टेंशन डिस्क
5. नीडिल बार
9. नीडल प्लेट
10. स्टिच रेग्यूलेटर

2. मशीन चार प्रकार की होती है :

1. हाथ की मशीन
2. पैर की मशीन
3. पॉवर मशीन
4. फैशन मेकर

3. मशीन के चार भाग होते हैं :

1. आगे का भाग
2. मध्य भाग
3. हत्थी वाला भाग
4. भीतरी भाग

4. 1. सामने वाली प्लेट
2. पैर वाला गज
3. कपड़ा दबाने वाला पैर
4. घोड़ा
5. सुई वाला गज
6. चुटकी
7. धागा खींचने की कल या कुण्डी
8. धागा कसने की थालियां
9. सुई वाली प्लेट
10. खींचने वाली प्लेट
11. दंदराल
12. सुई
13. फिरकी भरने वाला पेंच
14. तीलियां

15. बखिया छोटा-बड़ा करने वाला पेंच

5. 1. हत्थी

2. गति चक्र

3. मशीन को रोकने वाला

II. अभ्यास

1. प्रेशर फुट
2. सुई वाला गज
3. कसाव
4. 16 व 18
5. बॉबिन वाइन्डर
6. बेल्ट
7. शटल
8. चार

III. अभ्यास

1. a
2 d
3. c
4. d

IV. अभ्यास

1. b
2. d
3. a
4. c

क्रियाकलाप 1.1

अपने आस पास के घरों में तथा मशीन विक्रेताओं के यहाँ पर देखें कि किस किस प्रकार व किन-किन नामों की मशीनें हैं। सूची बनाएँ।

पाठ 2

आओ मशीन चलाना सीखें

इस पाठ से हम सीखेंगे

- सुई को फिट करने का तरीका।
- फिरकी में धागा भरना।
- फिरकी को डिब्बी में डालना।
- सुई में धागा डालना।
- फिरकी के धागे को ऊपर लाना।
- मशीन को चलाना।
- सिलाई की शुरुआत व समाप्ति करने का तरीका।

सिलाई मशीन कई तरह की होती हैं, जैसे- सिंगर, उषा आदि। मशीन किसी भी प्रकार की हो, मगर उसके पुर्जे एक ही तरह के होते हैं। उनके चलाने का तरीका भी एक ही होता है। आजकल बाजार में नई-नई तकनीक की मशीनें उपलब्ध हैं।

किसी भी कार्य को सही ढंग से करने के लिए कुछ नियमों का पालन करना आवश्यक होता है। इसी प्रकार हमें जानना होगा कि सिलाई मशीन को सही ढंग से कैसे चलाया जाए। अगर हम सुई व बॉबिन में धागा सही विधि से नहीं डालते व भरते हैं तो सिलाई ठीक नहीं आती। इसलिए इसकी जानकारी होना आवश्यक है।

पहले पाठ में हमने मशीनों के पुर्जों व उनके कार्य के बारे में जानकारी ली। इस पाठ में हम मशीन को चलाना, सही विधि से सुई में धागा डालना, बॉबिन भरना, सिलाई शुरू करना व खत्म करना आदि के बारे में जानेंगे।

2.1 मशीन को चलाना

सिलाई करने के लिए आपको कुछ प्रमुख जानकारी का होना आवश्यक है जैसे सुई फिट करना, सुई में धागा डालना आदि।

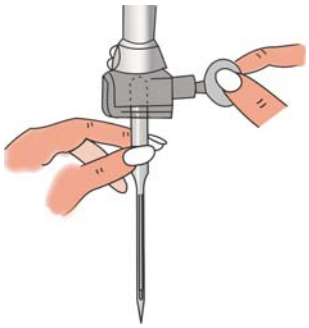

2.1.1 सुई फिट करना

(i) सुई के गज को पूरी ऊँचाई तक उठाएँ।

(ii) चुटकी के पेंच को ढीला करें।

(iii) सुई को बाएँ हाथ से पकड़ें। चपटी तरफ को मशीन के सुई वाले गज की तरफ रखें। सुई के पकड़ने वाले छेद में, जहाँ तक अन्दर जाए, सुई को डाल दें।

(iv) चुटकी को अच्छी तरह कस दें।

2.1.2 सुई में धागा डालना

(i) पहले मशीन के चक्र को अपनी तरफ घुमाएँ। इससे धागा डालने के लिए सुई ऊपर आ जाएगी।

(ii) धागे की रील को मशीन के ऊपर तीली (स्पूल पिन) पर रख दें।

(iii) धागे को ऊपर से लाते हुए (टेन्शन) थालियों तक लाएं। फिर धागे को

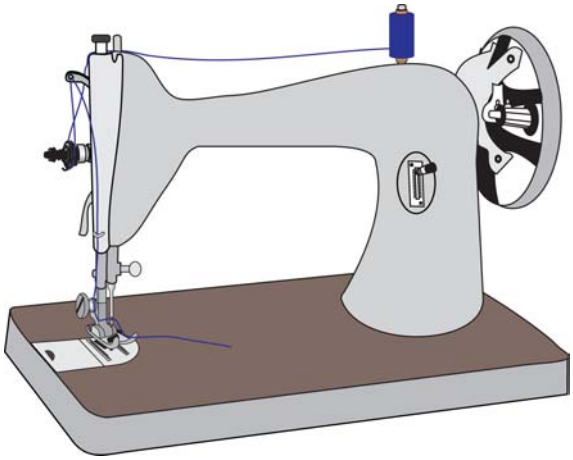

उस के बीच में फंसा दे। इसके बाद धागे की कुण्डी को नत्थ में डालें। उसके बाद **हुक** में डाल दें।

(iv) बाईं ओर से सीधी ओर सुई में धागा पिरो दें।

(v) धागे का तीन या चार इंच लम्बा सिरा छोड़ दें, नहीं तो धागा मशीन चलाने पर सुई से निकल जाएगा।

नोट: अगर मशीन में धागा क्रम से न डाला गया हो तो वह बार-बार टूटेगा।

2.1.3 फिरकी में धागा भरना

(i) मशीन के हत्थे को ढीला करें।

(ii) धागे की रील को तीली में बैठा दें।

(iii) फिरकी में थोड़ा लपेट कर, फिरकी भरने वाले पेंच में फिट करें। धागे को टेन्शन की थालियों के बीच में से लाएं।

(iv) रबड़ के पहिये को दबाकर पहिये से जोड़ दें।

(v) मशीन चलते ही फिरकी घूमने लगेगी और धागा उसमें भर (लिपट) जाएगा।

2.1.4 फिरकी को डिब्बी में डालना

(i) फिरकी को डिब्बी में इस प्रकार रखें कि धागे का सिरा अपनी तरफ रहे।

(ii) डिब्बी के कटे हुए भाग से लगभग तीन इंच धागा बाहर निकाल दें।

(iii) डिब्बी की पत्ती को उठाकर नीचे मशीन में लगे **शटल-पिन** पर चढ़ाकर पत्ती को छोड़ दें।

(iv) फिरकी जब शटल में सही फिट होगी तो ''टक'' जैसी आवाज आयेगी।

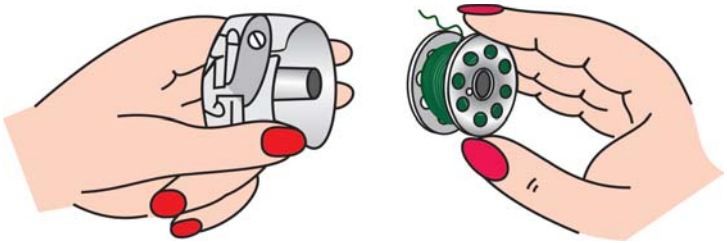

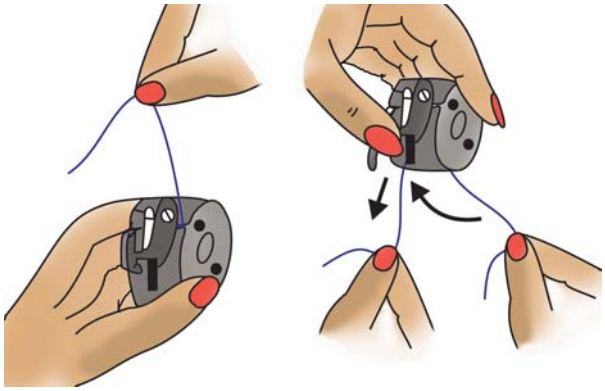

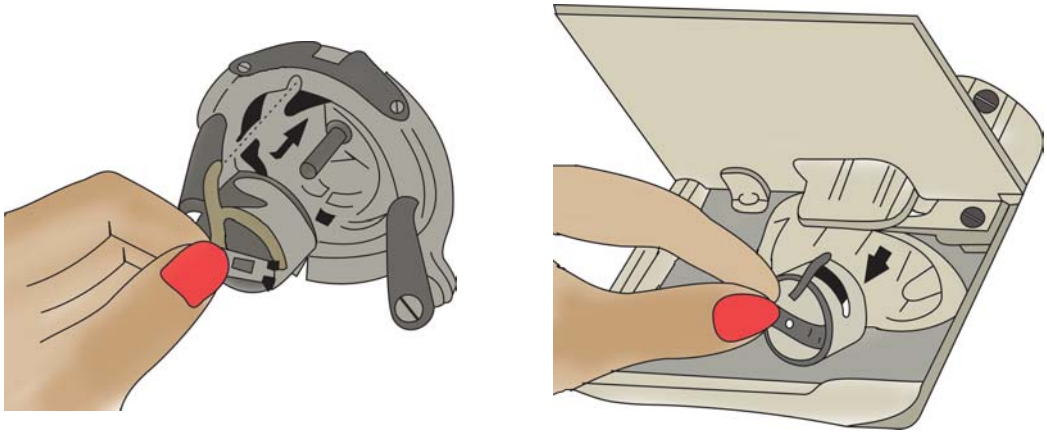

2.1.5 फिरकी के धागे को ऊपर लाना

(i) सुई में पिरोए गए धागे के सिरे को बाएँ हाथ से पकड़ें।

(ii) हत्थी को धीरे-धीरे अपनी ओर घुमाएँ।

(iii) सुई को नीचे जाने दें तथा धागे को ढील दें। सुई को ऊपर लाएँ।

(iv) धागा अपने आप ऊपर आ जाएगा।

धागे के दोनों सिरों को घोड़े के नीचे से पीछे की ओर कर दें।

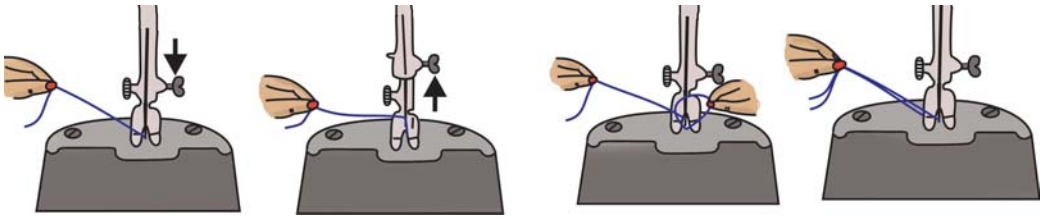

फिरकी के धागे को ऊपर लाना

2.1.6 सिलाई आरम्भ करना

(i) पहले धागा नीचे से ऊपर करें।

(ii) कपड़े के जिस भाग की सिलाई करनी है उसे घोड़े के नीचे दबाएँ। कपड़े को ऐसे रखें कि एक किनारे सीधे हाथ के किनारे के साथ बाकी कपड़ा मशीन की बाहर की तरफ होना चाहिए।

(iii) सिलाई शुरू करने से पहले इन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है:-

(क) कसाव (टेंशन) : टेंशन (कसाव) का अर्थ है कि ऊपर और नीचे के धागे का कसाव एक समान हो। इससे टाँका न तो ढीला और न बहुत कसा होता है।

(ख) टाँके की लम्बाई : टाँके की लम्बाई जाँच लें। ये कपड़े की मोटाई के अनुरूप रखा जाता है। लम्बे टाँके मोटे कपड़े के लिए व छोटे टाँके पतले कपड़े के लिये उपयोग किये जाते हैं।

(iv) मशीन के पहिये को घुमाकर सिलाई शुरू करें। कपड़े को बाएँ से धीरे-धीरे खिसकाएँ।

(v) सिलाई समाप्त करने के बाद 2 इंच धागा छोड़कर काटें। सिलाई ना खुले इसके लिए धागों के अंतिम सिरों को गांठ लगाएं।

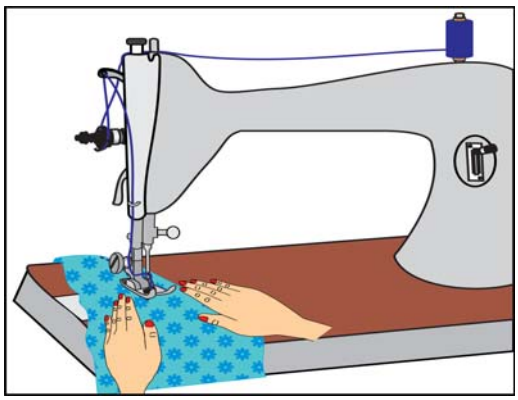

देखें, आपने क्या सीखा 2.1

रिक्त स्थान भरें:-

(1) मोटे कपड़े के लिये_____ टाँके होने चाहिए।

(2) सुई का चपटा भाग मशीन के _____ की तरफ होना चाहिए।

(3) अगर मशीन में धागा क्रम से नहीं डालेंगे तो _____टूटेगा।

(4) धागे की रील को मशीन के ऊपर _____ पर रखा जाता है।

(5) कपड़ा सिलते समय प्रेसर फुट _____ किया जाता है।

2.2 मशीन चलाना व सिलाई करना

मशीन द्वारा कपड़ा सिलने से पहले आप को मशीन चलाने का अभ्यास करना चाहिए। यह अभ्यास कागज पर किया जा सकता है। एक कागज के टुकड़े पर नीचे दिये गए चित्रों को उतार लीजिए। मशीन के घोड़े के नीचे दबाकर सिलने का अभ्यास कीजिए। याद रहे इसके लिये सुई में तथा फिरकी (बॉबिन) में धागा नहीं होना चाहिए।

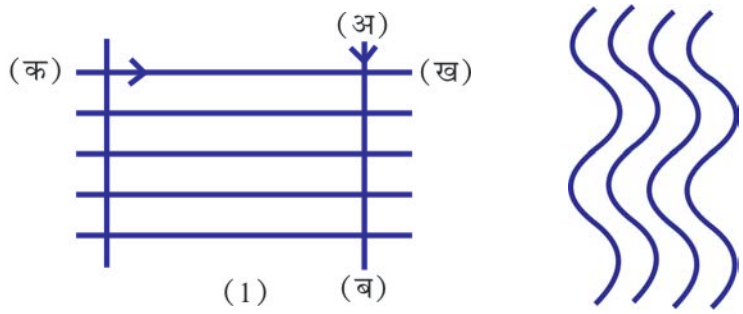

(i) इसके द्वारा आप सीधी रेखा पर मशीन चलाने का अभ्यास करेंगे।

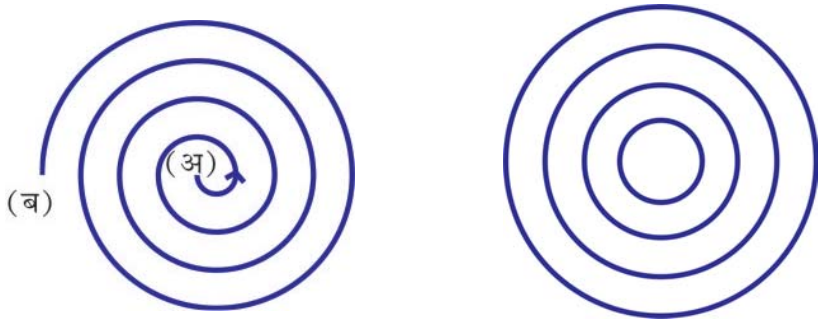

(ii) इसके द्वारा आप गोलाई में मशीन चलाने का अभ्यास करेंगे।

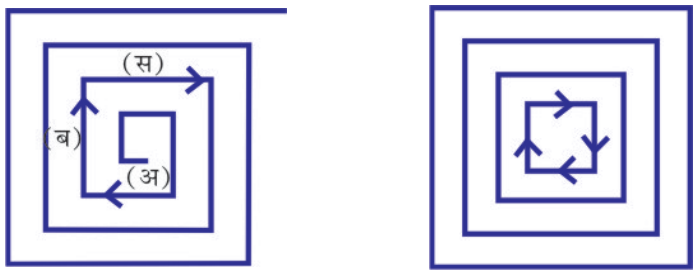

(iii) इसके द्वारा आप रेखाएं व कोने पर मशीन चलाने का अभ्यास करेंगे।

इसके बाद सुई में व फिरकी में धागा डालकर कपड़ा सिल सकते हैं।

देखें, आपने क्या सीखा 2.2

निम्नलिखित कथनों पर सही/गलत का निशान लगाइए:

(1) धागे का टेंशन थालियों द्वारा नियंत्रण किया जाता है। ☐

(2) पहिये/हत्थी को ढ़ीला करने से बॉबिन पर धागा भरा जाता है। ☐

(3) सिलाई समाप्त करने के बाद 8" धागा छोड़ना चाहिए। ☐

(4) डिब्बी को फिरकी में लगाने पर 'टक' की आवाज आती है। ☐

(5) चुटकी की सहायता से सुई फिट की जाती है। ☐

2.3 मशीन का उपयोग करते समय ध्यान देने योग्य बातें

मशीन पर कार्य करते समय हमें निम्नलिखित बातों का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए–

1. मशीन को बैठने के स्थान से थोड़ा उँचाई (एक फुट) पर रखना चाहिए।
2. मशीन पर बाईं ओर से रोशनी आनी चाहिए।
3. सीधे बैठ कर मशीन चलानी चाहिए ताकि रीढ़ की हड्डी में दर्द नहीं हो।
4. काम में लेने के बाद **फीड डॉग** के ऊपर कपड़े का टुकड़ा रख कर प्रेशर फुट को नीचे कर देना चाहिए। इससे मिट्टी अंदर नहीं जाएगी। मशीन को हमेशा ढँक कर रखना चाहिए।
5. सिलाई करते समय ध्यान प्रेशर फुट पर होना चाहिए।
6. सिलाई करते समय कपड़े का ज्यादा वाला भाग बाहर (दाईं ओर) रहना चाहिए।
7. मशीन में हमेशा मशीन के तेल का उपयोग निर्देशानुसार करना चाहिए। मिलावटी तेल का उपयोग नहीं करना चाहिए। इससे मशीन खराब हो सकती है।
8. सुई कपड़े के अनुसार होनी चाहिए।
9. मशीन को नमी वाली जगह में नहीं रखना चाहिए।
10. ऊपर व नीचे का धागा एक समान होना चाहिए।

आइए दोहराएँ

- मशीन को चलाने से पहले सुई को सही फिट करें।
- धागा मशीन के ऊपर तीली से लेकर सुई तक पहुँचाने के लिए क्रम से धागा डालें।
- धागा डालने के बाद धागे का 3 या 4 इंच लम्बा सिरा छोड़ दें।
- धागा मशीन में अगर क्रम से न डाला गया हो तो धागा बार-बार टूटेगा।
- फिरकी में धागा डालकर उसे सही फिट करें।
- सिलाई शुरू करने से पहले दो चीजों का ध्यान रखें - (क) धागे का कसाव ठीक करें (ख) लम्बे टाँके मोटे कपड़े के लिए तथा छोटे टाँके पतले कपड़े के लिए प्रयोग करें।
- मशीन कपड़े पर चलाने से पहले मशीन को चलाने का अभ्यास कागज पर करें।
- मशीन बैठने के स्थान से थोड़ा ऊँची रखें।
- मशीन पर बाईं ओर से रोशनी आनी चाहिए।
- मशीन में धूल-मिट्टी न जाने दें।

अभ्यास

I. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. धागे की रील को कहां रखते हैं?

.....

2. धागा भरते समय फिरकी को कहाँ फिट करते हैं?

.....

3. फिरकी को डिब्बी में रखते समय धागे का सिरा किस ओर रखते हैं?

.....

4. मोटे कपड़े के लिए कैसी सुई का प्रयोग करते हैं?

.....

5. सिलाई समाप्त करने पर वह खुले नहीं इसके लिए क्या करना चाहिए?

.....

II. सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाइए :

1. मोटे कपड़े की सिलाई के लिए हमें किस प्रकार के टाँके का उपयोग करना है।

(a) छोटे टाँके ☐ (c) मोटे टाँके ☐

(b) ढीले टाँके ☐ (d) लम्बे टाँके ☐

2. सुई किसकी सहायता से ठीक से लगती है।

(a) थालियां ☐ (c) फिरकी ☐

(b) चुटकी ☐ (d) हत्थी ☐

III. सही शब्द चुनकर खाली जगह भरिए :

1. सुई लगाते समय _____ को पूरी ऊँचाई तक उठाएं।
2. फिरकी जब शटल में सही लगती है तो _____ की आवाज आयेगी।
3. मशीन को थोड़ा _____ पर रखना चाहिए।
4. सुई _____ के अनुसार होनी चाहिए।

उत्तरमाला

देखें, आपने क्या सीखा

1. (1) लम्बे (2) अन्दर (3) धागा (4) स्पूलपिन (5) नीचे
2. (1) सही (2) गलत (3) गलत (4) सही (5) सही

I. अभ्यास (उत्तरमाला)

1. तीलियों पर।
2. फिरकी भरने वाला पेंच पर।
3. अपनी ओर।
4. मोटी सुई।
5. अंतिम सिरों को गांठ लगाएं।

II. अभ्यास

1. d
2. b

III. अभ्यास

1. गज
2. 'टक'
3. ऊँचाई
4. कपड़े

क्रियाकलाप

1. दिये गये चित्रों के अलावा कोई दो और चित्र बनाकर कागज पर मशीन चलाने का अभ्यास कीजिए।

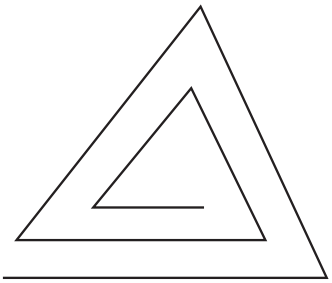

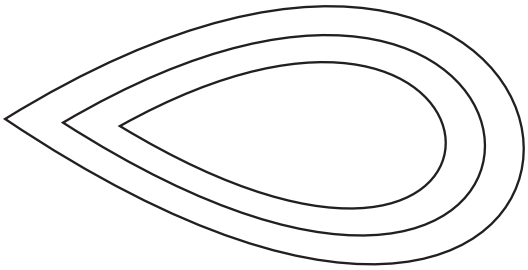

2. (a) फिरकी में धागा भरने का अभ्यास कीजिए।

   (b) क्रम से मशीन में धागा डालने का अभ्यास कीजिए।

पाठ 3

मशीन का रखरखाव

इस पाठ से हम सीखेंगे

- मशीन की सफाई करने का तरीका।
- मशीन में अन्दर व बाहर तेल डालना।
- मशीन का रख रखाव।
- मशीन पर कार्य करने के बाद की सावधानियाँ।

पिछले पाठ में हमने मशीन चलाना सीखा। हमारी मशीन ठीक ढंग से काम करे, इसके लिए इसकी सही देखभाल जरूरी है। हम भी अपनी साफ-सफाई रखते हैं, समय पर खाना खाते हैं। जिससे हमारा शरीर तंदुरुस्त रहे। उसी तरह मशीन में भी समय-समय पर तेल डालना व साफ-सफाई करते रहना चाहिए। ऐसा न करने से मशीन भारी चलने लगती है। टाँका भी सही नहीं आता व धागा बार-बार टूटता है। इसलिए मशीन का सही रखरखाव आवश्यक है। आइए, इस पाठ में हम मशीन की साफ-सफाई व रखरखाव के बारे में जानेंगे।

3.1 मशीन की सफाई

मशीन की सफाई के लिए छोटा ब्रश व मलमल का कपड़ा प्रयोग करिए। ब्रुश से साफ करने के बाद मलमल के कपड़े से धूल मिट्टी आदि साफ की जाती है। मशीन की सफाई दो प्रकार से होती है:

(i) बाहरी सफाई

(ii) अन्दर की सफाई

3.1.1 बाहरी सफाई

काम शुरू करने से पहले सारी मशीन को कपड़े से पोंछ लेना चाहिए। इससे मशीन अच्छी भी लगेगी और उस पर सिला जाने वाला कपड़ा भी गन्दा नहीं होगा।

3.1.2 अन्दर की सफाई

मशीन के अन्दर की सफाई सावधानी से करनी चाहिए। मशीन पर लगातार कार्य करने से उसके शटल में धीरे-धीरे धागे के रूएँ और टुकड़े जमा हो जाते हैं। इससे मशीन के चलने में रूकावट पड़ती है। कभी-कभी मशीन भारी चलती है। मशीन जाम भी हो जाती है। मशीन की भीतरी सफाई कार्य के अनुसार समय-समय पर करते रहना चाहिए।

(क) शटल

शटल को खोलकर उसे ब्रश, सुई व कपड़े से भली प्रकार साफ करके दोबारा लगाना चाहिए।

(ख) फेस प्लेट

मशीन की **फेस प्लेट** को खोलकर अन्दर वाले भाग को कपड़े से साफ करके तेल देना चाहिए।

(ग) दन्तराल (नीडिल प्लेट)

नीडल प्लेट पर लगे पेचों को खोलकर, दाँतों में फंसे रेशे, धागे अथवा मिट्टी को भली प्रकार साफ करना चाहिए।

नोट: मशीन की सफाई करने के लिए मशीन के पुर्जों को एक साथ नहीं खोलना चाहिए। यदि हमें मशीन के पुर्जो का ज्ञान नहीं है तो पुर्जो को सही स्थान पर फिट नहीं कर सकेंगे।

क्रियाकलाप 3.1

मशीन के अन्दर के भागों की सफाई का अभ्यास कीजिए।

3.4 मशीन में अन्दर व बाहर तेल डालना

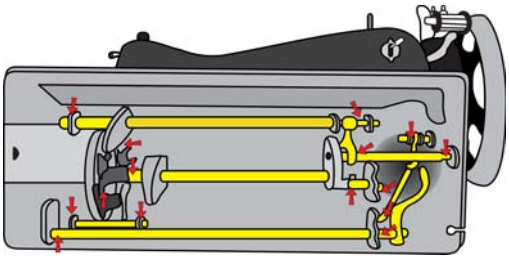

(नहीं)

(हाँ)

नोट : चलती हुई मशीन में तेल न डालें।

(i) मशीन को तेल हमेशा सफाई करने के बाद देना चाहिए। तेल मशीन का भोजन है।

(ii) जहाँ भी दो पूर्जे आपस में टकराते हैं वहीं पर पुर्जे रगड़ खाते हैं। इन स्थानों पर तेल देना आवश्यक है।

(iii) जो व्यक्ति प्रतिदिन 10 से 12 घंटे मशीन से काम लेते हैं उन्हें मशीन में रोज तेल डालना चाहिए। जो व्यक्ति सप्ताह में 3–4 घंटे मशीन चलाते है उन्हें सप्ताह में एक बार तेल अवश्य देना चाहिए। अगर मशीन का प्रयोग न होने पर भी, मशीन में महीने में एक बार तेल डालना आवश्यक है।

(iv) मशीन का तेल अच्छी क्वालिटी का होना चाहिए।

(v) मशीन में कोई और तेल, जैसे मिट्टी का, सरसों का, आदि नहीं डालना चाहिए। इससे पुर्जे खराब व जल्दी घिस जाते है। मशीन का विशेष तेल ही प्रयोग में लाना चाहिए।

3.4.1 मशीन में तेल डालने के छेद

मशीन में ऊपर 11 और नीचे 16 छेद होते हैं। उनमें तेल देना चाहिए। तेल देने के बाद मशीन को थोड़ी देर खाली चलाएँ। कोई भी कपड़ा सिलने से पहले पुराना कपड़ा सिलना चाहिए ताकि तेल लगने से वस्त्र खराब न हो जाए।

क्रियाकलाप 3.2

मशीन में तेल डालने का अभ्यास कीजिए।

देखें, आपने क्या सीखा 3.1

कथनों पर सही (✓) या गलत (✗) का निशान लगाए:-

(1) अन्दर की सफाई के लिये मशीन को पोंछना काफी है। ( )

(2) शटल को खोलकर ब्रुश से साफ करना चाहिए। ( )

(3) दन्तराल (नीडल प्लेट) को खोलकर दाँतो में फँसे रेशे हटाने चाहिए। ( )

(4) मशीन की **फेस प्लेट** को सफाई के समय नहीं खोलना चाहिए। ( )

(5) मशीन के ऊपर 16 और नीचे 11 तेल डालने के लिए छेद होते हैं। ( )

3.5 मशीन का उचित रखरखाव

मशीन की सफाई व तेल देने के साथ-साथ मशीन के रखरखाव की भी जानकारी होनी आवश्यक है।

(i) ढँक कर रखना

कार्य समाप्त होने के बाद मशीन को सावधानी से ढँक कर रखना चाहिए। इससे मशीन में धूल मिट्टी नहीं जाती।

(ii) बच्चों से बचाव

मशीन को बच्चों से दूर रखना चाहिए। यदि ढक्कन में ताला हो तो मशीन में ताला लगा देना चाहिए। इससे कोई बच्चा मशीन से छेड़छाड़ नहीं कर सकेगा।

(iii) मशीन को गीले व नमी वाले स्थान से दूर रखना

मशीन को गीले अथवा नमी वाले स्थान से दूर रखना चाहिए। मशीन को गीले स्थान पर रखने से पुर्जो को जंग लग जाएगा। इससे मशीन जल्दी खराब हो जाएगी व लकड़ी का बॉक्स भी फूल जाएगा।

(iv) स्टॉप मोशन स्क्रू ढीला करना

काम समाप्त होने के बाद इस **स्क्रू** को ढीला कर देना चाहिए। इससे मशीन को गति नहीं मिलती। बच्चों के छेड़ने से धागा भी नहीं फंसता। इससे सुई टूटने का डर भी नहीं रहता।

(v) घोड़ा (प्रेशर फुट) नीचे करना

मशीन को बंद करते समय **प्रेशर फुट** को हमेशा नीचे कर देना चाहिए।

(vi) सुई से धागा निकालना

कार्य समाप्त होने के बाद सुई में से धागा निकाल देना चाहिए, ताकि मशीन में धागा न फंसे।

देखें, आपने क्या सीखा 3.2

रिक्त स्थान भरो:-

(1) मशीन को गीले अथवा _____ वाले स्थान से दूर रखना चाहिए।

(2) काम समाप्त करने के बाद _____ को ढीला कर देना चाहिए।

(3) मशीन को बंद करते समय प्रेशर फुट को हमेशा _____ कर देना चाहिए।

(4) कार्य समाप्त होने के बाद सुई में से _____ निकाल देना चाहिए।

(5) कार्य समाप्त के बाद मशीन को _____ कर रखना चाहिए।

आइए दोहराएं

(1)

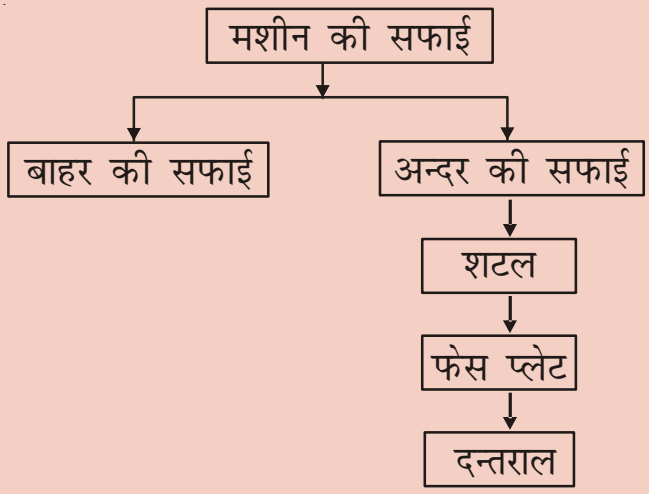

(2)

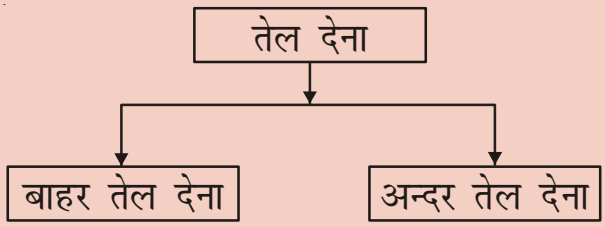

(3)

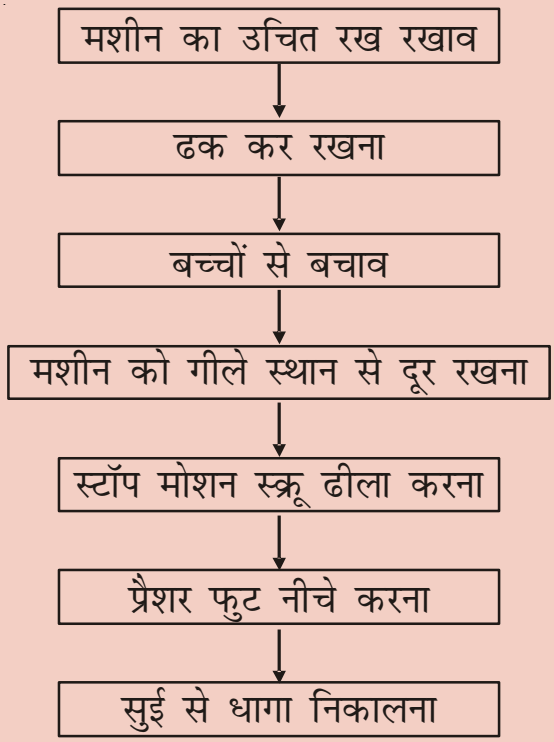

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

(1) मशीन की सफाई कितने प्रकार की होती है?

_____

(2) मशीन में तेल कहाँ डालना चाहिए?

_____

(3) मशीन के अन्दर किन-किन भागों की सफाई करनी चाहिए?

_____

(4) मशीन के बचाव के कोई दो तरीके लिखिए?

_____

(5) मशीन बंद करते समय सुई का धागा कैसे होना चाहिए?

____

II. सही पर (✓) तथा गलत पर (✗) का निशान लगाएं

(1) मशीन किसी भी कपड़े से साफ कर सकते हैं। (   )

(2) शटल को खोलकर ब्रश सुई व कपड़े से सही साफ करें। (   )

(3) चलती मशीन में तेल डालें। (   )

(4) अच्छी क्वालिटी के तेल का ही इस्तेमाल करें। (   )

(5) सरसों का तेल भी डाल सकते हैं। (   )

(6) तेल देने के बाद मशीन को खाली चलायें। (   )

III. सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाइए।

1. मशीन के कौन से भाग में फंसे रेशे, धागे अथवा मिट्टी को साफ करना चाहिए।

   (a) शटल (c) सामने की प्लेट

   (b) दन्तराल (d) घोड़ा

2. मशीन को किस प्रकार के स्थान से दूर रखना चाहिए।

   (a) गरम स्थान से (c) नमी वाले स्थान से

   (b) ऊँचे स्थान से (d) साफ स्थान से

3. मशीन में कौन सा तेल डालना चाहिए।

   (a) मिट्टी का (c) गोले का

   (b) सरसों का (d) मशीन का

4. मशीन बंद करते समय किस भाग को नीचे कर देना चाहिए।

(a) घोड़ा (c) शटल

(b) गति रोकने वाला पेंच (d) दन्तराल

IV. मिलान कीजिए

1. फिरकी	a. सुई
2. रील	b. टाँका
3. धागा	c. डिब्बी
4. कसाव	d. तीली

V. रिक्त स्थान भरिए :

1. मशीन के _____ को एक साथ नहीं खोलना चाहिए।
2. _____ अच्छी क्वालिटी का होना चाहिए।
3. मशीन के ऊपर _____ और नीचे _____ तेल डालने के लिए छेद होते हैं।
4. मशीन को साफ करने के लिए _____ और _____ का प्रयोग करें।

उत्तरमाला

देखें आपने क्या सीखा

3.1

1. ×
2. ✓
3. ✓

4. ×

5. ×

3.2

1. नमी

2. स्टाप मोशन स्क्रू

3. नीचे

4. धागा

5. ढक

अभ्यास

I. 1. मशीन की सफाई दो प्रकार की होती है :

(a) अन्दर की सफाई

(b) बाहर की सफाई

2. मशीन के ऊपर 11 तथा नीचे 16 छिद्रों में तेल डालना चाहिए।

3. शटल, फेस प्लेट, दन्तराल

4. (a) ढक कर रखें।

(b) नमी वाले स्थान पर न रखें।

(c) बच्चों की पहुँच से दूर रखें।

(d) प्रेशर फुट नीचे करके रखें।

(e) धागा निकाल कर रखें।

(f) गति चक्र ढीला करके रखें। (कोई दो)

5. धागा निकाल देना चाहिए।

II. (1) ✗ (2) ✓ (3) ✗ (4) ✓ (5) ✗ (6) ✓

III. 1. b

2. c

3. d

4. d

5. a

IV. 1. c

2. d

3. a

4. b

V. 1. पुर्जों

2. तेल

3. 11, 16

4. ब्रश, कपड़ा

पाठ 4

मशीन में आने वाली खराबियाँ व उनके ठीक करने के उपाय

इस पाठ से हम सीखेंगे

- मशीन भारी चलने के कारण व ठीक करने का तरीका।
- सुई टूटने के कारण व ठीक करने का तरीका।
- बखिया ठीक न आने के कारण व ठीक करने का तरीका।
- धागा बार-बार टूटने के कारण व ठीक करने का तरीका।
- कपड़ा इकट्ठा होने के कारण व ठीक करने का तरीका।
- धागे के गुच्छे आने के कारण व ठीक करने का तरीका।
- टांका छोड़ने के कारण व ठीक करने का तरीका।

सिलाई की मशीन चलाते-चलाते छोटी-छोटी खराबियाँ आ जाती हैं, जैसे भारी चलना,

सुई टूटना, धागा टूटना, गुच्छे बनाना आदि। अब तक हम मशीन के भागों के बारे में, साफ-सफाई के बारे में, खोलने बांधने के बारे में जान चुके हैं। आइए, अब हम छोटी-छोटी खराबियाँ होने के कारणों व उनको ठीक करने के तरीके जानें।

4.1 मशीन में आने वाली खराबियाँ तथा उनके ठीक करने के तरीके

सिलाई के लिए हम जो मशीन प्रयोग करते हैं उसके बारे में जानकारी होना बहुत आवश्यक है। इससे उसमें कुछ छोटी-मोटी खराबी आ जाए तो उन्हें स्वयं ही ठीक किया जा सकता है।

आइए, अब हम मशीन में आने वाले दोष व उनको सुधारने के बारे में जानें।

4.1.1 मशीन भारी चलना

	कारण	उपाय
1.	मशीन में तेल की कमी होना।	मशीन की समय-समय सफाई करके तेल डालते रहना चाहिए।
2.	शटल में धागा या गंदगी फँस जाना।	सफाई करके तेल डालते रहना चाहिए।
3.	पहिये में धागा लिपट जाना।	पहिये पर लिपटा हुआ धागा हटा देना चाहिए।
4.	पैर की मशीन में माल का कसा होना।	मशीन में माल ज्यादा ढीला तथा ज्यादा कसा न हो।
5.	फिरकी भरने वाले पेंच का दबा होना।	फिरकी भरने वाले पेंच को धागा भरने के बाद ढीला कर देना चाहिए।

देखें, आपने क्या सीखा 4.1

सही उत्तर से मिलाइये।

1. पहिये में धागा लिपट जाना	क. सफाई करके तेल डालना
2. शटल में धागा फँसना	ख. माल के खिचाव का निरक्षण करना
3. मशीन में तेल की कमी	ग. लिपटा हुआ धागा हटाना
4. माल का कसा होना	घ. पेंच को ढीला करना
5. फिरकी का पेंच दबा होना	ड. समय-समय पर सफाई करना

4.1.2 सुई का टूटना

	कारण	उपाय
1.	सुई का ठीक नही लगा होना। सुई का उल्टा लगा होना।	सुई का गोल भाग बाहर की तरफ होना चाहिए।
2.	सुई का कपड़े के अनुकूल न होना।	मोटे कपड़े के लिये मोटी सुई तथा पतले कपड़े के लिये पतली सुई का प्रयोग करें।
3.	मशीन के शटल का सही से लगा नहीं होना।	मशीन में शटल सही जगह लगी होनी चाहिए।

क्रियाकलाप 4.1

आपकी सिलाई की मशीन की सुई बार-बार टूट रही है। इसके कारण ढूंढने के लिये आप कौन-कौन सी क्रियाएं अपनाएँगे, क्रम अनुसार बताइए।

4.1.3 बखिया ठीक न आना

	कारण	उपाय
1.	ऊपर नीचे के धागे की मोटाई एक समान न हो।	धागा एक समान होना चाहिए।
2.	**बॉबिन केस** की पत्ती घिस गई हो।	**बॉबिन केस** की पत्ती बदल देनी चाहिए।
3.	ऊपर या नीचे का धागा अधिक कसा हो।	थालियों के पेंच को ढीला करके या कसके तनाव एक समान करना चाहिए।
4.	सुई ऊँची या नीची लगाई गई हो।	सुई को सही स्थान पर लगाएं।
5.	सुई की नोंक घिस गई हो।	सुई बदल देनी चाहिए।

देखें, आपने क्या सीखा 4.2

सही (✓) या गलत (✗) का चिन्ह लगाए:-

1. बॉबिन केस की पत्ती घिस जाने से सुई टूटती है।
2. सुई का कपड़े के अनुकूल न होने से सुई टूट जाती है।
3. ऊपर या नीचे का धागा अधिक कसा होने से सुई टूट जाती है।
4. सुई की नोंक घिस जाने से सुई टूट जाती है।
5. मशीन की शटल का सही से लगे नहीं होने से सुई टूट जाती है।

4.1.4 धागा बार-बार टूटना

	कारण	उपाय
1.	धागा कपड़े के अनुकूल न हो।	धागा कपड़े के अनुकूल होना चाहिए।

2. शटल का नोंक घिस गया हो।	शटल बदल दीजिए।
3. धागा क्रम से न डाला गया हो।	धागा क्रम से डालना चाहिए।

4.1.5 कपड़ा इकट्ठा होना

कारण	उपाय
1. दबाब का अधिक होना।	कपड़े का दबाब सही होना चाहिए।
2. दाँतों में गंदगी भरी होना।	मशीन में दाँतों की सफाई ब्रुश से करनी चाहिए।

देखें, आपने क्या सीखा 4.3

रिक्त स्थान भरिये:

1. मशीन में दाँतों की सफाई _____ से करनी चाहिये।
2. धागा _____ से न डालने पर धागा टूट जाता है।
3. सुई व धागा कपड़े के मोटाई के _____ होना चाहिये।
4. कपड़े का _____ सही न होने से कपड़ा इकट्ठा हो जाता है।
5. शटल का नक _____ जाने से धागा बार-बार टूट जाता है।

4.1.6 धागे के गुच्छे पड़ना

कारण	उपाय
1. टेशन डिस्क में धागा सही नही पिरोया जाना।	नीचे की सिलाई में गुच्छे पड़ने पर ऊपरी धागे को सही पिरोना चाहिए।
2. बॉबिन में धागा ढीला भरा हो।	ऊपरी सिलाई में गुच्छे पड़ने पर नीचे के धागे का तनाव (**बॉबिन केस** के धागे) सही होना चाहिए।

3.	धागा क्रम से न डाला गया हो।	धागा क्रम से डालें।

4.1.7 टांका छोड़ना

	कारण	उपाय
1.	सुई का ठीक लगा न होना।	सुई को **नीडल बार** में सही ढंग से लगाइए।
2.	धागा कपड़े के अनुकूल न हो।	धागा कपड़े के अनुकूल होना चाहिए।
3.	सुई की नोक मुड़ी या घिसी हुई हो।	सुई बदल दीजिए।

आइए दोहराएं

(1) समय पर तेल न डालने से, शटल साफ न होने से, पहियों में धागा लिपटने से, मशीन की माल कसी होने से, फिरकी का पेंच दबा होने से, मशीन भारी चलने लगती है। इनकी सफाई करना आवश्यक है।

(2) सुई मशीन में ठीक न लगी हो, कपड़े के अनुसार सुई न हो, शटल मशीन में सही न लगी हो तब सुई टूटने का डर रहता है। सुई व शटल को लगाते समय सावधानियां बरतें।

(3) ऊपर नीचे का धागा समान न होने पर, बॉबिन की पत्ती घिस जाने पर, सुई ठीक न डालने पर, सुई की नोक घिस जाने पर बखिया ठीक नहीं आती। चलाने से पहले इन सबको ध्यान से जाँच लें।

(4) धागा कपड़े के अनुसार न हो, शटल का नोंक घिस जाने पर, धागा क्रम से न डालने पर, धागा बार-बार टूटता है। इन सबका ध्यान रखें।

(5) कपड़े पर दबाव अधिक होने पर, दाँतों में गंदगी भरने से कपड़ा सिलाई के समय इकट्ठा होने लगता है। इनको ध्यान से सही कर लें।

(6) टेंशन में धागा सही न पिरोया हो, बॉबिन में धागा ढीला हो, धागा क्रम से न डाला हो, धागे में गुच्छे पड़ने लगते हैं। इनका ध्यान रखें।

(7) सुई ठीक न लगी हो, धागा कपड़े के अनुसार न हो, सुई की नोंक मुड़ी हो तो मशीन टांका छोड़ने लगती है। इनको सही करें।

अभ्यास

I. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) मशीन में होने वाली कोई दो खराबियाँ बताइए।

.....

(2) सिलाई मशीन में बखिया ठीक न आने का कारण बताइए।

.....

(3) मशीन में धागे के गुच्छे पड़ने के दो कारण बताइए।

.....

(4) मशीन भारी चलने पर आप क्या करेंगी? कोई दो उपाय लिखिए।

.....

(5) धागे का तनाव ठीक न होने पर क्या होगा?

.....

II. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाएं।

1. ऊपर नीचे के धागे की मोटाई एक समान न होना

(a) नोंक घिस गई
(c) धागा एक समान नहीं
(b) सुई ऊँची नीची
(d) पत्ती घिस गई हो

2. धागा बार-बार टूटने का कारण

(a) दाँतों में गंदगी भरी होना

(b) धागा कपड़े के अनुकूल न होना

(c) कपड़े का दबाव अधिक होना

(d) बॉबिन में धागा ढीला होना

3. टांका छोड़ने का कारण

(a) धागा क्रम से न डाला गया हो

(b) सुई की नोंक मुड़ी या घिसी हो

(c) कपड़े का दबाव सही नहीं

(d) शटल का नोंक घिस गया है

III. रिक्त स्थान भरिए :

1. धागा कपड़े के _____ होना चाहिए।
2. सुई को _____ में सही ढंग से लगाना चाहिए।
3. सुई को _____ स्थान पर लगाना चाहिए।
4. पैर की मशीन का माल ज्यादा _____ या ज्यादा _____ नहीं होना चाहिए।
5. मशीन के दाँतों की सफाई _____ से करनी चाहिए।

IV. मिलान कीजिए

1. मशीन भारी चलना	a. धागा एकसमान होना चाहिए
2. बखिया ठीक न आना	b. सुई बदल दीजिए
3. धागा बार-बार टूटना	c. तेल की कमी होना
4. टाँका छोड़ना	d. धागा क्रम से डालना चाहिए

उत्तरमाला

देखें आपने क्या सीखा

I.
1. ग
2. ड.
3. क
4. ख
5. घ

II.
1. ×
2. ✓
3. ×
4. ×
5. ✓

III.
1. ब्रुश
2. क्रम
3. अनुकूल
4. दबाब
5. घिस

अभ्यास उत्तरमाला

I.

1. मशीन भारी चलाना, सुई का टूटना, धागा टूटना, बखिया ठीक न आना, धागे के गुच्छे बनना, कपड़ा इकट्ठा होना, टाँका होना (कोई दो)

2. 1. धागे की मोटाई समान न हो।

2. बॉबिन केस की पत्ती घिस गई हो।

3. सुई ऊँची या नीची लगी हो।

4. सुई की नोक घिस गई हो। (कोई एक)

3. 1. तनाव की थालियों में धागा ठीक न डाला हो।

2. बॉबिन में धागा ढीला भरा हो।

3. धागा क्रम से न डाला हो। (कोई दो)

4. 1. समय पर सफाई करें।

2. समय पर तेल डालें।

3. पहिये पर लिपटा धागा हटायें।

4. माल को ज्यादा ढीला व कसा न रखें। (कोई दो)

5. धागा टूट जाएगा।

II. 1. c

2. d

3. c

III. 1. अनुकूल

2. डण्डी

3. सही

4. कसा / ढीला

5. ब्रश

IV. 1. c

2. a

3. d

4. b

पाठ 5

मापने व ड्राफ्टिंग के औजार (उपकरण)

इस पाठ से हम सीखेंगे

- औजारों व उपकरणों की जानकारी तथा प्रयोग करने के तरीके।
- माप के औजारों की जानकारी तथा इस्तेमाल के तरीके।
- ड्राफ्टिंग के औजारों की जानकारी तथा इस्तेमाल के तरीके।

कपड़े सिलते समय हमें मशीन के अलावा और भी कई चीजों की जरूरत पड़ती हैं, जैसे - कैंची, सुई, धागा, इंचीटेप, मिल्टन चॉक, लैग शेपर आदि। इन सभी औजारों के नाम व इनका उपयोग हम इस पाठ में सीखेंगे। इनकी मदद से हम अपनी सिलाई आसानी से कर सकते हैं।

5.1 औजार व उपकरण

सबसे पहले यह जानना आवश्यक है कि औजार व उपकरण क्या हैं:-

जिन साधनों का प्रयोग पोशाक बनाने के लिये आवश्यक होता है उन्हें वस्त्र बनाने का औजार व उपकरण कहते हैं। इनको प्रयोग में लाने से कार्य स्वच्छ, सुन्दर व आसान होता है।

5.1.1 लाभ

इन औजार व उपकरणों का प्रयोग करने से निम्न लाभ होते हैं:-

1. समानता आती है।
2. समय की बचत होती है।
3. क्रम से कार्य होता है।
4. स्वच्छ कार्य होता है।
5. अधिक उत्पादन कर सकते हैं।

5.2 मापने के औजार

माप लेते समय प्रयोग में आने वाले औजार व उपकरण निम्नलिखित हैं:-

(1) फीता (इंचीटेप)

यह प्लास्टिक का बना हुआ होता है। इसमें एक तरफ 1 से.मी. से लेकर 152 से.मी. तक निशान होते हैं तथा दूसरी ओर 1 इंच से लेकर 60 इंच तक के निशान होते हैं। इंच में 8 बिन्दु के निशान होते हैं। यह मापने के काम आता है। यह डेढ़ मीटर का भी हो सकता है।

(2) पैमाना (स्केल)

यह बिल्कुल सीधा होता है। छोटा व बड़ा यह कई प्रकार के बने होते हैं। ड्राफ्टिंग बनाते समय व नाप लेते समय इसका उपयोग करते हैं। यह लकड़ी, प्लास्टिक अथवा धातु का बना होता है। स्केल में भी एक तरफ से.मी. और दूसरी तरफ इंच के निशान होतें हैं।

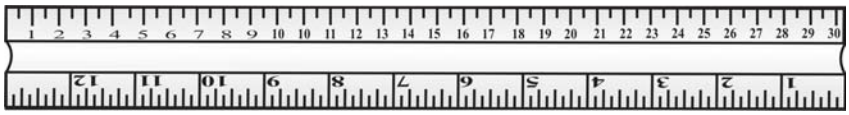

(3) एल स्केल

यह अंग्रेजी के एल (L) अक्षर की तरह बना होता है। इसमें एक तरफ 30 से. मी. व दूसरी तरफ 60 सेमी. के निशान होते है। यह ड्राफ्टिंग करते समय लाइने खींचने के लिए प्रयोग किया जाता हैं। इसके द्वारा लम्बाई और चौड़ाई दोनों लाइनें एक साथ लगा सकते है।

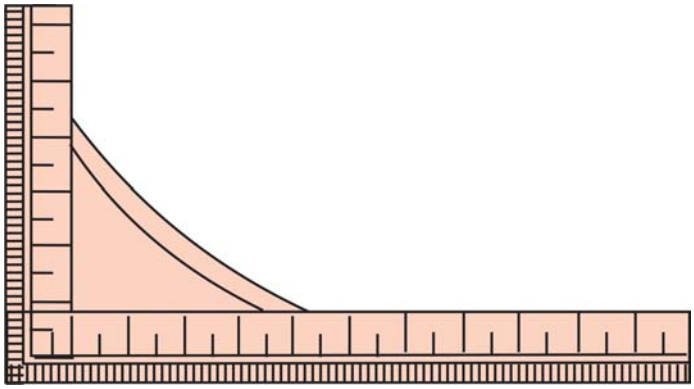

(4) दरजी कला कर्व

इसे टेलर आर्ट कर्व भी कहते है। यह प्लास्टिक अथवा लकड़ी का बना होता है। यह भी एल शेप का होता है। यह से.मी. व इंच दोनों में आता है। से.मी. वाले स्केल में एक ओर 1/5 व दूसरी ओर 1/10 के निशान लगे होते है। इंच वाले स्केल में एक ओर 1/6 और दूसरी ओर 1/4 के निशान लगे होते है। इससे कॉपी पर ड्राफ्टिंग की जाती है।

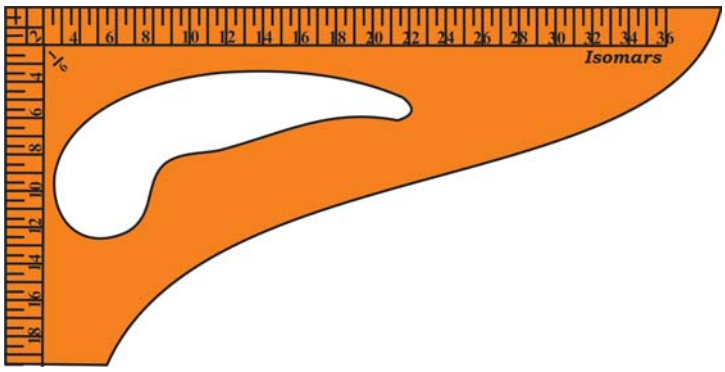

(5) लैग शेपर

यह हल्की सी गोलाई में बना होती है। इसे दर्जी पैंट में गिदरी तथा कोट की बाजू में शेप देने के लिए प्रयोग करते हैं।

इसकी लम्बाई 25" से 30 " तक होती है। सिरे की चौड़ाई 3" से शुरू होकर दूसरे सिरे पर 1½" की हो जाती है।

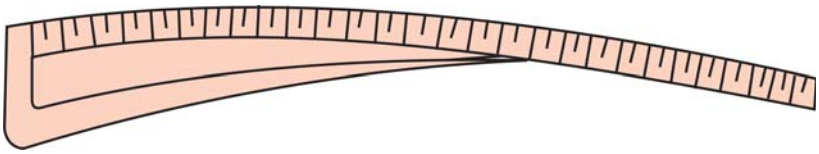

देखें, आपने क्या सीखा 5.1

सही (✓) व गलत (×) का निशान लगाएं।

(1) औजारों का प्रयोग करने से समय की बचत होती है। ☐

(2) पैंट की गिदरी में शेप देने के लिये एल स्केल का प्रयोग करते हैं। ☐

(3) इंचीटेप दो मीटर का होता है। ☐

(4) दर्जी कला कर्व को टेलर आर्ट कर्व भी कहते हैं। ☐

(5) एल स्केल की मदद से लम्बी व चौड़ी लाइन एक साथ लगा सकते हैं। ☐

5.3 ड्राफ्टिंग के औजार

ड्राफ्ट बनाते समय प्रयोग में आने वाले औजार व उपकरण:-

(1) निशान चक्कर (ट्रेंसिग व्हील)

इस औजार को पकड़ने के लिये लकड़ी या प्लास्टिक का हैन्डल लगा होता है। आगे की ओर एक दन्तराल वाला चक्कर लगा होता है। यह सूती, रेशमी कपड़ों में एक तह से दूसरे तह पर निशान उतारने के काम आता है।

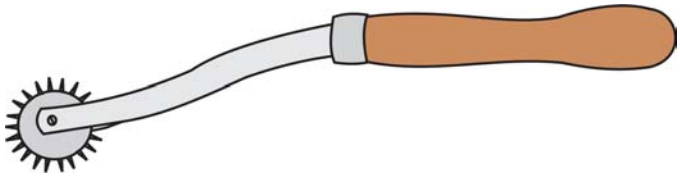

(2) टेलर्स चॉक (मिल्टन चॉक)

यह रंगीन मिट्टी का बना होता है। कपड़े को काटने से पहले इस से निशान लगाते है। यह बहुत सारे रंगों में उपलब्ध होता है। इसके निशान आसानी से झड़ के उतर जाते हैं।

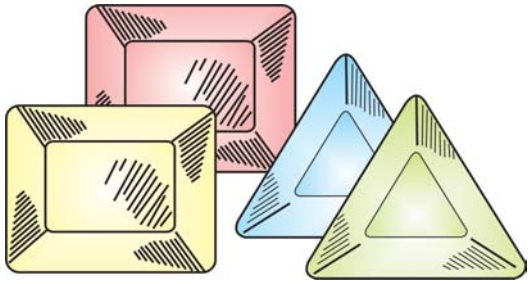

(3) पैन्सिल

पैन्सिल आसानी से उपलब्ध होना वाला उपकरण है। ड्राफ्ट बनाते समय महीन जानकारियों को उतारने व लिखने के लिये इसका प्रयोग करते है।

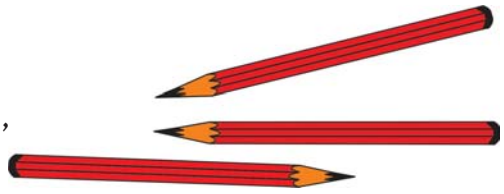

(4) कार्बन पेपर

कार्बन पेपर का प्रयोग कपड़े की एक तह से दूसरी तह पर निशान उतारने के लिये होता है। यह अलग-अलग रंगों में उपलब्ध है।

(5) नॉचिंग मार्कर

ड्राफ्टिंग करते समय हम स्केल, एल स्केल, दरजी कला कर्व तथा लैग शेपर का प्रयोग भी करते है।

इसे टक मार्कर भी कहते हैं। यह लोहे व टीन का बना होता है। इसके निचले हिस्से में दन्ते बने होते हैं। इस पर निशान लगे होते हैं। इसके द्वारा सुविधा से प्लीट आदि डाले जाते है। इसकी दूसरी तरफ मोटे-मोटे कटाव होते हैं।

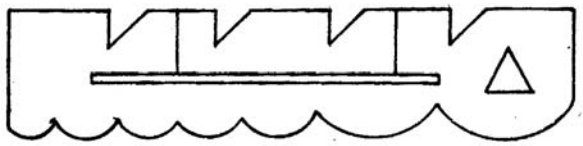

नॉचिंग मार्कर

देखें, आपने क्या सीखा 5.2

रिक्त स्थान भरीये:

(1) ट्रेसिंग व्हील को _____ भी कहते हैं।

(2) टेलर्स चाक _____ का बना होता हैं।

(3) कार्बन पेपर का प्रयोग एक तह से दूसरी तह पर _____ उतारने के लिये होता है।

(4) पैन्सिल आसानी से उपलब्ध होने वाला _____ है।

(5) ट्रैसिंग व्हील में एक _____ वाला चक्कर होता है।

आइए दोहराएं

- औजारों व उपकरणों की जानकारी तथा उनका प्रयोग।
- औजारों व उपकरणों की सहायता से काम में समानता आती है। क्रम से कार्य होता है, स्वच्छता व सफाई आती है। इनसे काम जल्दी होता है जिससे उत्पादन अधिक हो सकता है।
- नापने के औजार व उपकरण
  - फीता (इंचीटेप)
  - पैमाना (स्केल)
  - एल स्केल
  - दरजी कला कर्व
  - लैग शेपर
- ड्राफ्टिंग के औजार
  - टेर्सिंग व्हील
  - मिल्टन चॉक (टेलर्स चॉक)
  - पैन्सिल
  - कार्बन पेपर
  - नॉचिंग मार्कर

अभ्यास

I. दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. नाप लेते समय उपयोग होने वाले दो उपकरणों का नाम लिखिए?

   (i) .....

   (ii) .....

2. ड्रापिंटग के दो औजारों के नाम लिखिए?

   (i) .....

   (ii) .....

3. कपड़े पर निशान लगाने के लिए किसका प्रयोग किया जाता है?

   (i) .....

   (ii) .....

4. इंचीटेप कितने मीटर का होता है?

   .....

II. खाली स्थान भरिए :

1. सिलाई में कला _____ का विशेष महत्व है।
2. जिन साधनों का प्रयोग वस्त्र बनाने के लिये आवश्यक होता है उन्हें वस्त्र बनाने का _____ व _____ कहते हैं।
3. _____ नापने के काम आता है।
4. फुट्टा _____ , _____ अथवा _____ का बना होता है।
5. एल स्केल द्वारा _____ और _____ दोनों लाइनें एक साथ लगा सकते हैं।
6. _____ हल्की सी गोलाई में बना होता है।
7. ट्रेसिंग व्हील में एक _____ वाला चक्कर लगा होता है।
8. नांचिंग मार्कर को _____ भी कहते हैं।

2. सही उत्तर पर (✓) व गलता (✗) का निशान लगाइए:

1. इसे दर्जी पैंट में गिदरी तथा कोट की बाजू में शेप देने के लिए प्रयोग करते हैं।

(a) फुट्टा ☐ (c) लैग शेपर ☐

(b) एल स्केल ☐ (d) दरजी वाला कर्व ☐

2. इंचीटेप कितने मीटर का होता है

(a) एक मीटर ☐ (c) दो मीटर ☐

(b) डेढ़ मीटर ☐ (d) चार मीटर ☐

3. नांचिंग मार्कर किस वस्तु का बना होता है

(a) प्लास्टिक ☐ (c) लोहे व टीन ☐

(b) लकड़ी ☐ (d) मिट्टी ☐

4. यह आसानी से उपलब्ध होने वाला उपकरण है

(a) टेलर्स चॉक ☐ (c) ट्रेसिंग व्हील ☐

(b) पैन्सिल ☐ (d) एल स्केल ☐

III. रेखा खींचकर मिलान कीजिए :

1.	इंचीटेप	a.	इसमें मोटे-मोटे कटाव होते हैं।
2.	फुट्टा	b.	यह अलग-अलग रंग में उपलब्ध है।
3.	दरजी वाला कर्व	c.	इसके निशान आसानी से झड़ के उतर जाते हैं।
4.	ट्रेंसिंग व्हील	d.	यह प्लास्टिक का बना होता है।
5.	टेलर्स चॉक	e.	इस औजार में हैन्डल लगा होता है।
6.	कार्बन पेपर	f.	यह बिल्कुल सीधा होता है।
7.	नॉचिंग मार्कर	g.	इससे कॉपी पर ड्राफ्टिंग की जाती है।

V. चित्र देखकर उनके नाम लिखिए

1. 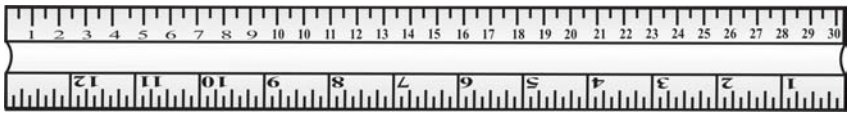

_____

2. 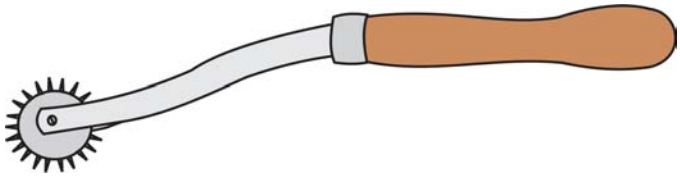

_____

3. 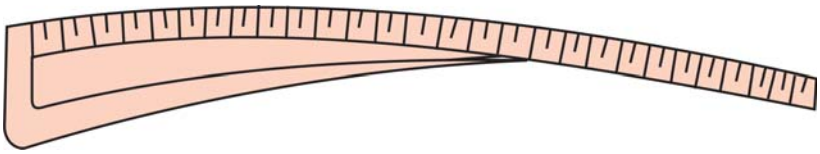

_____

4. 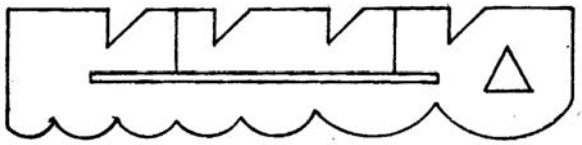

_____

उत्तरमाला

देखें, आपने क्या सीखा

5.1

1. ✓
2. ×
3. ×

4. ✓

5. ✓

5.2

1. निशान चक्र
2. मिट्टी
3. निशान
4. उपकरण
5. दन्तराल

अभ्यास (उत्तरमाला)

I. दिए गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. फीता
   पैमाना
   एल स्केल
   लैग शेपर (कोई दो)
2. टेर्सिंग व्हील
   मिल्टन चॉक (टेलर्स चॉक)
   पैन्सिल
   कार्बन पेपर
   नॉचिंग मार्कर (कोई दो)
3. (i) टेर्सिंग व्हील
   (ii) टेलर्स चॉक
4. 60'' का होता है।

II. 1. चक्र

2. औजार/उपकरण

3. फीता
4. लकड़ी, प्लास्टिक, धातु
5. लम्बाई/चौड़ाई
6. लैग शेपर
7. दन्तराल
8. टक मार्कर

III. 1. c लैग शेपर
2. b डेढ़ मीटर
3. c लोहे व टीन
4. d पैन्सिल

IV. 1. d
2. f
3. g
4. e
5. c
6. b
7. a

V. चित्र देखकर नाम लिखें :

1. फुटा
2. ट्रेसिंग व्हील
3. लैग शेपर
4. नॉचिंग मार्कर

पाठ 6

कटाई व सिलाई के औजार (उपकरण)

इस पाठ से हम सीखेंगे

- काटने के औजारों कौन-कौन से हैं, तथा कहाँ काम आते हैं?
- सिलाई के औजार कौन-कौन से हैं तथा कहाँ काम आते हैं?
- औजारों को काम में लाने का तरीका।

किसी भी पोशाक में अच्छी फिटिंग के लिये यह जरूरी है कि कपड़ा उपयुक्त औजारों की सहायता से काटा व सिला गया है। बाजार में काटने व सिलने के बहुत से औजार व उपकरण उपलब्ध है। इन औजारों व उपकरणों का प्रयोग करके हम समय की बचत के साथ-साथ सफाई से कार्य कर सकते हैं।

6.1 कटाई के औजार (उपकरण)

कटाई के समय प्रयोग में आने वाले औजार व उपकरण:-

6.1.1 बड़ी कैंची

बड़ी कैंची

यह 10" से 14" लम्बी कैंची होती है। मोटे कपड़े को काटने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। यह कैंची कपड़े की 6, 7 तहों को एक साथ काट देती है। इसके बाहर के किनारे अन्दर के किनारों की अपेक्षा अधिक तेज व पैने होते हैं। इसके हैण्डल में दो सुराख होते हैं। एक बड़ा व एक छोटा। इस कैंची का नीचे का ब्लेड सीधा व ऊपर का ब्लेड कोण में होता है।

6.1.2 साधारण कैंची

साधारण कैंची

यह 7 इंच से 10 इंच तक होती है। कपड़े काटने के लिए घरों में अधिकतर इसी कैंची का प्रयोग किया जाता है। इसका वजन बहुत कम होता है। इसका प्रयोग कपड़ा व धागा काटने के लिए किया जाता है। इसके दोनों ब्लेड बराबर होते है।

6.1.3 छोटी कैंची (ट्रिमिंग कैंची)

यह 4 इंच से 5 इंच लम्बी होती है। वस्त्र को सिलते समय या सिलने के बाद कपड़े में सफाई लाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग लैस, पाइपिंग, फीता, डोरी तथा कढ़ाई के धागे काटने के लिए भी किया जाता है।

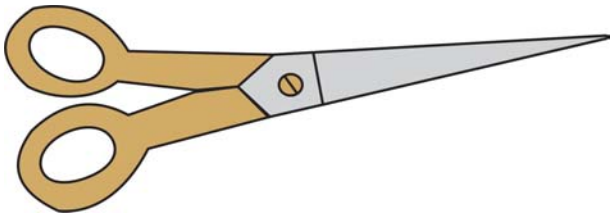

छोटी कैंची (ट्रिमिंग कैंची)

6.1.4 कटावदार कैंची (पिंकिंग सिजर्स)

कटावदार कैंची :- यह 8 इंच से 10 इंच तक लम्बी होती है। इसके दोनों ब्लेड कटावदार होते है। इससे कपड़ा काटने से कटे हुए किनारों के तार नहीं निकलते है। आमतौर पर स्त्रियों तथा बच्चों के वस्त्रों के अन्दर कटे हुए किनारों की फिनिश करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। इस कैची से कटा हुआ किनारा जिग जैग आकृति का होता है।

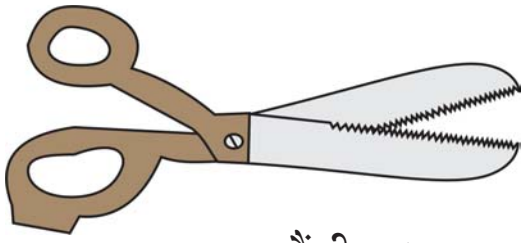

कटावदार कैंची 6.4

6.1.5 काज वाली कैंची (बटन होल सिजर्स)

इसके द्वारा काज काटे जाते है। यह 4 इंच से 6 इंच तक लम्बी कैंची होती है। इसके बीच में एक ब्लेड व पेच फिट होता है। इसके द्वारा 1/2 इंच या 6 प्वांइट कपड़ा काटा जाता है। इसमें एक पेच लगा होता है जिसकी सहायता से काज को आवश्यकतानुसार छोटा या बड़ा काटा जाता है। इस पेंच को कसने से काज छोटा और ढीला करने से बड़ा कटता है।

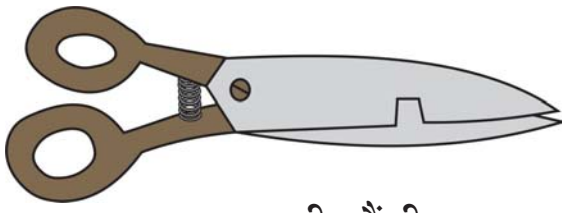

काज वाली कैंची 6.5

6.1.6 छिद्रक (छेद करने वाला)

इसे **होल मेकर** या **पोकर** भी कहते है। यह लोहे का बना होता है। इसका प्रयोग सुराख

बनाने के लिए किया जाता है। इसका आगे का हिस्सा नुकीला व पीछे का हिस्सा गोल होता है। पुलिस या मिल्ट्री की वर्दियों में या डिजाइन बनाने के लिए या जहाँ छेद करना हो इसका प्रयोग किया जाता है।

छिद्रक

देखें आपने क्या सीखा 6.1

खाली स्थान भरिए :

(क) बटन होल सिजर्स का प्रयोग .....के लिए किया जाता है।

(ख) छिद्रक को ..... भी कहते है।

(ग) कटाव दार कैंची का प्रयोग ..... के लिए किया जाता है।

(घ) बड़ी कैंची की लम्बाई ..... होती है तथा इससे कपड़े की ..... तहों को एक साथ काटा जा सकता है।

(ड.) ट्रिमिंग कैंची का प्रयोग कपड़े में ..... के लिए किया जाता है तथा इस कैंची को ..... भी कहते हैं।

6.2 सिलाई के औजार (उपकरण)

सुई

सिलाई में प्रयोग होने वाली सुईयाँ दो प्रकार की होती है:-

1. मशीन की सुईयाँ
2. हाथ की सुईयाँ

मशीन की सुईयाँ दो प्रकार की होती है।

(i) चपटी टोपी वाली सुईयाँ

यह सुई एक तरफ से चपटी व तीन तरफ से गोल होती है। यह साधारण मशीनों पर प्रयोग में लाई जाती है। यह विभिन्न नम्बर की होती है। मोटे कपड़े पर मोटी सुई व पतले कपड़े पर पतली सुई का प्रयोग किया जाता है।

(ii) गोल टोपी वाली सुईयाँ

यह सुई ऊपर से गोल होती है। इनका प्रयोग अधिकतर पावर की औद्योगिक मशीनों पर किया जाता है।

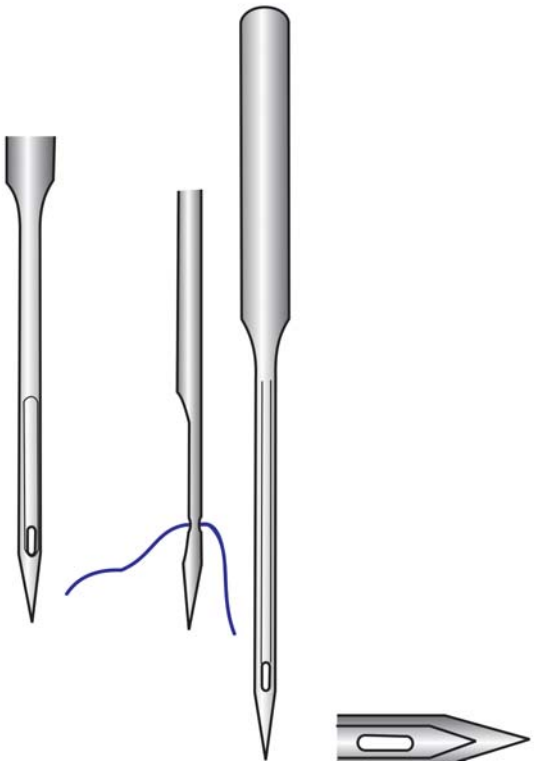

(a) (b)

मशीन की सुईयाँ

(a) चपटी टोपी वाली एवं (b) गोल टोपी वाली

मशीन की सुईयाँ कई मार्को की होती है जैसे-सिंगर, पफ, ऊषा इत्यादि। इनमें से सिंगर की सुई श्रेष्ठ मानी जाती हैं। यह अलग-अलग नम्बरों की होती है। यह सुईयाँ 9 से 24 नम्बर तक होती हैं। जैसे-जैसे नम्बर बढ़ते जाते हैं सुई मोटी होती जाती है। जैसे-जैसे नम्बर कम होते हैं सुई पतली होती जाती है।

(i) 9-11 नं. की सुई

यह सुईयाँ बारीक होती हैं। बारीक व नाजुक कपड़ों पर कढ़ाई व सिलाई करने के लिए प्रयोग में लाई जाती है।

(ii) 12-14 नं. की सुई

यह सुईयाँ थोड़ी मोटी व बड़ी होती है। बारीक सूती कपड़ा, लिलन, रेशमी कपड़ों पर इसका प्रयोग किया जाता है।

(iii) 14 नं. की सुई

इस सुई का प्रयोग कैंब्रिक, आरकंडी, वायल आदि कपड़े सिलने के लिए किया जाता है।

(iv) 16 नं. की सुई

यह सुई प्रायः हर प्रकार का कपड़ा सिलने के लिए प्रयोग की जाती है। जैसेः- लट्ठा, पापलीन आदि।

(v) 18 नं. की सुई

यह सुई जीन, टसर, कार्डराई तथा गर्म कपड़ा सिलने के काम आती है।

(vi) 19 नं. की सुई

यह सुई पैराशूट, कैनवस आदि सिलने के काम आती है।

(vii) 21 से 24 नं. की सुई

यह सुईयां बहुत मोटी होती है। इनका प्रयोग अधिकतर फैक्ट्रियों में किया जाता है। इन सुईयों द्वारा तिरपाल तथा मोटा कपड़ा सिला जा सकता है।

6.2.2 हाथ की सुईयाँ

हाथ की सुईयाँ कई प्रकार की होती हैं जैसे लम्बी, छोटी, मोटी, पतली इत्यादि। मोटी व छोटी सुईयों का प्रयोग मर्दाना कपड़ो में कच्चा, तुरपाई आदि के लिए किया जाता है। यह सुईयाँ मजबूत होती है। सुविधा के लिए सुईयों के नम्बर रखे गए है। जैसे-जैसे नम्बर बढ़ता है सुई पतली होती जाती है तथा जैसे-जैसे नम्बर कम होते जाते है सुई मोटी होती जाती है।

हाथ की सुईयाँ

हाथ की सुईयों के नम्बर 0 से 12 तक होते है। कपड़ों के हिसाब से सुईयों का प्रयोग किया जाता है।

(i) 0 से 1 नं. की सुई

यह सूइयाँ मोटी होती है। इन्हें खन्दुई भी कहा जाता है। 0 नं. की सुई सूटकेस, गद्दे आदि में धागे डालने में प्रयोग की जाती है। बोरी, तिरपाल व लैदर का काम करने के लिए भी इसका प्रयोग होता है।

(ii) 2 से 3 नं. की सुई

यह सूइयाँ सोफे आदि सिलने के काम आती है। 3 नं. की सुई जिसकी नोक गोल होती है वह स्वैटर वाली कहलाती है। इसका सुराख मोटा होता है। इससे कॉलर की नोक भी बनाई जाती है।

(iii) 4 से 5 नं. की सुई

यह सूइयाँ मिल्ट्री की वर्दी तथा मोटे गर्म कपड़ो में कच्चा करने के काम आती है। 5 नं. की सुई मर्दाने कपडों में काज बनाने के काम में भी लाई जाती है।

(iv) 6 से 8 नं. की सुई

यह सूइयाँ रेशमी व सूती कपड़ों में तुरपाई करने के काम आती है। यह बारीक व लम्बी होती है।

(v) 9 से 10 नं. की सुई

यह सूइयाँ बहुत बारीक व नाजुक होती है। इनका प्रयोग शिफोन, नायॅलोन, टैरालीन आदि पर कढ़ाई करने के लिए किया जाता है।

(vi) 11 से 12 नं. की सुई

यह सूइयाँ बाल के बराबर बारीक होती है। इनका छेद सुनहरे रंग का होता है। इन सुईयों से सलमा, सितारे, मोती आदि लगाए जाते हैं।

6.2.3 थिम्बल

इसे अंगुस्थान भी कहते हैं। यह प्लास्टिक व लोहे की होती है। यह उंगलियों को सुरक्षित रखती है। यह दो प्रकार की होती है। एक तो गिलास के समान एक तरफ से खुली व ऊपर से टोपी होती है। दूसरी दोनों तरफ से खुली होती है। यह दाएँ हाथ की मध्य उंगली में पहनी जाती है। इससे हाथ से काम करते समय सुई को कपड़े में से निकालने में सुविधा होती है तथा सुई हाथ में भी नहीं लगती। इसमें सुई की मोटाई जितने छोटे-छोटे निशान होते हैं। इसको पहनने से कार्य शीघ्र होता है।

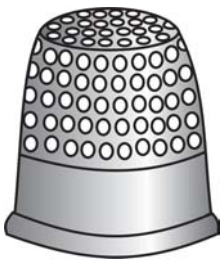

थिम्बल

6.2.4 उधेड़क (रिप्पर)

इसका प्रयोग गलत सिलाई को उधेडने के लिये किया जाता है। इसके सिरे नोकिले होते हैं जो टाँके को उठाने में मदद करता है। इसका हेम्डल लकड़ी या प्लास्टिक का होता है।

6.2.5 धागा

धागे अलग-अलग प्रकार के व मोटे व पतले आकार में आते हैं। कढ़ाई के लिये अलग व सिलाई के लिये अलग धागे होते हैं। सिलने के लिये प्रयोग होने वाला धागा 20 से 100 साइज नम्बर तक उपलब्ध होता है। सिलाई में हम सबसे ज्यादा सूती धागे का प्रयोग करते है। जितना साइज बढ़ता है उतना ही धागा महीन होता चला जाता है। ध ागे का चुनाव सिलाई में प्रयोग होने वाले कपड़े पर निर्भर होता है।

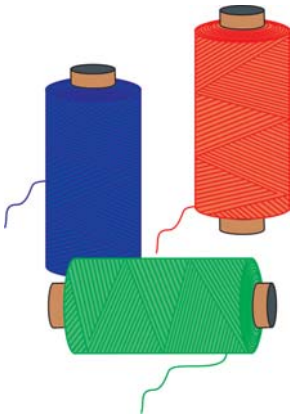

आइए दोहराएं

- 6-7 तहों के कपड़े को काटने की कैंची 10'' से 14'' लंबी होती है।
- अधिकतर घरों में काम आने वाली कैंची 7'' से 10'' तक की होती है।

- कपड़ों को सिलते समय या सिलाई के बाद सफाई लाने के लिए 4'' से 5'' लंबी कैंची काम में आती है।
- कपड़ों में तार न निकले इसके लिए कटावदार कैंची काम में लाते हैं। इसकी लम्बाई 8'' से 10'' इंच तक होती है।
- काज बनाने वाली कैंची 4'' से 6'' इंच तक लंबी होती है। एक पेंच से काज का आकार छोटा बड़ा किया जाता है।
- पुलिस या मिल्ट्री की वर्दियों में या डिजाइन बनाने का एक छिद्रक होता है।
- मशीन की सुइयां दो तरह की होती है चपटी टोपी वाली तथा गोल टोपी वाली।
- साधारण मशीनों में चपटी टोपी वाली सुई काम में आती है।
- गोल टोपी जाली सुई पावर की औद्योगिक मशीनों पर काम में लाई जाती है।
- मशीन की सुइयाँ सिंगर, पफ व ऊषा इत्यादि नामों की होती हैं। इनमें सिंगर की सुई सबसे अच्छी मानी जाती है। यह 9 से 24 नंबर तक की होती है।
- सुई आकार के हिसाब से काम में लाई जाती है। जैसे -

सुई का नम्बर	काम का विवरण
9 - 11	बारीक व नाजुक कपड़ों पर कढाई/सिलाई को।
12 - 14	बारीक सूती कपड़ा व रेशम के कपड़ों को।
14	कैमरिक आरकंडी, वायल कपड़े सीने को।
16	हर प्रकार के कपड़ा सीने को जिसमें लट्ठा पॉपलीन आदि।
18	जीन, हसर कार्ड राई तथा विम कपड़ा पीने को
19	पैरासूट, कैनवास आदि सीने को
21 - 24	फैक्ट्रीयों में तिरपाल तथा मोटा कपड़ा सीने को।

- हाथ की सुई 0 से 12 नम्बर तक की होती है। सबसे अधिक नम्बर की सुई सबसे पतली होती है तथा 0 नम्बर की सुई सबसे मोटी होती है। कपड़े के हिसाब से सुई का प्रयोग होता है।

सुई का नम्बर	कार्य का विवरण
0 से 1	यह सूटकेस सीने व गद्दों में धागे डालने को।
2 से 3	स्वैटर सोफा सीने को।
4 से 5	मिल्ट्री की वर्दी व मोटे कपड़ों को।
6 से 8	रेशमी व सूती कपड़े की तुरपाई को।
9 से 10	सिफोन नायलॉन टैरालीन के लिए।
11 से 12	सलमा सितारें मोती लगाने को।

- थिम्बल प्लास्टिक या लोहे का होता है इससे उंगलियां सुई से काम करने पर सुरक्षित रहती हैं।
- उधेड़न, सिलाई उधेड़ने के काम आता है।
- सिलाई का धागा 20 से 100 साईज नम्बर का मिलता है। सिलाई में हम सबसे अधिक सूती धागे का प्रयोग करते हैं। बड़े नम्बर के साईज का धागा सबसे बारीक तथा छोटे नम्बर का धागा सबसे मोटा होता है।

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) कैंची कितने प्रकार की होती है।

.....

(2) दो कैंचियों के नाम लिखिए।

.....

(3) छिद्रक का प्रयोग क्यों करते हैं?

.....

(4) मशीन की सुईयाँ कितने प्रकार की होती हैं?

.....

(5) उधेड़क का प्रयोग किसलिए करते हैं?

.....

II. खाली स्थान भरिए :

1. साधारण कैंची में दोनों ब्लेड _____ के होते हैं।
2. बड़ी कैंची का नीचे का ब्लेड सीधा व ऊपर का ब्लेड _____ का होता है।
3. सिलाई की चपटी टोपी वाली सुई _____ मशीनों के प्रयोग में लाई जाती है।
4. थिम्बल सुई से काम करते समय उंगलियों को _____ रखता है।
5. लट्ठा, पापलेन आदि कपड़ा सीने को _____ नम्बर की सुई काम में लाई जाती है।

उत्तरमाला

देखें हमने क्या सीखा

6.1

(1) काज बनाने
(2) होल मेकर या पोकर
(3) तारे रोकने
(4) 10 इंच से 14", 6, 7
(5) धाग काटने, छोटी कैची।

6.2

1 सही
2 सही
3 सही
4 गलत
5 सही

अभ्यास उत्तरमाला

I.

1. पाँच प्रकार की
2. (a) बड़ी कैंची
   (b) साधारण कैंची
   (c) ट्रिमिंग कैंची
   (d) कटावदार कैंची
   (e) काज वाली कैंची (कोई दो)
3. कपड़े में छेद करने के लिए छिद्रक का प्रयोग करते हैं।
4. मशीन की सुईयां दो प्रकार की होती हैं।
5. कपड़े से सिलाई उधेड़ने के लिए उधेड़क का प्रयोग करते हैं।

II. (1) बराबर (2) कोण (3) साधारण (4) सुरक्षित (5) 16

पाठ 7

बुनियादी टाँके

इस पाठ से हम सीखेंगे

- टाँके कितनी तरह के होते हैं? इनकी क्या पहचान है? इसको कैसे इस्तेमाल करते हैं?
- वस्त्रों को बनाने तथा सजाने मे इनका प्रयोग।
- टाँके बनाने का तरीका।
- घिसे तथा फटे कपडों को रफू करना तथा पैबन्द लगा कर मरम्मत करना।

कपड़ों की सिलाई के बाद कपड़ों में टाँकें लगाने का काम किया जाता है। ये टाँकें अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग तरह से इस्तेमाल होते हैं। हुक व आई में टाँके लगाने का काम। कपड़ों में बटन लगाने का काम। कभी-कभी कपड़े थोड़ा फट जाते हैं या कट जाते हैं तो उनमें रफू करने का काम। कपड़ा अधिक फट जाय तो उसमें पैबन्द लगाने का काम। पुराने कपड़े जैसे कमीज, पैंट, पुरानी साड़ी, कुर्ता, रजाई का खोल का सदुपयोग करना। आइए, इस पाठ में हम जानें कि टाँकों द्वारा हम कपड़ों को कैसे सही तथा सुन्दर बना सकते हैं।

7.1 टाँकों का अर्थ

सुई में धागा डालकर कपड़े की तह में से कपड़े से ऊँचा-नीचे करके धागे को निकालने से धागे का जो रूप आता है उसे टाँका कहते हैं।

7.1.1 टाँको की आवश्यकता

1. कपड़े के दो टुकडों को जोडने के लिए।
2. अच्छी सफाई व अन्तिम रूप देने के लिए।
3. अच्छा आकार देने के लिए।
4. कपड़ों को संभालने के लिए।
5. कपड़ों को सुन्दर व आकर्षक बनाने के लिए।

7.2 टाँके के प्रकार, प्रयोग व बनाने की विधि

टाँके दो प्रकार के होते है:

(क) स्थाई टाँके : यह टाँके स्थाई रूप से लगाए जाते है। अर्थात वस्त्र तैयार करने के बाद इन्हे खोला या निकाला नही जाता।

(ख) अस्थाई टाँके : यह वो टाँके हैं जो पक्की सिलाई करने के बाद खोल दिये जाते है।

7.2.1 स्थाई टाँके

(i) रजाई का टाँका (क्विल्टिंग)

कपड़े के दो या दो से अधिक तह को एक साथ जमाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। इस टाँके में सुई को हर बार आड़ी दिशा में से निकालकर बनाया

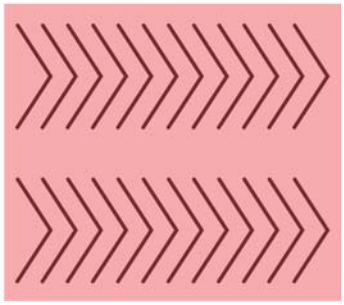

जाता है। इस टाँके को कपड़ों के उल्टी तरफ बनाया जाता है जिससे सीधा तह पर केवल-मात्र बिन्दु-बिन्दु नजर आता है। धागा उल्टी तरफ तिरछा-तिरछा नजर आता है। इस टाँके के द्वारा कोट के लैपेल के अन्दर की तह जमायी जाती है। यह टाँका हाथ से व विशेष क्विल्टिंग-मशीन से बनाया जा सकता है।

(ii) बखिया

हाथ का बखिया

यह दो कपड़ों को जोड़ने के लिए किया जाता है। पहले यह हाथ से तथा अब मशीन से बनाया जाता है। इसे बनाने के लिए सुई में धागा डालकर कपड़े में से सुई निकालते है। एक टाँका लेने के बाद फिर पीछे से दोबारा टाँका लिया जाता है। इस विधि से बनाए टाँके को बखिया कहते हैं।

(iii) चाम्पे का टाँका

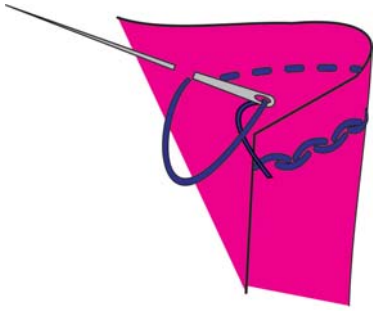

चाम्पे का टँका (फाईन स्टिच)

इसे फाईन स्टिच भी कहते हैं। यह टाँका करीब-करीब बखिये के तरह से बनाया जाता है। इसमें केवल मात्र यह अन्तर है कि इसमें एक बार सुई कपड़े से निकालने के बाद दो या तीन (कपड़े) का तार पीछे लेकर सुई दुबारा कपड़े के अन्दर डाली जाती है। इसमें सीधी तरफ में बिन्दु व उलटी तरफ में धागा नजर आता है।

(iv) तुरपाई का टाँका

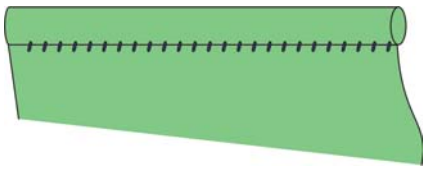

यह टाँका अकसर वस्त्र में मोड़ने (टर्निंग) को पक्का करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। यह नीचे के कपड़े की एक तार और ऊपर के कपड़े की दो तारें पकड़कर किया जाता है।

(v) काज का टाँका

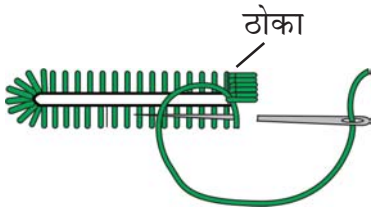

काज का टाँका

इस टाँके द्वारा वस्त्र में बटन होल, आई लेट तथा सजावट की जाती है। वस्त्र में कटे हुए काज के स्थान

पर किनारे से आधा प्वाईट अन्दर में से सुई निकालकर सुई के ऊपर से धागे को फेरा डालकर बनाया जाता है। यह प्रक्रिया बार-बार करके कटे हुए काज के किनारे को एक सिरे से दूसरे सिरे तक पक्का किया जाता है। अन्त में ठोका बनाया जाता है।

(vi) हुक और आई

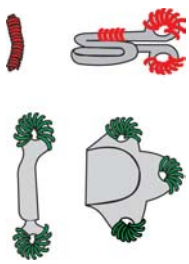

वस्त्र में रखे खुले भाग को बंद करने के लिए हुक और आई बनाई जाती है। ब्लाऊज और पैंट में हुक का प्रयोग होता है किन्तु दोनों हुक भिन्न होते है। ब्लाऊज के हुक में दो छेद होते है और उसकी आई धागे की बनाई जाती है। पैंट के हुक में तीन छेद होते हैं। यह बटन होल स्टिच से लगाए जाते है।

7.2.2 बटन लगाना

कपड़ों में लगाए जाने वाले बटन कई तरह के होते हैं:

क) **टिच बटन :** यह बच्चों के कपड़ों में लगाये जाते हैं।

ख) **काज बटन :** ये बटन अधिकतर पुरूषों की पोशाक में लगाते हैं।

ग) **हुक और आई :** वस्त्र के खुले भाग को बंद करने के लिए हुक और आई लगाते हैं। जैसे ब्लाउज, चोली आदि में हुक और आई बनाए जाते हैं।

घ) **फैन्सी बटन :** यह कपड़ा लगाकर हाथ से भी बनाये जा सकते हैं और बने हुए सीप, लकड़ी, प्लास्टिक के विभिन्न प्रकार के बटन भी मिलते है। इन बटनों के द्वारा कपड़े को आकर्षक व सुन्दर बनाया जा सकता है।

ड.) **कोट के बटन:** ये प्लास्टिक व धातु के बने होते है। कोट के बटन में चार सुराख होते है। इन में सुई डालकर बटन लगाते है। कोट के बटन लगाते समय दो बातों का ध्यान रखना चाहिए:

(i) बटन के काज की लम्बाई इतनी हो कि बटन आसानी से डाला जा सके।

(ii) बटन इतना ही ऊँचा हो कि वह कोट के ऊपरी सतह पर बिना खिंचाव के समा सके।

देखें आपने क्या सीखा 7.1

खाली स्थान भरिये।

(1) कपडे के खुले भाग को जोड़ने के लिए _____ लगाते है।

(2) अस्थाई टाँको को वस्त्र सिलने के बाद _____ दिया जाता है।

(3) वस्त्र के दो टुकडों के जोडने के लिए _____ का प्रयोग किया जाता है।

(4) कपड़े के दो या अधिक तह को जमाने के लिए _____ का टाँका बनाया जाता है।

(5) तुरपाई का टाँका अक्सर वस्त्र में _____ को पक्का करने के लिए किया जाता है।

7.2.3 अस्थाई टाँकें

(i) कच्चा टाँका

इसे बेस्टिंग स्टिच भी कहते हैं। यह टाँका प्रत्येक कपड़ा सिलते समय प्रयोग किया जाता है। यह टाँका की लम्बाई सीधी ओर से अधिक व उल्टी ओर से कम होनी चाहिए। रेशमी आदि कपड़ों को काबू में करने के लिए इसका प्रयोग होता है। कच्चा टाँका दो प्रकार के होते हैं :

(1) एक समान कच्चा, इसमें टाँका एकसमान दूरी पर बनाया जाता है।

(2) असमान कच्चा, इसमें एक लम्बा व एक छोटा टाँका लिया जाता है।

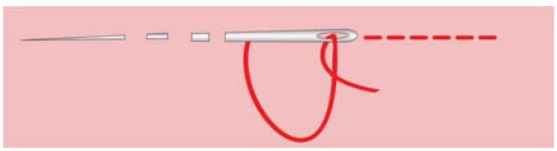

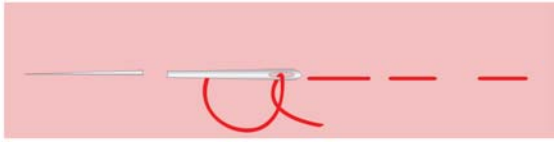

(ii) टेढ़ा कच्चा

जहां दो कच्चे एक साथ करने की आवश्कता होती है वहाँ पर इसका प्रयोग होता है। इससे कार्य शीघ्र होता है। यह टाँका कपड़े की तह को इन्टर लाइनिंग के साथ मजबूती से पकड़कर रखना हो, चिरा हुआ सीम का किनारा पकड़कर रखना आदि स्थानों पर प्रयोग किया जाता है। यह टाँका, सुई को कपड़े में से तिरछी दिशा में निकालकर बनाया जाता है।

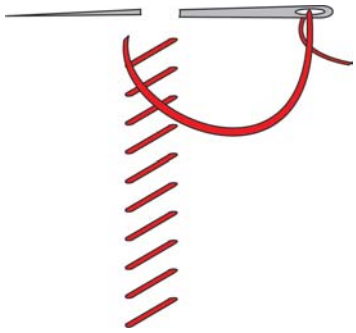

टेढ़ा कच्चा टाँका

(iii) परसूज का टाँका

इसे रनिंग स्टिच भी कहते हैं। यह एक प्रकार का कच्चा टाँका ही है। इसमें छोटे-छोटे बराबर टाँके लिये जाते हैं। इसमें धागा ऊपर व नीचे बराबर-बराबर दिखाई देता है। इस टाँके द्वारा वस्त्र में चुन्नट डालना, स्मोकिंग के लिए चुन्नट बनाना तथा वस्त्र में किसी-किसी स्थान पर छोटी गोलाइयों को बनाने के लिए भी प्रयोग किया जाता है।

परसूज टाँका

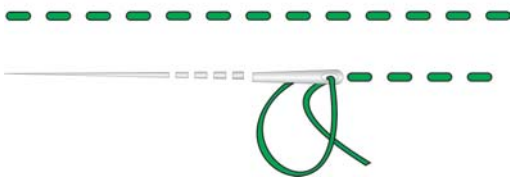

देखें आपने क्या सीखा 7.2

सही कथन पर (✓) या गलत (✗) का निशान लगाइए :-

(i) चाम्पे का टाँका काज बनाने कि लिए प्रयोग होता है। ☐

(ii) रजाई का टाँका कपड़े को दो तह को जमाने के लिए प्रयोग होता है। ☐

(iii) पैंट व ब्लाऊज के हुक एक समान होते हैं। ☐

(iv) शर्ट के कॉलर में चाम्पे के टाँके का प्रयोग किया जाता है। ☐

(v) स्मोकिंग के लिए परसूज के टाँके का प्रयोग किया जाता है। ☐

7.3 सजावटी टाँके

विभिन्न वस्त्रों को सजाने के लिए सजावटी टाँकों को प्रयोग किया जाता है।

(i) कम्बल टाँका

इसका प्रयोग अधिकतर कम्बल के किनारों को बांधने के लिए किया जाता है इसलिए इसे कम्बल टाँका कहते है। यह कई तरह से बनाया जाता है जैसे-सीधा या वी शेप में। यह सजावट के लिए कपड़ों पर भी किया जाता है। इसमें धागा सुई के आगे रखकर कपड़े में से सुई निकाली जाती है।

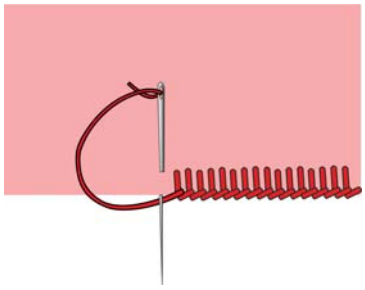

कम्बल टाँका

(ii) हेरिंग बोन टाँका

इसे बनाने के लिए दो लाइनों में टाँके लिए जाते है। टाँका एक बार एक लाइन पर तथा दूसरी बार दूसरी लाइन पर लेते हुए चलता है। इसे मच्छी टाँका भी कहते है। ऊनी वस्त्रों

की टर्निंग को काबू करने के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है। टाँके की लंबाई 2 सूत से अधिक नहीं होनी चाहिए। इसका प्रयोग बच्चों के वस्त्रों व रूमालों के किनारे को सजाने के लिए भी किया जाता है।

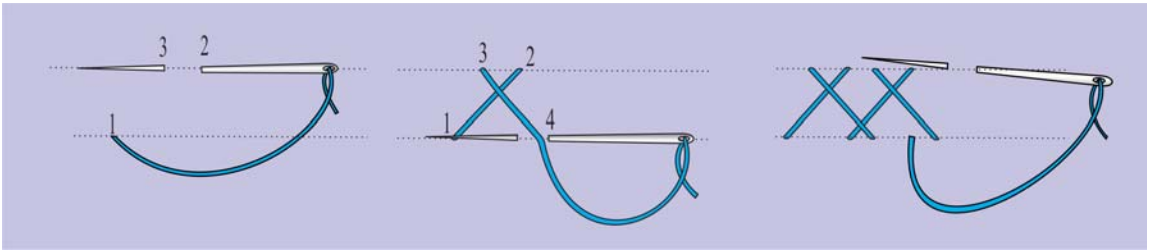

हेरिंग बोन स्टिच

(iii) मछली (फिश बोन) टाँका

यह मछलियों की हड्डियों की भाँति दिखता है। यह टाँके एक दूसरे से बंधे होते है। इनका प्रयोग मोटे कपड़ों व बच्चों के कपड़ों में घेरे आदि पर किया जाता है। धागा आगे रखते हुए यह टाँका बनाया जाता है।

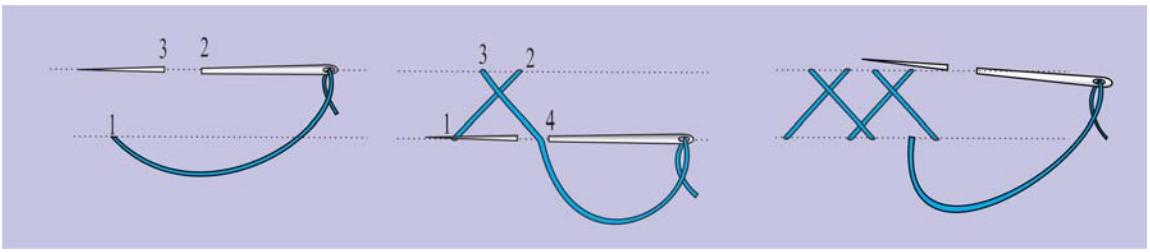

मछली (फिश बोन) टाँका

(iv) फैदर टाँका

यह टाँका पक्षियाँ के परों के भाँति दिखता है। टाँका हर बार तिरछी दिशा मे लिया जाता है जिसमें धागा कपड़े के सीधी तरफ तिरछा-तिरछा गिरता है। इसलिए इसे फैदर स्टिच कहते है। यह चादर, मेजपोश व बच्चों के वस्त्रों पर सजावट के लिए इस्तेमाल किया जाता है। यह 2, 3 लाइनों में भी बनाया जा सकता है। यह सिंगल और डबल दो तरह से बनाया जाता है। धागे को सुई के आगे रखते हुए यह टाँका बनाया जाता है।

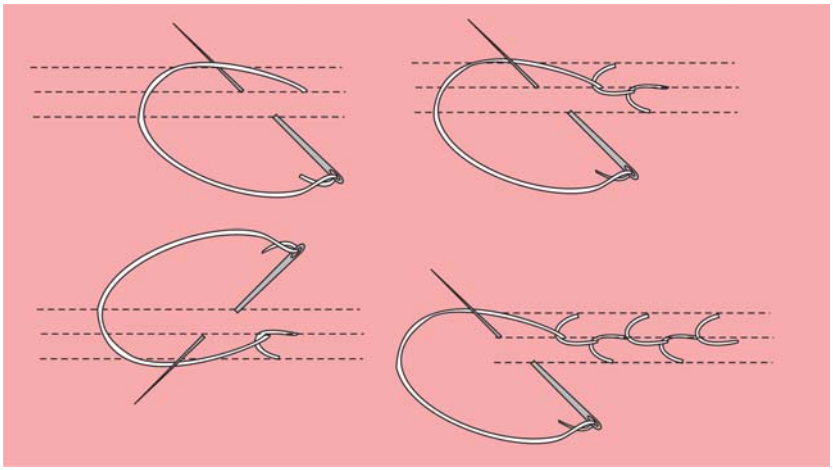

फैदर टाँका

(v) डंडी टाँका

इसे उल्टी बखिया भी कहते है। इसमें टाँका पीछे से लिया जाता है। यह डंडी के समान प्रतीत होता है, इसलिए इसे डंडी टाँका कहते है। कढ़ाई में फूलों की डंडियाँ आदि बनाने के लिए इसका प्रयोग होता है। धागे को अपनी तरफ रखते हुए बखिये के समान टाँका लेते है।

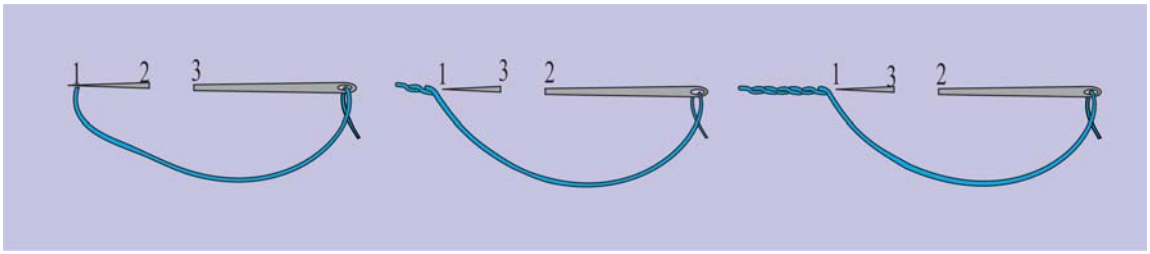

डंडी टांका

(vi) चेन टाँका

इस टाँके की बनावट सांकल (चेन) के समान होती है। यह बनाते समय सुई के गिर्द धागे का चक्र दिया जाता है। जिस स्थान से धागा निकलता है उसी स्थान से धागे को आगे रखते हुए टाँका आगे की ओर निकाला जाता है।

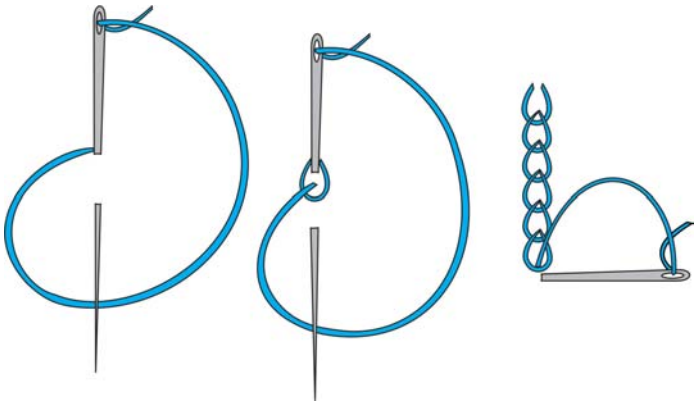

चेन टाँका

(vii) लेजी डेजी टाँका

यह चेन स्टिच की तरह होता है। यह टाँका अलग-अलग लेकर बांधा जाता है । इसमें चेन नहीं बनती है। यह भिन्न-भिन्न रंगों से बनाया जाता है। इसमें भी धागा सुई के गिर्द रखा जाता है। फूल आदि बनाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। हर टाँके को बनाने के बाद बांध दिया जाता है।

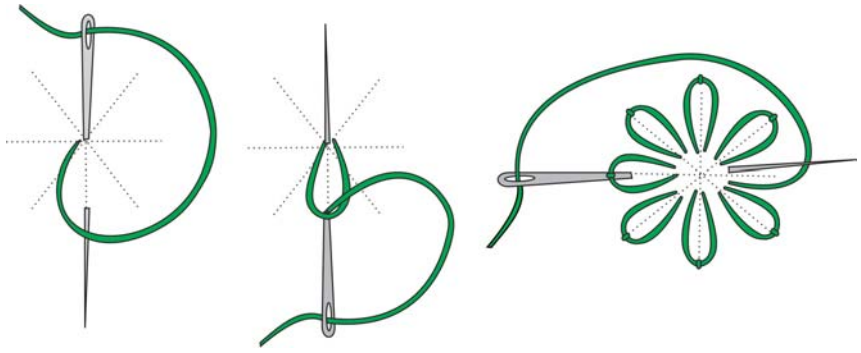

लेजी डेजी टाँका

(viii) साटन टाँका

इसका नाम साटन के कपड़े के आधार पर रखा गया है। यह कपड़े के समान समतल होता है। इसमें टाँका बिलकुल पास-पास बनाया जाता है। इन्हें बनाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि टाँके एक समान हो।

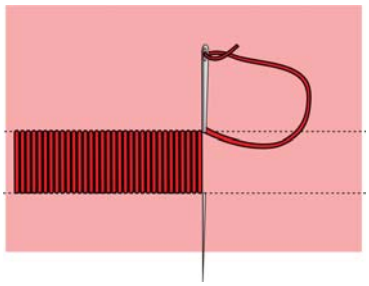

साटन टाँका

(ix) क्रॉस टाँका

इसे दसूती का टाँका भी कहते है। पहले एक टाँका तिरछा लिया जाता है फिर उसी पर एक और तिरछा टाँका बनाया जाता है। जिससे क्रॉस बनते हैं। इसका प्रयोग अधिकतर मैटी, केसमेन्ट आदि पर किया जाता है। वस्त्रों की सुन्दरता बढ़ाने व रूमालों को सजाने के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है।

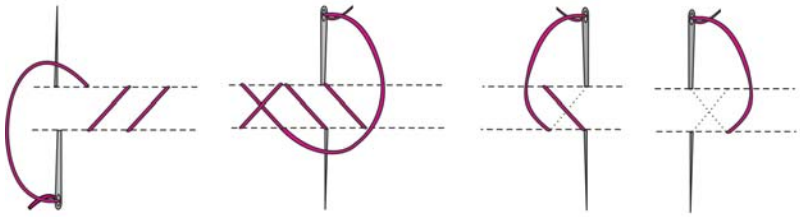

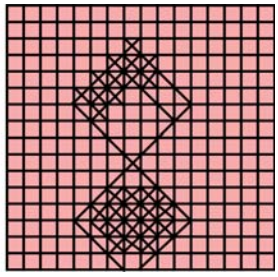

क्रॉस टाँका

क्रियाकलाप 7.1

(1) मेजपोश के किनारे मोड़ कर तुरपन कीजिए।

(2) तुरपन करने से पहले कच्चा टाँका कीजिए।

(3) तुरपन के बाद उस के किनारे हेरिंग बोन स्टिच से सजाईए।

7.4 वस्त्रों की मरम्मत

फटे कपड़ों की मरम्मत:-

अगर घर में किसी कपड़े की सिलाई उधड़ जाती है, उसे तुरंत सिल लेना चाहिए। अगर

आपने देर की तो कपड़ा ज्यादा उधड़ सकता है। अच्छा तो यही होगा कि मशीन से बखिया कर लें। परन्तु यदि घर में मशीन नहीं है तो चिंता की बात नहीं है। आप हाथ से भी बखिया कर सकते है।

7.4.1 रफू करना

छोटे छेदों को रफू करके आप उन्हें ठीक कर सकते है। रफू करने के लिए बिल्कुल मिलते-जुलते रंग का धागा लें। यदि हो सके तो उस कपड़ें के सिलाई वाले भाग से एक धागा खींच ले। फिर उसी धागे से रफू करे। रफू करने के लिए पहले लंबाई के धागे डाल ले। उसके बाद जैसे चटाई बुनते हैं, उसी तरह से एक धागा ऊपर, एक धागा नीचे रखते हुए आड़े धागे डाल लें। आपका कपड़ा रफू हो जाएगा। रफू करने से फायदा यह है कि कपड़े की मरम्मत हाथ के हाथ हो जाती है। देखने में भी पता नही लगता है।

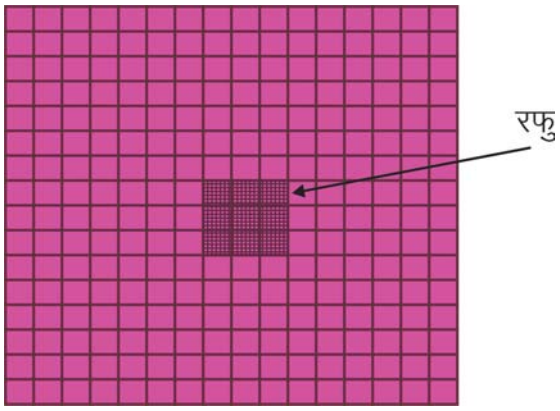

7.4.2 पैबंद लगाना

अगर कपड़ा किसी चीज़ से अटक कर सीधा कट गया हो तो क्या करेंगे? उस पर मशीन से या हाथ से सीधी सिलाई कर लीजिए।

किसी कपड़े की फटी हुई जगह पर दूसरे कपड़े का टुकड़ा लगा कर भी आप मरम्मत कर कसते है। इसे पैबंद लगाना कहते है।

आइए पैबंद लगाना सीखें: जिस आकार का छेद है उसी आकार का पैबंद काट लीजिए।

- जितना बड़ा छेद है उससे डेड़ (1.5cm) से.मी. कपड़ा चारों ओर ज्यादा लें।
- इसे चारों तरफ से थोड़ा मोड़ते हुए छेद के नीचे टांक ले।
- छेद के किनारों को भी सफाई से अंदर मोड़ कर टांक लें।
- एक बात ध्यान में जरूर रखें कि पैबंद का कपड़ा मिलता-जुलता हो।
- कपड़े में से पैबंद आड़ा ना लगाएँ यह देखने में भद्दा लगता है।

7.5 पुराने कपड़ों का सदुपयोग

आपने देखा होगा कि कभी-कभी कपड़ा कहीं से घिस जाता है पर बाकी भाग मजबूत होता है। जैसे पेंट के घुटने या पायँचे घिस जाते है। पर बाकी पैंट मजबूत रहती है। रजाई का खोल सिरे से घिस जाता है। आइए जानें कि इन वस्त्रों का सदुपयोग कैसे करें।

1. **शर्ट (कमीज़) :-** बड़ी शर्ट में से छोटे बच्चे की शर्ट बनाई जा सकती है। इसके अलावा थैला, बिछौना, रूमाल आदि बना सकते हैं।
2. **पेन्ट:-** बड़ी-घिसी पैंट में से आप बना सकते हैं-
   - छोटे बच्चों की पेंट, निक्कर
   - थैला
   - तकिए का गिलाफ।
3. **कुर्ता :** इस का सदुपयोग आप इस प्रकार कर सकते है:-
   - छोटे बच्चे की शर्ट
   - छोटे बच्चे की फ्रॉक
   - झबला
   - सुन्दर बैग
   - गद्दी का खोल

- मशीन का कवर
- बच्चे का बिछौना
- बच्चे के ओढ़ने की चादर।

4. **रजाई का खोल :** इससे आप बना सकते है:-

- तकिए का गिलाफ
- गद्दी का कवर
- बच्चे का बिछौना
- लंगोट
- बच्चे के ओढ़ने की चादर

5. **पुरानी साड़ी :** पुरानी साड़ी का सदुपयोग आप इस प्रकार कर सकते है:-

- गद्दे का खोल
- तकिए का गिलाफ
- बच्चे का बिछौना
- फ्रॉक
- झबला
- बच्चे का लहंगा
- मेजपोश
- थैला
- बच्चे के ओढ़ने की चादर

देखें आपने क्या सीखा 7.3

(1) रफू करने के लिए _____ रंग का धागा लेना चाहिए।

(2) कपड़े की फटी हुयी जगह पर दूसरे कपड़े का टुकड़ा लगाने को _____ लगाना कहते है।

(3) _____ का कपड़ा मिलता जुलता होना चाहिए।

(4) झबला आप पुरानी _____ से बना सकते है।

(5) आप पुरानी _____ व _____ से थैला बना सकते है।

आइए दोहराएं

(1) टाँकों का अर्थ व आवश्यकता।

(2) स्थाई व अस्थाई टाँकों के नाम व बनाने की विधि

स्थाई टाँके

- रजाई का टाँका (विक्लिंटग)
- बखिया
- चाम्पे का टाँका
- तुरपाई का टाँका
- काज का टाँका
- हुक और आई

अस्थाई टाँके

- कच्चा टाँका
- टेढ़ा टाँका
- परसून का टाँका

3. विभिन्न प्रकार के बटन लगाना
   - टिच बटन
   - काज बटन
   - हुक और आई
   - फैन्सी बटन
   - कोट बटन

4. सजावटी टाँके व उनके बनाने की विधि
   - कम्बल टाँका
   - हेरिंग बोन टाँका
   - किश बोन टाँका
   - फैदर टाँका
   - डंडी टाँका
   - चेन टाँका
   - लेजी डेजी टाँका
   - साटन स्टिच
   - क्रॉस स्टिच

5. वस्त्रों की मरम्मत करना
   - रफू करना
   - पैबन्द लगाना

6. पुराने कपड़ों का सदुपयोग

अभ्यास

I. सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाइए।

1. कौन-सा टाँका सीधी तह पर बिन्दु के समान नजर आता है।

(a) काज का टाँका ☐ (c) रजाई का टाँका ☐

(b) तुरपाई का टाँका ☐ (d) बखिया ☐

2. रजाई का टाँका किस दिशा में निकालकर बनाया जाता है

(a) सीधी ☐ (c) उलटी ☐

(b) आड़ी ☐ (d) तिरछा ☐

3. किस टाँके को फाइन स्टिच भी कहते हैं

(a) काज का टाँका ☐ (c) चाम्पे का टाँका ☐

(b) रजाई का टाँका ☐ (d) तुरपाई का टाँका ☐

4. ब्लाउज और चोली में कौन-से बटन लगाए जाते हैं

(a) टिच बटन ☐ (c) हुक और आई ☐

(b) काज बटन ☐ (d) फैन्सी बटन ☐

5. क्रास स्टिच का टाँका और किस नाम से जाना जाता है

(a) उलटी बखिया ☐ (c) दसूती का टाँका ☐

(b) साकल का टाँका ☐ (d) मच्छी टाँका ☐

II. खाली जगह भरिए :

1. रजाई के टाँके द्वारा कोट के _____ के अन्दर की तह जमाई जाती है।

2. तुरपाई का टाँका वस्त्र में _____ को _____ करने के लिए प्रयोग होता है।

3. पैंट के हुक में _____ छेद होते हैं।

4. बच्चों के कपड़ों में अधिकतर _____ लगाये जाते हैं।

5. कच्चा टाँका दो प्रकार का होता है _____ और _____

6. स्मोकिंग व चुन्नट बनाने के लिए हम _____ का प्रयोग करते हैं।

7. चादर, मेजपोश व बच्चों के वस्त्र पर सजावट के लिए _____ टाँका किया जाता है।

8. फटी हुई जगह पर दूसरे कपड़े का टुकड़ा लगाने को _____ लगाना कहते हैं।

III. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बॉक्स में से छाँटकर लिखिए।

हेरिंग बाने, फिश बोन, लेजी डेजी, पैबंद

1. यह टाँके एक दूसरे से बंधे होते हैं?

.....

2. रूमालों के किनारे को सजाने के लिए?

.....

3. इसे आड़ा लगाने से कपड़ा भद्दा लगता है?

.....

4. यह भिन्न-भिन्न रंगों से बनाया जाता है?

.....

IV. मिलान कीजिए

1. अस्थाई टाँके	a. से छोटी गोलाइयां बनती हैं
2. काज का टाँका	b. पास-पास बनाया जाता है
3. कोट के बटन	c. बाद में खोल दिया जाता है
4. परसूज के टाँके	d. बटन होल और आईलेट बनाने में प्रयोग होता है।
5. साटन टाँका	e. में चार सुराख होते हैं

उत्तरमाला

देखें हमने क्या सीखा

7.1

(1) बटन (2) निकाल (3) टाँकों (4) रजाई (5) मोढने

7.2

(1) × (2) ✓ (3) × (4) ✓ (5) ✓

7.3

(1) मिलते हुये (2) पैबन्द (3) पैबन्द (4) साड़ी / कुर्ता (5) पैन्ट/साड़ी

अभ्यास उत्तरमाला

I.
1. (a) रजाई का टाँका
2. (d) तिरछी
3. (c) चाम्पे का टाँका
4. (c) हुक और आई
5. (e) दसूती का टाँका

II.
1. लैपल
2. मोड, पक्का
3. तीन
4. टिच बटन
5. समान / असमान
6. परसूच
7. कम्बल
8. पैबन्द

III. 1. फिश बोन

2. हेरिंग बोन

3. पैबन्द

4. लेजी–डेजी

IV. 1. c

2. d

3. e

4. a

5. a

6. b

पाठ 8

वस्त्र निर्माण

इस पाठ से हम सीखेंगे

- वस्त्रों के निर्माण के लिए कपड़े का चुनाव करना।
- कपडे की सीधी, आड़ी व औरेव दिशा के बारे में जानना।
- लंगोट, तकिए का गिलाफ व थैला काटना व सिलना।
- लहंगा व पेटीकोट काटना व उनका सिलना।
- वस्त्रों के निर्माण से सम्बन्धित क्रियाऐं जैसे सीम, डार्ट, प्लीट्स, गैदर और झालर की पहचान व बनाना।

पुराने समय के लोग हाथ की सूई से कपड़ा सिल कर पहन लेते थे। लेकिन आजकल मशीन के द्वारा तथा कुछ काम हाथ के द्वारा सिलाई करके वस्त्र बनाए जाते। आप मशीन चलाना तथा हाथ के टाँके बनाना सीख चुके हैं। आइए अब कुछ आसानी से सिले जाने वाले वस्त्र बनाना सीखें। इस पाठ में आप आसानी से कटने और सिले जाना वाला वस्त्र बनाना सीखेंगे।

8.1 कपड़े का चयन

कपड़ा खरीदने से पहले हमें देख लेना चाहिए कि कपड़ा हम किस आयु वर्ग के व्यक्ति के लिए, किस अवसर के लिए व किस मौसम के लिए ले रहे हैं।

जैसे:-

(i) **रजाई का कवर** - सूती कपड़ा, थोड़ा मोटा बड़े अर्ज का और सफेद लेना चाहिए।

(ii) **थैला**- सूती मोटा कपड़ा और कपड़े का रंग थोड़ा गहरा हो तो अच्छा लगता है।

(iii) **तकिए का गिलाफ**- सूती कपड़ा, पापलीन, लट्ठा इत्यादि कपड़ा ही खरीदना चाहिए। (रंग व प्रिन्ट इच्छानुसार)

(iv) **पेटीकोट**- पेटीकोट बनाने के लिए हमें सूती कपड़ा ही लेना चाहिए यह लठ्ठा पापलीन इत्यादि कपड़ों का बनाया जाता है। पेटीकोट बनाने के लिए हमें लम्बाई का दुगना कपड़ा लेना चाहिए। (रंग इच्छानुसार)

(v) **झबला**- यह छोटे बच्चों का वस्त्र है। झबले के लिए हमें सूती, रूबिया व पापलीन में नर्सरी प्रिन्ट वाला कपड़ा हो तो ज्यादा अच्छा लगता है। झबले अधिकतर हल्के रंग के ही अच्छे लगते हैं।

(vi) **कच्छा**- यह लडकों व आदमियों के पहनने वाला वस्त्र है। इसे सूती, लठ्ठा, पापलीन इत्यादि कपड़ों का बनाया जाता है।

इसके लिए अगर हम हल्के रंगों का चयन करें तो ज्यादा अच्छा है।

(vii) **शमीज**- यह लड़कियों का नीचे पहनने वाला वस्त्र है। इसे बनाते समय ध्यान रखें की कपड़ा सफेद रंग का हो तथा कैम्बरीक, वायल इत्यादि सूती कपड़ा ही खरीदें।

आइए, अब सादा कपड़े बनाने के लिए काटना व सिलना सीखें।

8.2 लंगोट

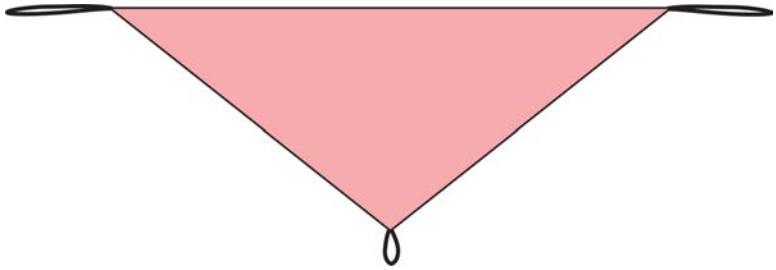

परिचय: जन्म से 6 माह तक का बच्चा पहन सकता है।

8.2.1 कपड़े का चयन

सादा मुलायम सूती कपड़ा लंगोट सिलने के लिए अच्छा रहता है।

कपड़े का माप

35 सेमी X 35 सेमी (साइड में बचे कपड़े से पट्टी बनायेंगे)।

कपड़ा काटना

1 लंगोट के लिए 30 सेमी लम्बा 30 सेमी चौ. कपड़ा काट लें।

लंगोट

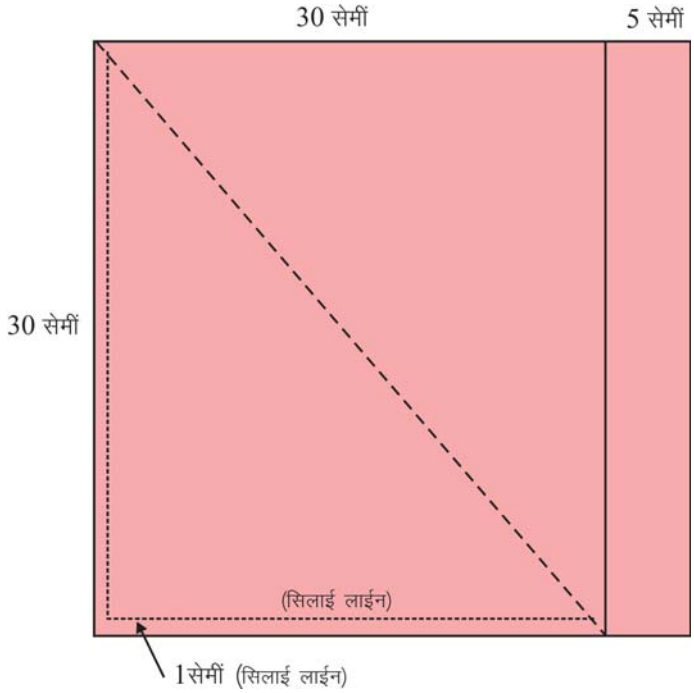

सिलाई का तरीका:

1. कपड़े को दोहरा तिकोना मोड़ लें।
2. इसे दोनों तरफ से सिलकर सीधा कर लें।
3. पट्टी काट कर सिलकर तैयार कर लें।
4. तैयार पट्टी को दोनों तरफ जोड़ लें।
5. तिकोने वाले हिस्से पर बनायी हुई पट्टी से एक लूप बना कर लगाये।

8.2.2 सीधा, आडा, उरेब कपड़े की पहचान

ताना–कपडे में प्रयोग किया जाने वाला खड़ा धागा। **बाना**–कपडे में प्रयोग किये जाने वाला पड़ा धागा। **किनारा (कन्नी)**–अधिकतम नजदीक धागों से बुना हुआ कपड़े का किनारा।

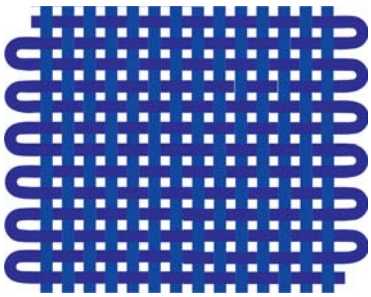

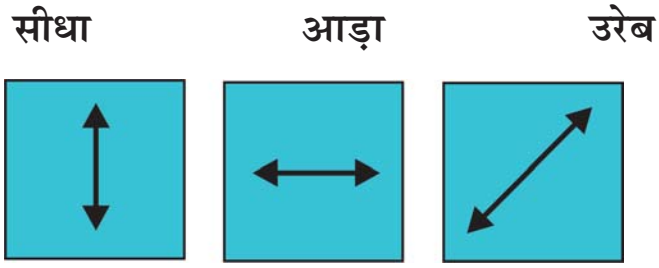

1. **सीधा** - दिये चित्र के अनुसार कपड़ों को ताने की लम्बाई के अनुसार काटा जाय तो कपड़ा सीधा कहलाता है।
2. **आड़ा**- जब कपड़े की लम्बाई बाने की दिशा में रखी जाती है तो वस्त्र आड़ा कहलाता है।
3. **उरेब**- हम एक चोकौर कपड़ा लें तथा उसके आमने सामने के कोने को जोड़ते

हुए एक 90 डिगरी की रेखा खीचेंगे, यह रेखा आडी रेखा कहलाती है। इस दिशा में काटा गया कपड़ा लचीला होता है। उरेब कपड़े से गले की पट्टी भी काटी जाती है, जो गले की गोलाई में आसानी से फिट हो जाती है।

सादी सिलाई बनाने की विधि

कपडे के दो किनारों को जोड़ कर जो 1 से.मी. की दूरी पर सिलाई लगाई जाती है उसे सादी सिलाई (प्लेन सीम) कहते है।

पट्टी सिलना व लगाने की विधि

सीधी या आडी तरफ से एक 3 से.मी. चौडी पट्टी काटकर और फिर उसके दोनों तरफ से किनारे मोड़कर पतली तह करेगें। तह पर सादी सिलाई का प्रयोग कर पट्टी बन कर तैयार हो जाती है।

इस पट्टी के 10 या 12 से.मी. के तीन हिस्से कर लेते है। दोनो कोने पर एक-एक पट्टी जोड़ देते हैं। बीच वाले कोने पर पट्टी को दोहरा कर लूप बना कर हाथ की सिलाई से या मशीन की सिलाई से जोड़ देते है।

8.3 तकिये का गिलाफ

घरों में तकिये के ऊपर चढ़ाया जाता है।

कपड़े का चयन

पॉपलीन, खद्दर या लठ्ठा। ये किसी पुराने कपड़े में से बनाया जा सकता है।

कपड़े का माप

चौड़ाई - 44 सेमी + 5 सेमी (सिलाई के लिये) = 49 से.मी. (टुकड़ा नं. 1)

लम्बाई - 66 सेमी × 2 सेमी + 10 सेमी (सिलाई के लिये)

= 132 + 10 सेमी = 142 से.मी. (टुकड़ा नं. 2)

इसके दो टुकड़े काट लें।

सिलने की विधि

1. टुकड़ा नं. 1 के सिरे पर चौड़ी पट्टी बनाकर उस पर बटन या वेलक्रो लगाइए।
2. टुकड़ा नं. 2 के एक सिरे पर सिलाई कीजिये।
3. दोनों को एक के ऊपर रख कर तीन तरफ सिलाई लगाइए।
4. सीधा करके फिर सीधी तरफ से चारों तरफ 1½c से.मी. किनारा छोड़कर सिलाई लगाएं।
5. टुकड़ा नं. 2 के सिरे पर बटन का काज या वेलक्रो का दूसरा भाग लगाएं।

तकिये का गिलाफ

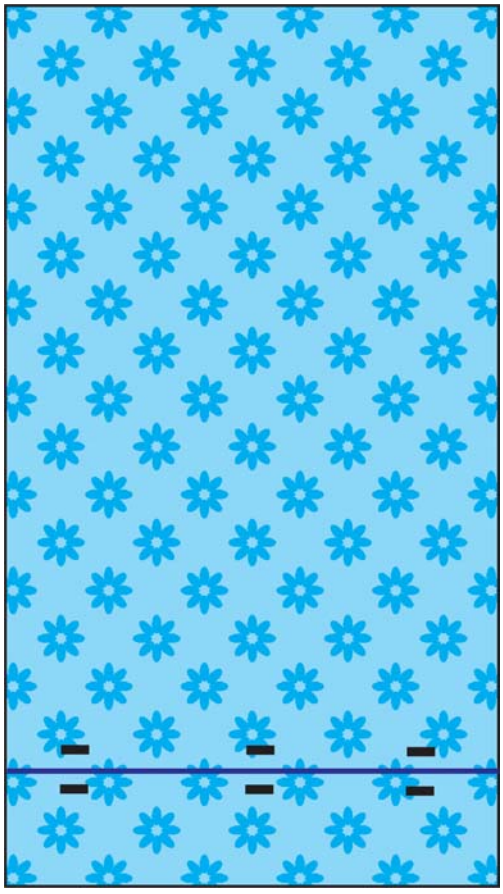

बटन या वेलक्रो

ऊपरी सिलाई (Top seam)

1. ऊपरी सिलाई लगाने की विधि : पहले तकिये के गिलाफ को प्लेन सिलाई के द्वारा सिल लेते हैं। सिलने के बाद तकिये के गिलाफ को सीधा कर देते हैं। फिर सीधी तरफ से चारों तरफ 1½ से.मी. किनारा छोड कर सिलाई लगा देते हैं। इसे उपरी सिलाई कहते है।

2. पाइपिन व गोट लगाने की विधि : यह एक उरेब कपड़े की पट्टी होती है। अगर पट्टी पतली है तो पाइपिन कहलाती है। लेकिन गोट बनाने के लिये उरेब कपड़े की चौडी पट्टी यानी 8 से.मी. से 10 से.मी. ली जाती है।

पट्टी को दोहरा कर प्रेस कर ले। उसके बाद तकिये के गिलाफ के दोनो परतों को बीच में रख कर सिलाई लगा दे। अब गोट को मोड़ कर बीच में रख कर सिलाई लगा दें। अब मोड़कर सफाई से कोने तैयार करें।

3. झालर लगाना व सिलने की विधि : तकिये के गिलाफ की सुन्दरता बढ़ाने के लिये झालर का प्रयोग करते हैं। जितनी लम्बाई की झालर लगानी हो उसका 2 या तीन गुणा लम्बाई की पट्टी ले लें। तथा जितनी चौडी झालर लगानी हो उतना ही नाप कर आड़े कपड़े से झालर की पट्टी काट लेते हैं। सब पट्टी को लम्बाई में जोड़ कर एक लम्बी पट्टी तैयार कर लेते हैं। एक तरफ से सिलाई करके किनारा पक्का कर दिया जाता है तथा दुसरी तरफ से कच्चा करके धागा खींच कर (गैदर) चुन्नट बना लिये जाते हैं।

गैदर वाले हिस्से को तकिये के गिलाफ के चारो ओर जोड़ दिया जाता है।

4. काज बटन बनाने की विधि : काज बनाने के लिये जहाँ बटन लगाना हो वहाँ काज काटा जाता है। उसे सुई और धागे से (बटन होल स्टिच) काज टांके के द्वारा तैयार किया जाता है। ये काज स्टिच काज के कटे किनारे को एक दुसरे सिरे तक पक्का कर देते है। पट्टी के दूसरे सिरे पर बटन लगाया जाता है।

5. वेलक्रो चिपकाना या सिलने की विधि : यह एक ऐसी पट्टी होती है जिसमें दोनों तरफ के रेशे उठे-उठे होते है तथा दोनों को पास लाने पर एक दूसरे से चिपक जाते हैं। इसे वेलक्रो टेप कहते हैं। इसका छोटा टुकड़ा काट कर प्रयोग करते हैं। यह दोनों टुकड़े आमने सामने सिल देते हैं। यह बटन और काज के स्थान पर लगाया जाता है।

8.4 थैला

परिचयः- घरों में सामान लाने के लिए काम में लाया जाता है।

कपड़े का चयन

पॉपलीन, खद्दर, लट्ठा या किसी पुराने कपड़े में से बनाया जा सकता है।

कपड़े का माप

लम्बाई - 30 सेमी × 2 + 5 सेमी (मोड़ने के लिये)
= 60 सेमी + 5 सेमी = 65 सेमी
चौड़ाई - 25 सेमी + 5 सेमी (सिलने के लिये) = 30 सेमी

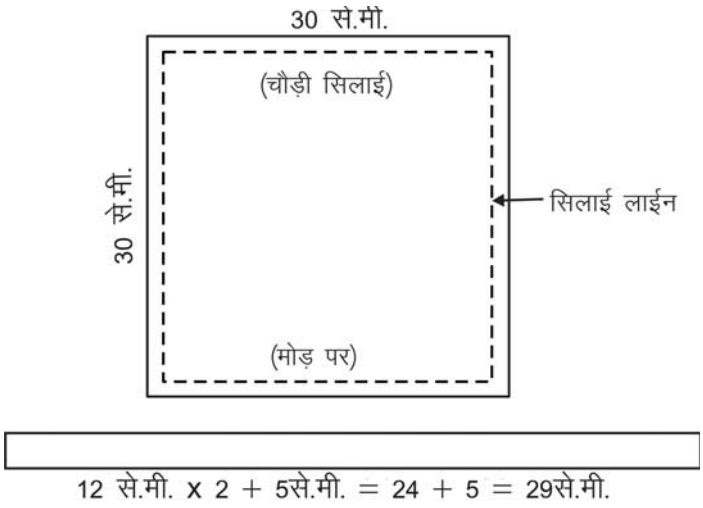

तैयार थैला

कपड़े काटने की विधि

1. 60 सेमी x 30 सेमी नाप का कपड़ा काट लेंगे।
2. 29 सेमी x 4 सेमी का एक और टुकड़ा पट्टी के लिये काटिए।

सिलने की विधि

1. कपड़े को लम्बाई से मोड़े।
2. दो तरफ सिलाई लगाएं और एक तरफ खुला रहने दें।
3. खुली जगह से किनारे मोड़ कर सिलाई लगा दें।
4. थैले को लटकाने के लिये कपड़े की पट्टी सिल कर थैले के दोनों तरफ सिलें। पट्टी सिलने की विधि लंगोट में दी गई है।

8.5 लहंगा

परिचय : यह स्त्रियों के पहनने का वस्त्र है।

कपड़े का चयन :

लट्ठा, पॉपलीन, खद्दर, साटन तथा रेशमी कपड़े और पुरानी साड़ी का प्रयोग किया जाता है।

कपड़े का नाप :

लहंगे का नाप

लम्बाई – 110 से.मी.

चौड़ाई (घेर) – 90 से.मी. (कमर) x 2 या

90 से.मी. (कमर) x 3 (इच्छानुसार)

= 180 से.मी. या 280 से.मी.

बेल्ट (नेफा) के लिये :

लम्बाई – 90 से.मी. (कमर) + 10 से.मी. (ढील)

= 100 से.मी.

चौड़ाई = 4 से.मी.

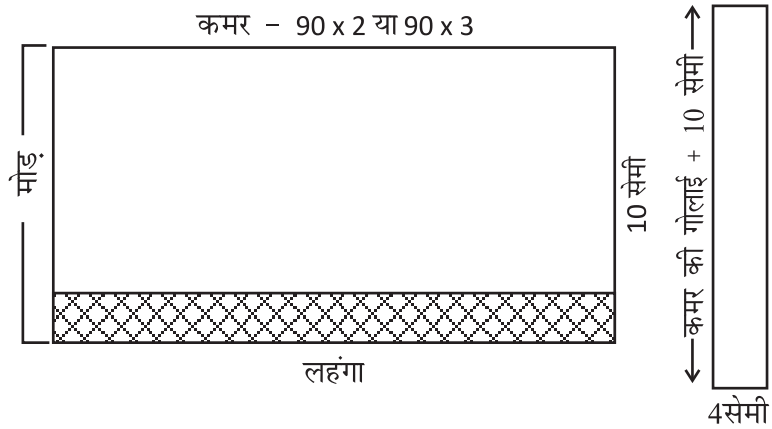

कपड़ा काटने की विधि :

1. बैल्ट के लिए कपड़ा काटना।
2. लहंगे का कपड़ा काटना।

I. गैदर बनाने की विधि :

1. मशीन में बड़ी बखिया या हाथ से छोटे-छोटे कच्चे टाँके (परसूच का टाँका) द्वारा

कपड़े की अधिक मात्रा को चुन्नट डाल कर कम करने को गैदर कहते हैं।

2. गैदर वस्त्र में घेरा बढ़ाने का कार्य करता है।
3. गैदर के द्वारा लहंगे के कपड़े को कमर की बैल्ट के बराबर कर लिया जाता है और लहंगे को बैल्ट के साथ जोड़ दिया जाता है।
4. लम्बाई के अनुसार नीचे से मोड़ कर सिलाई लगा दी जाती है।

सजावट : लहंगे के नीचे लैस या सुन्दर किनारी आदि का प्रयोग भी कर सकते हैं।

II. प्लीट्स बनाने की विधि :

1. वस्त्र में रखे गये अधिक कपड़े व दबाव डाल कर आवश्यकतानुसार जब कम किया जाता है तो उसे प्लीट्स कहते हैं।
2. प्लीट्स का प्रयोग वस्त्र में सजावट व घेरा बढ़ाने देने के लिए किया जाता है।
3. प्लीट बनाते समय 2.5 से.मी. से 4 से.मी. तक का कपड़ा उठाकर एक ही सख में रखा जाता है।।

8.6 पेटीकोट

परिचय : यह स्त्रियों के पहनने का वस्त्र है। यह साड़ी के नीचे पहनते हैं। यह कई प्रकार से बनाया जाता है।

कपड़े का चयन :

लट्ठा, पॉपलीन, खद्दर और सूती कपड़ा काम में लेते हैं।

8.6.2 कपड़े का नाप :

पेटीकोट का नाप

लम्बाई - 102 से.मी.

कमर - 90 से.मी.

नीचे का घेरा - 80 से.मी.

बैल्ट :

लम्बाई – 90 से.मी. (कमर) + 10 से.मी. = 100 से.मी.

चौड़ाई – 4 से.मी.

खाका बनाने की विधि :

खाका संलग्न चित्र के अनुसार बनाएं:–

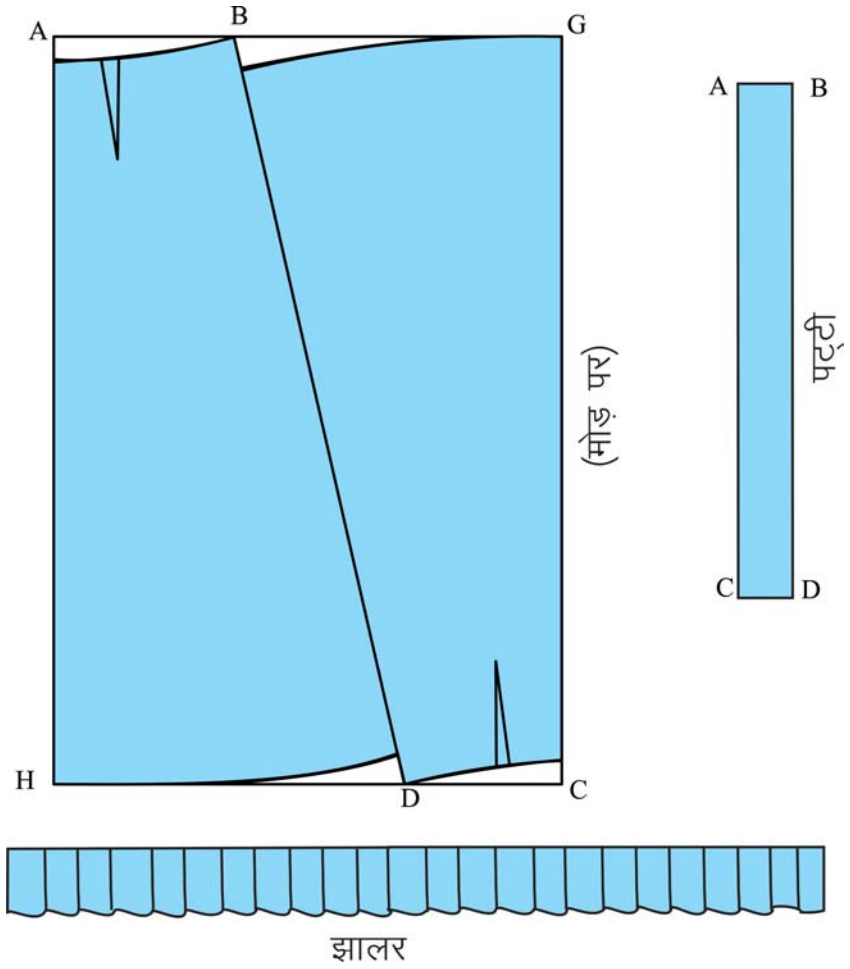

कपड़ा काटने का तरीका :

1. खाके के अनुसार कपड़े को 6 टुकड़ों में काट लीजिये।

2. यह चार कली का पेटिकोट है तो 1/4, (2.5) नीचे गोलाई के लिए निशान लगाएं।

सिलाई का तरीका:

1. अब कपड़े के 4 कटे हुए टुकड़े हैं।

2. 1 बड़े पीस के दोनों तरफ दो छोटे पीस सीधे जोड़ लें। (सिलाई करते समय एक तिरछा और एक सीधा पीस जोड़ दें)

3. सारे पीस जोड़ने के बाद बैल्ट जोड़ लें।

4. लम्बाई के अनुसार बचे कपड़े को मोड़ लें।

झालर बनाना व लगाने की विधि :

इसके लिए दो या तीन इंच चौड़ी पट्टी काटी जाती है। एक तरफ से सिलाई करके पक्का कर दिया जाता है। दूसरी तरफ से बड़ी सिलाई करने के बाद धागा खीच कर गैदर या चुन्नट वाले हिस्से को पेटिकोट के निचले हिस्से में सिल दिया जाता है। झालर को सीधा कर देते है फिर ऊपर से ऊपरी सिलाई लगा कर पक्का कर देते है।

डार्ट का प्रयोग व बनााने की विधि

कपड़े का आकार शरीर के अनुकूल तैयार करने के लिए डार्ट का प्रयोग करते हैं। डार्ट दो प्रकार की होती है।

1. एक नोक वाली डार्ट

2. दो नोक वाली डार्ट

एक नोक वाली डार्ट एक तरफ से चौड़ी तथा दूसरी तरफ से नुकीली होती है। ब्लाउज, फ्रॉक, पैंट, पेटीकोट की कमर में यह डार्ट डाली जाती है।

दो नोक वाली डार्ट बीच में से चौड़ी तथा दोनों तरफ से नोकदार होती है। पंजाबी कमीज,

लेडीज शर्ट, कोट आदि में इसका प्रयोग होता है।

नेफा बनाने की विधि :

पेटीकोट में नेफे के लिए कपडे की पट्टी अलग से काटी जाती है। यह पट्टी 10 सेमी या 12 सेमी चौडी तथा कमर से कुछ ढीली होती है। पट्टी की लम्बाई इतनी हो जो पेटीकोट में डार्ट लगाने के बाद पूरी गोलाई पर पूरी हो सके। पहले पट्टी के दोनो खुले किनारों को सिलकर पक्का कर ले। अब पट्टी की लम्बाई वाले हिस्से को पेटीकोट के साथ एक तरफ से सिले। बाद में पट्टी की दोहरी तह बनाकर दूसरी तह को सिलाई के ऊपर रख कर सिल दे।

(नेफे की पट्टी लगाते समय ध्यान रहे कि उसमें झोल या टेढ़ापन न आए)

अभ्यास

I. सही (✓) व गलत (✗) के निशान लगाये।

1. काज बनाने के लिये कच्चे टांके का प्रयोग किया जाता है। ☐
2. बाने की दिशा मे काटा गया कपड़ा आड़ा कहलाता है। ☐
3. लहंगे के लिए केवल सूती कपड़ा ही लेना चाहिए। ☐
4. प्लीट्स का प्रयोग बच्चों की स्कर्ट में भी किया जाता है। ☐
5. तकिये का मुंह बन्द करने के लिए वेलक्रो टेप का प्रयोग भी करते हैं। ☐

II. प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. लंगोट के लिए कितना कपड़ा लेंगे?

.....

2. डार्ट कितने प्रकार की होती है? उनके नाम भी लिखिए।

.....

III. रिक्त स्थान भरो-

1. पाइपिन के लिये _____ कपड़ा काटा जाता है।
2. गैदर का प्रयोग वस्त्र में _____ पैदा करता है।
3. छोटे बच्चों के वस्त्र बनाने के लिये _____ कपड़ों का प्रयोग करना चाहिए।
4. झालर का प्रयोग वस्त्र में _____ बढ़ाने के लिए किया जाता है।
5. लहंगे में नीचे लैस गोटा व सुन्दर _____ का प्रयोग भी कर सकते है।

IV. एक शब्द में उत्तर दें :

(i) पेटीकोट में ऊपर लगायी जाने वाली पट्टी को कहते हैं।

(ii) यह डार्ट बीच से चौड़ी तथा दोनों तरफ नोकदार होती है।

(iii) वस्त्र में भरावट/फुलनेस प्रदान करता है।

(iv) इसे टॉप सीम भी कहते हैं।

(v) जब कपड़े को लम्बाई (बाने) की दिशा में रखी जाती है उसे कहते हैं।

(vi) अधिकतम नजदीक धागों से बुना हुआ कपड़े का किनारा छोटे बच्चों के परिधानों के लिए सबसे उपयुक्त कपड़ा।

V. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

(i) जन्म से 6 माह तक का बच्चा _____ पहनता है।

(ii) झबले के लिए _____ प्रिन्ट अच्छे रहते हैं।

(iii) पेटीकोट बनाने के लिए लम्बाई का _____ कपड़ा लिया जाता है।

(iv) शमीज के लिए _____ कपड़ा अच्छा रहता है।

(v) कपड़े में प्रयोग किये जाने वाले _____ धागे को _____ कहते हैं।

(vi) गले की पट्टी के लिए कपड़ा हमेशा _____ काटना चाहिए।

(vii) कोट बनाने के लिए औरेब कपड़े की _____ पट्टी काटी जाती है।

(viii) तकिये के गिलाफ की सुन्दरता बढ़ाने के लिए _____ का प्रयोग करते हैं।

(ix) लहंगे की सजावट के लिए इसके घेरे पर _____ का प्रयोग किया जा सकता है।

(x) झालर बनाने के लिए _____ से _____ इंच की पट्टी काटते हैं।

VI. सही (✓) व गलत (✗) का निशान लगाइये

(i) थैले के लिए हमेशा मोटे कपड़े का प्रयोग करना चाहिए। ( )

(ii) रजाई के कपड़े के लिए छोटे अर्ज का कपड़ा लेना चाहिए। ( )

(iii) बच्चों के लिए गहरे रंग का कपड़ा अच्छा रहता है। ( )

(iv) शमीज के लिए कैम्बरी का वॉयल का कपड़ा प्रयोग करना चाहिए। ( )

(v) कपड़े में प्रयोग किया जाने वाला खड़ा धागा बाना कहलाता है। ( )

(vi) चौकोर कपड़े को 90° पर तिरछा रखकर औरेब पट्टी काटी जाती है। ( )

(vii) जब कपड़े की लम्बाई ताने की दिशा में रखी जाती है तो वस्त्र सीधा कहलाता है। ( )

(viii) कच्छा पुरुषों द्वारा पहने जाने वाला वस्त्र है। ( )

(ix) काज बनाने के लिए (काज) बटन होल स्टिच का प्रयोग करते हैं। ( )

(x) लहंगा बनाने के लिए हम पुरानी साड़ी का प्रयोग भी कर सकते हैं। ( )

VII. सही मिलान कीजिए

ए	बी
(i) चौकोर कपड़े को दोहरा तिकोना मोड़कर बनाया जाने वाला वस्त्र	a. दो गुना या तीन गुना
(ii) कपड़े के दो किनारों को जोड़कर 1 सेमी. दूरी पर लगाई जाने वाली सिलाई	b. वेल्क्रो
(iii) जिसमें दोनों तरफ के रेशे उठे-उठे रहते हैं	c. लंगोट
(iv) झालर की पट्टी की लंबाई होती है	d. गोट या झालर
(v) पंजाबी कमीज/लेडीज शर्ट में प्रयोग की जाने वाली डार्ट	e. सादा सिलाई
(vi) तकिये के गिलाफ में सजावट के लिए प्रयोग किया जाता है	f. दो नोक वाली

उत्तरमाला

देखें हमने क्या सीखा

1 ×
2 ✓
3 ×
4 ✓
5 ✓

2. लंगोट के लिए 35 सेमी × 35 सेमी का कपड़ा लेंगे।
3. डार्ट दो प्रकार की होती है : (i) एक नोक वाली (ii) दो नोक वाली

अभ्यास उत्तरमाला

I. 1 उरेब

2 घेरा

3 मुलायम

4 सुन्दरता

5 किनारी

II. 1. a

2. d

3. b

4. a

5. c

6. a

7. d

8. d

9. c

10. b

III. 1. नेफा

2. दो नोक वाली डार्ट

3. चुन्नट

4. ऊपरी सिलाई

5. आडा

6. किन्नारा

IV. 1. ✓

2. ✗

3. ✗

4. ✓

5. ✗

6. ✓

7. ✓

V. 1. c

2. e

3. b

4. a

5. b

6. a

क्रियाकलाप

1. दुपट्टा, साड़ी या रूमाल पर ताना, बाना व उरेब की पहचान करें।
2. पुरानी चादर का प्रयोग करके थैला व तकिए का गिलाफ बनाएं।
3. पुराने दुपट्टे या साड़ी से 1 वर्ष आयु के बच्चे के लिए झबला बनाएं।
4. पुरानी साड़ी / दुपट्टे को इस्तेमाल करके शमीज बनाएं।

पाठ 9

डिजाइन युक्तियाँ

इस पाठ से हम सीखेंगे

- गलों के प्रकार की पहचान तथा प्रयोग करना।
- आस्तीन के प्रकार की पहचान व प्रयोग करना।
- कॉलर के विभिन्न प्रकार की पहचान व प्रयोग करना।
- विभिन्न प्रकार की कमर की लम्बाई की पहचान व प्रयोग करना।
- विभिन्न प्रकार के योक की पहचान व प्रयोग करना।

जब भी हम कपड़े खरीदते हैं या सिलवाते हैं तो हम डिजाइन पर विशेष ध्यान देते हैं। आपने देखा होगा विभिन्न प्रकार के गले, आस्तीन, कॉलर योक व कमर की लम्बाई के डिजाइन के कपड़े उपलब्ध हैं। आहए इनकी पहचान करके प्रयोग करने की विधि सीखें।

आज का युग फैशन का युग है। प्रतिदिन वस्त्रों के डिजाइन बदल रहे हैं। उच्चवर्ग के ही नहीं पर आम लोगों को अच्छे डिजाइन वाले कपडे पहनने अच्छा लगता है। इस पाठ में हम इन डिजाइन युक्तियों के बारे में पढेंगे।

9.1 गले के विविध आकार

वस्त्र के गले के पास वाले आकार को गला कहते हैं। यह ग्राहक की इच्छानुसार विभिन्न आकार में बनाए जाते है।

1. गोल गला: यह चौडा व गले से मिलता हो सकता है। यह महिलाए और पुरूषों के वस्त्रों में प्रयोग किया जाता है।

छोटा गोल गला

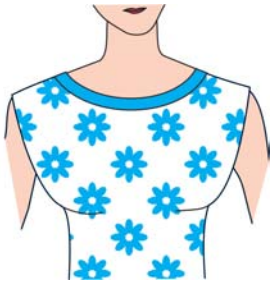

चौड़ा गोल गला

2. यू (U) गला : यह गहरा गोल होता और अंग्रेजी के अक्षर 'U' (यू) की तरह दिखता है। इसकी लम्बाई चौड़ाई से अधिक होती है।

यू गला

3. चौकोर गला: यह चौड़ा व तंग भी होता है। इस की गहराई व चौड़ाई बराबर होती है। यह कोण युक्त होता है।

चकोर गला

4. वी (V) गला: यह दिखने में अंग्रेजी के अक्षर वी (V) की तरह होता हैं यह दोनों पुरूषों व महिलाओं के वस्त्रों में प्रयोग किया जाता है।

व्ही (V) गला

5. स्वीट हार्ट: ये व्ही तथा चकोर गले को मिला कर बनता है। यह बीच में चौड़ा होता और नीचे की ओर संकरा होता है।

स्वीट हार्ट गला

6. पॉट या ग्लास गला: यह दिखने में गिलास के आकार का होता है। इस में चौकोर ऊपर से चौड़ा और नीचे से संकरा होता है।

ग्लास गला

7. की होल (key hole) गला: यह संकरा गोल गला होता है जिस के मध्य एक गोल आकार काटा जाता है। यह महिलाओं के वस्त्रो में प्रयोग किया जाता है।

की-होल गला

9.2 आस्तीनों के विभिन्न आकार: आस्तीन के मूलभूत किस्में:

आस्तीन की कुछ किस्में (बाएँ से) : *1. सादी आस्तीन, 2. स्प्रे और मोहरी पर प्लेटों की आस्तीन, 3. कंधे पर गुब्बारा और मोहरी में डाट की आस्तीन, 4. स्प्रे पर गुब्बारा और मोहरी में चुन्नट की आस्तीन, 5. पूरी लंबाई की सादी आस्तीन*

(I) सेट - इन - आस्तीन: इस प्रकार की आस्तीन अलग से काट कर कपड़े के मुड़ढे से जोडी जाती है। इस में शामिल है:

1. सादी आस्तीन
2. गुब्बारे वाली आस्तीन
3. गोलाकर (फ्लेयर्ड) आस्तीन
4. बैल (घंटी आकार) आस्तीन
5. केप आस्तीन

गुब्बारा आस्तीन (दोनों तरफ चुन्नट वाली)

(अ) सेट-इन-आस्तीन के प्रकार:

केप गोलाकार फलैड

(ब) सेट-इन-आस्तीन का प्रयोग :

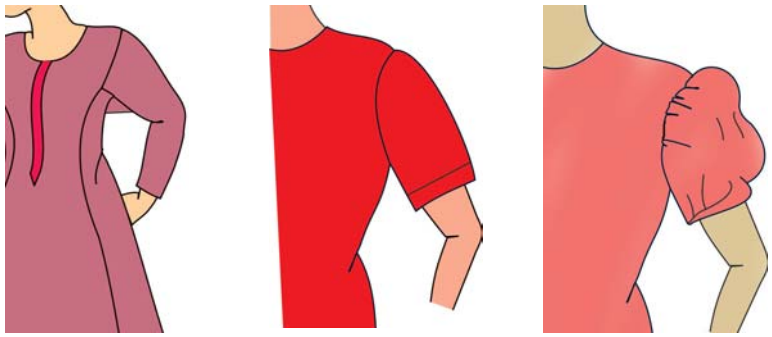

कुर्ता बुशर्ट फ्राक

(II) रेगलॉन (Raglan) आस्तीन: इस प्रकार की आस्तीन में सामने और पीठ के कंधे के पास के भाग को आस्तीन के साथ काटा जाता है। चौड़े कंधेवाली महिलाओं के लिए यह अधिक प्रयोग किया जाता है।

(III) किमोनो (Kimono) या मोग्यार आस्तीन: जब सामने और पीठ के साथ ही आस्तीन काटी जाती है, तो इसे किमोनो या मोग्यार आस्तीन कहते हैं।

मोग्यार आस्तीन

लम्बाई के अनुसार आस्तीन की किस्में:

लम्बाई के अनुसार आस्तीन तीन किस्म की हाती है।

1. आधी आस्तीन
2. पौनी आस्तीन
3. पूरी आस्तीन

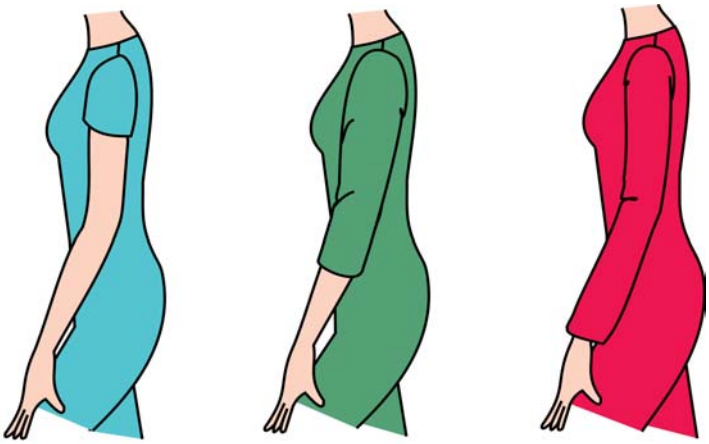

आधी आस्तीन पोनी आस्तीन पूरी आस्तीन

9.3 कॉलर

1. **पीटर पैन कॉलर:** यह आम तौर पर बच्चों के वस्त्रों पर प्रयोग किया जाता है। यह एक या दो टुकड़ो में बनाया जा सकता है। इसे दो टुकड़ो में बनाते है तो इस का सिरा आगे या पीछे पर जा सकता है। यह आगे सपाट और पीछे मुड़ा हुआ होता है।

पीटर पैन कॉलर

2. **केप कॉलर:** इस कालॅर की चौड़ाई सब भागों मे एक समान होती है। यह आगे के ओर कटा रहता है और पीछे का भाग सामान्तर गोल होता है।

केप कॉलर

3. **चाइनीज बैन्ड या नेहरू कॉलर:** यह ऊँचे गले के करीब लगाया जाता है। यह दोनों महिलाओं और पुरूषों के वस्त्रों में प्रयोग किया जाता है। कुर्त्ता और अचकन पर इसका प्रयोग अधिक होता है।

चाइनीज बैंड या नेहरू कॉलर

4. **रोल कॉलर :** यह कॉलर उरेब कपड़े पर काट कर बनाया जाता है।

5. **सादा ओपन कॉलर:** यह सरल आकार का कॉलर होता है।

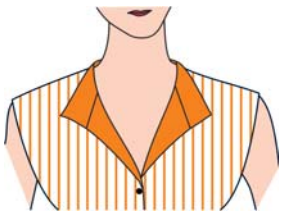

6. **बदलता (कन्वर्टिबल-Convertible) कॉलर :** यह बन्द तथा खुला पहना जा सकता है।

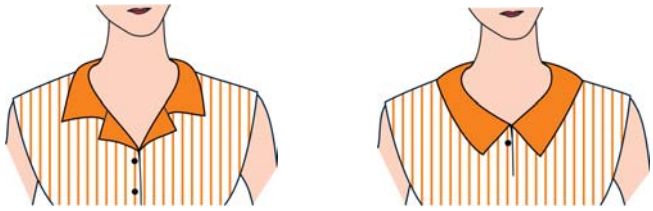

7. **स्टैंड या शर्ट कॉलर:** यह शर्ट कॉलर भी कहलाता है। इस के दो भाग होते है। एक स्टैंड यानी नीचे का भाग और दूसरा फॉल यानी ऊपर का भाग।

देखें आपने क्या सीखा 9.1

रिक्त स्थान भरें:

1. _____ आस्तीन में पीठ के साथ ही काटी जाती है।
2. _____ आस्तीन में पीठ के कंधे के पास के भाग को काटा जाता है।
3. _____ आस्तीन को मोग्यर आस्तीन भी कहते है।
4. _____ मुढे से जोडी जाती है।
5. _____ आस्तीन का आकार घंटी की तरह होता है।

9.4 कॉलर के विभिन्न आकार

शोभा बढ़ाने के लिए वस्त्रों में कॉलर लगाते है। इसलिए कॉलर ऐसा होना चाहिए जो चेहरे के आकार तथा पोशाक पर जचें। कॉलर सपाट, घुमाववाले या स्टैंड के साथ बनाए जाते हैं।

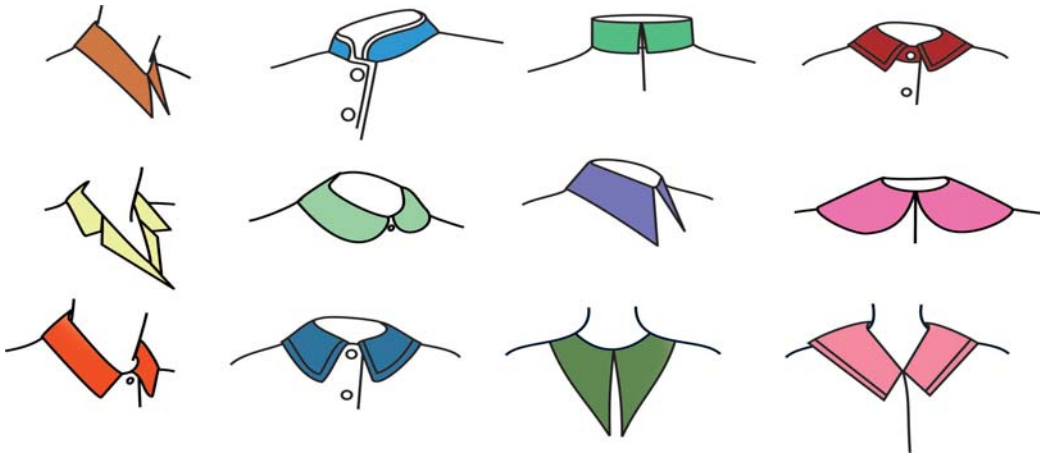

देखें आपने क्या सीखा 9.2

मिलान कीजिए

1	पीटर पैन कॉलर	क	सामान्तर गोल
2	चाइनीज बैन्ड कॉलर	ख	सरल आकार
3	केप कॉलर	ग	दो भाग
4	सादा कॉलर	घ	एक या दो टुकड़े
5	स्टैंड शर्ट कॉलर	ड.	ऊँचा गला

9.5 विभिन्न प्रकार की कमर की लंबाई

कमर की लम्बाई तीन प्रकार की होती है - ऊंची, सामान्य व नीची

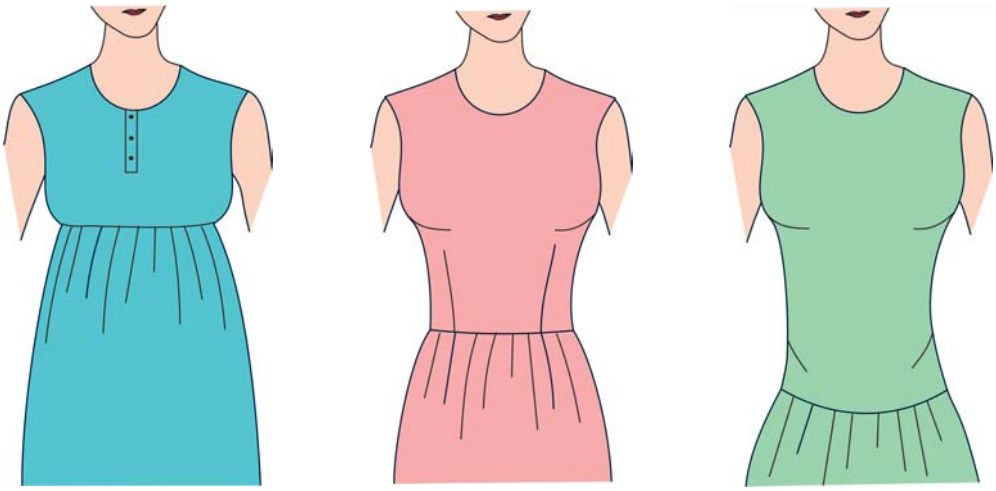

9.6 विभिन्न प्रकार के योक (बॉडिस)

1. **गोल योक:** यह आर्म-होल के बीच में शुरू होकर गोलाई में छाती तक बनाया जाता है।

गोल योक

2. **सीधा योकः** यह भी आर्म होल के बीच में से शुरू होकर सीधा बनाया जाता है।

सीधा योक

3. **चकोर योकः** यह कंधे के बीच में शुरू होता है और नीचे सीधा होता है।

चकोर योक

4. **यू-योकः** यह कंधे के बीच में शुरू होता है और नीचे गोल (यू) का आकार होता है।

यू–योक

5. **तिकोणा योक:** यह कंधे के अन्तिम छोर से शुरू होता है और नीचे व्ही के आकार में होता है।

तिकोणा योक

देखें आपने क्या सीखा 9.3

सही (✓) या गलत (×) का चिन्ह लगाइए।

1 यू-योक कंधे के अन्तिम छोर से शुरू होता है।

2 सीधा योक कंधे के बीच में से शुरू होता है।

3 गोल योक आर्म होल के बीच में से शुरू होता है।

4 चकोर योक कंधे के बीच में से शुरू होता हे।

5 तिकोने योक में नीचे व्ही का आकार होता है।

आइए, दोहराएँ

1. विभिन्न प्रकार के गले
   - गोल गला
   - यू गला
   - चौकोर गला
   - वी गला
   - स्वीट हार्ट
   - पॉट या गिलास गला
   - की होल गला

2. विभिन्न प्रकार की आस्तीन

- सादी आस्तीन
- गुब्बारे वाली आस्तीन
- गोलकर (फ्लेयर्ड) आस्तीन
- वैल (घंटी) आस्तीन
- केप आस्तीन
- रेगलॉन आस्तीन
- किमोनो या माग्यार आस्तीन

3. विभिन्न प्रकार के कॉलर

- पीटर पैन कॉलर
- केप कॉलर
- चाइनीज बैन्ड या नेहरू कॉलर
- रोल कॉलर
- सादा ओपन कॉलर
- बदलता कॉलर
- स्टैड या शर्ट कॉलर

4. विभिन्न प्रकार की कमर लम्बाई

- ऊंची
- सामान्य
- नीची

5. विभिन्न प्रकार के योक

- गोल योक
- सीधा योक
- चौकोर योक
- यू-योक
- तिकोणा योक

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. कौन से गले के आकार पुरूषो के वस्त्रों में प्रयोग हो सकते है।

.....

2. कौन से कॉलर महिलाओं के वस्त्रों में प्रयोग हो सकते है।

.....

3. कौन से कॉलर बच्चों के वस्त्र में प्रयोग हो सकते है।

.....

4. महिलाओं और बच्चों के वस्त्रों में प्रयोग होने वाली आस्तीन की सूची बनाए।

.....

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो।

(i) वस्त्र के गले के पास वाले आकार को _____ कहते हैं।

(ii) वी गला अंग्रेजी के _____ की तरह होता है।

(iii) स्वीट हार्ट गला वी तथा _____ गले को मिलाकर बनता है।

(iv) चौड़े कंधे वाली महिलाओं के लिए _____ आस्तीन का अधिक प्रयोग किया जाता है।

(v) किमोनो आस्तीन को _____ आस्तीन भी कहते हैं।

(vi) _____ कॉलर की चौड़ाई सब भागों में एकसमान होती है यह आगे की ओर से कटा रहता है व पीछे का भाग समान्तर गोल रहता है।

(vii) सादा ओपन कॉलर _____ आकार का कॉलर होता है।

(viii) _____ कॉलर को खुला व बन्द दोनों प्रकार से पहना जा सकता है।

(ix) शोभा बढ़ाने के लिए वस्त्रों में _____ लगाते हैं।

(x) कमर की लम्बाई _____ _____ _____ की होती है।

(xi) चौकोर योक कंधे के बीच में शुरू होता है और नीचे _____ होता है।

III. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगायें।

1. कमर की लम्बाई होती है।

   (a) 1 प्रकार की ☐ (c) तीन प्रकार की ☐

   (b) 2 प्रकार की ☐ (d) चार प्रकार की ☐

2. कंधे के बीच से शुरू होकर नीचे "U" आकार का होता है

   (a) U यू गला ☐ (c) केप कॉलर ☐

   (b) U यू योक ☐ (d) रैग्लॉन आस्तीन ☐

3. नीचे से 'V' वी आकार का होता है

   (a) चाइनीज कॉलर ☐ (c) स्वीट हार्ट गला ☐

   (b) गिलास गला ☐ (d) चौकोर योक ☐

4. सपाट घुमाववाले या स्टैण्ड के साथ बनाये जाते हैं

   (a) गले ☐ (c) योक ☐

   (b) कॉलर ☐ (d) आस्तीन ☐

5. ऊंचे गले के करीब लगाया जाता है

   (a) चाइनीज बैण्ड ☐ (c) कन्वर्टिबल कॉलर ☐

   (b) केप कॉलर ☐ (d) पीटर पैन कॉलर ☐

6. किमोनी आस्तीन का दूसरा नाम है

   (a) मोग्यार आस्तीन ☐ (c) बेल आस्तीन ☐

   (b) सेट इन आस्तीन ☐ (d) कैप आस्तीन ☐

7. इस गले के मध्य एक गोल गला काट दिया जाता है

   (a) गोल गला ☐ (c) की होल गला ☐

   (b) गिलास गला ☐ (d) स्वीट हार्ट गला ☐

8. इस आस्तीन में सामने व पीठ के कंधे के पास के भाग को आस्तीन के साथ काटा जाता है

(a) रैग्लॉन आस्तीन ☐ (c) किमोनो आस्तीन ☐

(b) सैट इन आस्तीन ☐ (d) बेल आस्तीन ☐

9. यह आगे से सपाट व पीछे से मुड़ा हुआ होता है

(a) पीटर पैन कॉलर ☐ (c) केप कॉलर ☐

(b) सादा ओपन कॉलर ☐ (d) रोल कॉलर ☐

10. इस आस्तीन में दोनों तरफ चुन्नटें होती हैं

(a) बेल आस्तीन ☐

(b) गोलाकार फ्लेयर्ड आस्तीन ☐

(c) गुब्बारा आस्तीन ☐

(d) केप आस्तीन ☐

IV. सही मिलान कीजिए।

(क)	(ख)
(i) यह गला महिलाओं व पुरुषों के वस्त्रों में प्रयोग किया जाता है।	a. गोल योक
(ii) इस गले की चौड़ाई लम्बाई से अधिक होती है।	b. चौकोर गला
(iii) यह गला कोण युक्त होता है	c. यू गला
(iv) इस कॉलर का प्रयोग महिलाओं व पुरुषों के वस्त्रों में किया जाता है।	d. पीटर पैन कॉलर
(v) यह कॉलर एक या दो टुकड़ों में बनाया जा सकता है।	e. गोल गला
(vi) यह आर्म होल के बीच से शुरू होकर गोलाई में छाती तक बनाया जाता है।	f. चाइनीज कॉलर

उत्तरमाला

देखें आपने क्या सीखा

9.1

1. रेगलान
2. रेगलान
3. किमोनो
4. सादी आस्तीन
5. बैल आस्तीन

9.2

1. – घ
2. – ड़
3. – क
4. – ख
5. – ग

9.3

1. ×
2. ×
3. ✓
4. ✓
5. ✓

I. अभ्यास उत्तरमाला

1. गोल गला तथा वी 'V' गला
2. (i) गोल गला
   (ii) U यू गला
   (iii) चौकोर गला
   (iv) वी गला
   (v) स्वीट हार्ट गला
   (vi) पॉट या गिलास गला
   (vii) की होल गला
3. पीटर पैन कॉलर तथा केप कॉलर
4. (i) आधी आस्तीन
   (ii) पौनी आस्तीन
   (iii) पूरी आस्तीन

II. मिलान कीजिए :

1. घ
2. ड.
3. क
4. ख
5. ग

III. 1. गोल गला यू गला वी गला।

2. कैप कॉलर, चाइनीज बैन्ड, रोल कॉलर, सादा कॉलर, शर्ट कॉलर।
3. पीटर पैन कैप कॉलर सादा ओपन कॉलर शर्ट कॉलर बदलता कॉलर।

IV. खाली स्थान भरो :

(i) तीरा

(ii) V

(iii) चौकोर

(iv) लम्बी

(v) मोग्यार

(vi) केप कॉलर

(vii) सरल

(viii) बदलता

(ix) कॉलर

(x) तीन

(xi) सीधा

V. 1. c

2. b

3. c

4. b

5. a

6. a

7. c

8. a

9. b

10. c

जाँच पत्र (पाठ 6 से पाठ 9)

I. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगायें।

1. यह कैंची 7 इंच से 10 इंच तक की होती है

   (a) बड़ी कैंची ☐ (c) ट्रिमिंग कैंची ☐

   (b) बटन होल कैंची ☐ (d) साधारण कैंची ☐

2. इस कैंची के द्वारा काज काटे जाते हैं।

   (a) कटावदार कैंची ☐ (c) छिद्रक ☐

   (b) काज वाली कैंची ☐ (d) साधारण कैंची ☐

3. यह सुई प्राय: हर प्रकार का कपड़ा सिलने के लिए प्रयोग की जाती है

   (a) 16 नं. की सुई ☐ (c) 18 नं. की सुई ☐

   (b) 21 नं. की सुई ☐ (d) 11 नं. की सुई ☐

4. कौन-सा टाँका सीधी तह पर बिन्दु के समान नजर आता है

   (a) काज का टाँका ☐ (c) रजाई का टाँका ☐

   (b) तुरपाई का टाँका ☐ (d) बखिया का टाँका ☐

5. क्रॉस स्टिच का टाँका और किस नाम से जाना जाता है?

   (a) उल्टी बखिया ☐ (c) दुसूती का टाँका ☐

   (b) सांकल का टाँका ☐ (d) मच्छी टाँका ☐

6. नीचे से 'V' की आकार का होता है

   (a) चाइनीज कॉलर ☐ (c) स्वीट हार्ट गला ☐

   (b) गिलास गला ☐ (d) चौकोर योक ☐

7. ऊंचे गले के करीब लगाया जाता है

   (a) चाइनीज बैण्ड ☐ (c) कन्वर्टिबल कॉलर ☐

   (b) केप कॉलर ☐ (d) पीटर पैन कॉलर ☐

8. यह डार्ट ब्लाउज, फ्रॉक में डाली जाती है

(a) एक नोक वाली डार्ट ☐ (c) दो नोक वाली डार्ट ☐

(b) पाइपिन ☐ (d) वेल्क्रो ☐

II. मिलान कीजिए

(क)	(ख)
(i) सिलाई में सबसे ज्यादा प्रयोग होने वाला धागा	a. लंगोट
(ii) कच्चा तुरपाई करने के लिए प्रयोग होने वाली सुईयाँ	b. दो नोक वाली डार्ट
(iii) बटन होल व आइलेट बनाने में प्रयुक्त टाँका	c. गोल गला
(iv) चार सुराख वाले होते हैं	d. काज का टाँका
(v) चौकोर कपड़े को दोहरा तिकोना मोड़कर बनाये जाने वाला वस्त्र	e. पीटर पैन कॉलर
(vi) पंजाबी कमीज/लेडीज शर्ट में प्रयोग की जाने वाली डार्ट	f. सूती धागा
(vii) महिलाओं व पुरुषों दोनों के वस्त्रों में प्रयोग किया जाने वाला गला	g. कोट के बटन
(viii) यह कॉलर एक या दो टुकड़ों में बनाया जा सकता है।	h. मोटी व छोटी हाथ की सुईयाँ

III. रिक्त स्थान भरिए

(i) _____ की सुई वॉयल कपड़े को सिलने के काम आती है।

(ii) थिम्बल _____ व _____ का बना होता है।

(iii) रजाई के टाँके द्वारा कोट के _____ अन्दर की तह जमाई जाती है।

(iv) बच्चों के कपड़ों में अधिकतर _____ बटन लगाया जाता है।

(v) पेटीकोट बनाने के लिए लम्बाई का _____ कपड़ा लिया जाता है।

(vi) गले की पट्टी के लिए कपड़ा हमेशा _____ काटना चाहिए।

(vii) चौड़े कंधे वाली महिलाओं के लिए _____ आस्तीन का अधिक प्रयोग किया जाता है।

(viii) _____ कॉलर को खुला व बन्द दोनों प्रकार से पहना जा सकता है।

IV. नीचे लिखे वाक्यों पर सही (✓) या गलत (✗) का निशान लगायें।

(i) बटन होल सिजर से 1 इंच या 8 प्वाइंट तक कपड़ा काटा जाता है। ( )

(ii) चपटी टोपी वाली सुई चारों तरफ से गोल होती है। ( )

(iii) बड़ी कैंची 10 इंच से 14 इंच तक लम्बी होती है। ( )

(iv) थैले के लिए हमेशा मोटे कपड़े का प्रयोग करना चाहिए। ( )

(v) बच्चों के लिए गहरे रंग का कपड़ा अच्छा रहता है। ( )

(vi) लहंगा बनाने के लिए हम पुरानी साड़ी का प्रयोग भी कर सकते हैं। ( )

(vii) गिलास गला ऊपर से चौड़ा व नीचे से संकरा होता है। ( )

(viii) सेट इन स्लीव अलग से काटकर मुड्ढे से जोड़ी जाती है। ( )

V. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर उचित शब्द लिखिए

(i) इसका प्रयोग सिलाई उधेड़ने के लिए किया जाता है।

(ii) इसे अंगुस्थान भी कहते हैं।

(iii) रूमाल के किनारों को सजाने के लिए इस टाँके का प्रयोग करते हैं।

(iv) यह डार्ट बीच से चौड़ी व दोनों तरफ नोकदार होती है।

(v) वस्त्र में भरावट व फुलनेस प्रदान करती है।

(vi) इसे टॉप सीम भी कहते हैं।

(vii) यह आमतौर पर बच्चों के वस्त्रों में प्रयोग किये जाने वाला कॉलर है।

(viii) इस आस्तीन का आकार घण्टी की तरह होता है।

जाँच उत्तरमाला (6-9)

I. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगायें।

1. d
2. b
3. a
4. c
5. c
6. c
7. a
8. a

II. मिलान कीजिए

(i) f
(ii) h
(iii) d
(iv) g
(v) a
(vi) b
(vii) c
(viii) e

III. रिक्त स्थान भरिए :

(i) 14 नं.

(ii) प्लास्टिक, लोहे

(iii) लैपेल

(iv) टिच

(v) दोहरा

(vi) उरेब

(vii) रेगलान

(viii) बदलता (कन्वर्टिबल)

IV. नीचे लिखे वाक्यों पर सही (✓) या गलत (✗) का निशान लगायें।

(i) ✗

(ii) ✗

(iii) ✓

(iv) ✓

(v) ✗

(vi) ✓

(vii) ✗

(viii) ✓

V. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर उचित शब्द लिखिए।

(i) उधेड़क (रिप्पर)

(ii) थिम्बल

(iii) हेरिंग बोन टाँका

(iv) दो नोक वाली

(v) गैदर

(vi) ऊपरी सिलाई

(vii) पीटर पैन कॉलर

(viii) बैल आस्तीन